जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

epaper.rashtradoot.com

अजमेर

Rashtradoot

फोनः- 2627612, 2427249 फैक्सः- 0145-2624665 वर्षः 29 संख्याः 147 प्रभात अजमेर, गुरुवार 26 दिसम्बर, 2024 आर.जे./ए.जे./73/2015-2017 पृष्ठ 6 मूल्य 2.50 रु.

'मौका मौका हर बार धोखा'

कांग्रेस ने आम आदमी पार्टी और भाजपा के खिलाफ बुकलैट जारी की

-डॉ. सतीश मिश्रा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 25 दिसम्बर। दिल्ली विधानसभा चुनावों से पूर्व कांग्रेस ने राष्ट्रीय राजधानी में आम आदमी पार्टी की सरकार और केन्द्र सरकार की कारगुजारियों पर एक पुस्तिका जारी की है।

पुस्तिका का शीर्षक है "मौका मौका हर बार धोखा"। पुस्तिका को दिल्ली कांग्रेस के अध्यक्ष देवेन्द्र यादव ने जारी की है, इस दौरान वरिष्ठ पार्टी नेता अजय माकन और काज़ी निजामुद्दीन भी मौजूद थे।

इस अवसर पर पत्रकारों को संबोधित करते हुए राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष अजय माकन ने कहा कि दिल्ली सरकार और केन्द्र सरकार एक दूसरे पर आरोप लगाती है। जनता दोनों के बीच पिस रही है। इन दोनों ने दिल्ली को नफरत का बाज़ार बना दिया है।

वरिष्ठ कांग्रेस नेता ने कहा, "कोविड महामारी के दौरान, लोगों को अपने रिश्तेदारों के शवों के लिए कई-कई दिनों तक इंतजार करना पड़ा। दिल्ली में ऑक्सीजन और आई.सी.यू. की कमी पड़ गई थी। उस समय, दिल्ली सरकार अस्पताल बनवाने के बजाय, "शीश महल" बनाने पर पैसा खर्च कर रही थी और उधर भाजपा के केन्द्र सरकार "सैन्ट्रल विस्टा प्रोजैक्ट" का निर्माण कर रही थी।"

- कांग्रेस के वरिष्ठ नेता एवं कोषाध्यक्ष अजय माकन ने कहा कि आप 11 साल से दिल्ली में सत्तारूढ़ है और भाजपा 2014 से केन्द्र में, पर दोनों के आरोप-प्रत्यारोप में दिल्ली की जनता फंस गई है। दोनों ने दिल्ली की जनता के साथ विश्वासघात किया है।
- बुकलैट दिल्ली प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष देवेन्द्र यादव ने जारी की। इस दौरान पार्टी कोषाध्यक्ष अजय माकन तथा वरिष्ठ नेता काज़ी निज़ामुद्दीन मौजूद थे।

पूर्व मुख्यमंत्री तथा आप के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल पर कटाक्ष करते हुये, माकन ने कहा, "वे अपनी जेब में 2 रू. वाला पैन रखते हैं, अपनी पार्टी का नाम "आम आदमी पार्टी" रखा है, लेकिन स्वयं किसी राजा की तरह "शीश महल" में रहते हैं।

इसी प्रकार के भाव व्यक्त करते हुये, दिल्ली कांग्रेस के अध्यक्ष देवेन्द्र यादव ने कहा, "आप दिल्ली में पिछले 11 साल से सत्ता में है और भाजपा 2014 से केन्द्र में सत्ता में है। दिल्ली की जनता ने इन दोनों सरकारों को बड़ी आशाओं-अपेक्षाओं के साथ चुना था, लेकिन इतने वर्षों में जनता के हिस्से में केवल झूठे वादे तथा विश्वासघात ही आये हैं।"

दिल्ली के पूर्ववर्ती कांग्रेस सरकार का जिक्र करते हुये, यादव ने जोर देते हुये कहा कि 15 वर्षों के कांग्रेस शासन के दौरान, चाहे विकास का मोर्चा रहा हो या सामाजिक क्षेत्र का, पार्टी ने शासन-प्रशासन के नये आयाम हासिल किये। उन्होंने आगे कहा, "हमारी सरकार ने, गरीबों, महिलाओं तथा युवाओं सहित, प्रत्येक वर्ग के लिए काम किया था। उन वर्षों में दिल्ली को विश्व-स्तरीय शहर बनाने के लिये एक मजबूत नींव रखी गई थी।"

कांग्रेस के दिल्ली प्रभारी निजामुद्दीन ने कहा, "आप और भाजपा एक-दूसरे पर दोषारोपण का खेल खेलती रहेंगी। जनता के लिये काम केवल कांग्रेस ही करेगी।

दिल्ली में अपने बलबूते पर सत्ता में लौटने के विश्वास के साथ, पार्टी आगामी विधानसभा अकेले ही लड़ेगी। अब तक पार्टी दो सूचियाँ जारी कर चुकी हैं। पार्टी ने मंगलवार रात को आगामी चुनावों के लिये 26 उम्मीदवारों की दूसरी सूची जारी की। इस सूची में शामिल प्रतिष्ठित उम्मीदवारों में राजेश लिलोठिया (सीमापुरी) तथा मुकेश शर्मा (उत्तम नगर) शामिल हैं। दिल्ली की 70 सीटों के विधानसभा चुनाव अगले वर्ष के शुरु में होने हैं।

ऑरिएंटल इंश्योरैंस कंपनी पर 70 हजार रूपए का हर्जाना

जयपुर, 25 दिसंबर। जिला उपभोक्ता आयोग द्वितीय ने इलाज में लापरवाही बरतने पर चिकित्सक पर लगाए दस लाख रुपए का, डॉक्टर्स पॉलिसी के तहत, भुगतान नहीं करने पर ओरियंटल इंश्योरेंस कंपनी पर 70 हजार रुपए का हर्जाना लगाया है। इसके साथ ही क्लेम राशि के दस लाख रुपए भी नौ फीसदी ब्याज सहित अदा करने को कहा है। आयोग ने यह आदेश डॉ. अंकित माथुर के परिवाद पर दिए। आयोग अध्यक्ष ग्यारसी लाल मीना और सदस्य हेमलता अग्रवाल ने अपने आदेश में कहा कि अदालतों में चल रही कार्रवाई के चलते परिवादी समय पर क्लेम पेश नहीं कर सका। वहीं, बीमा कंपनी का क्लेम अदायगी नहीं करना अनुचित व्यापार प्रथा को दर्शाता है।

- बीमा कंपनी ने चिकित्सक की लापरवाही पर उक्त डॉक्टर को डॉक्टर्स पॉलिसी क्लेम देने से इन्कार कर दिया था।

परिवाद में अधिवक्ता अजय राज टाटिया ने बताया कि परिवादी कार्डियो वेस्क्यूलर सर्जन के तौर पर नारायणा

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

राजस्थान में भाजपा सरकार बनने के बाद नड्डा का पहला दौरा

संगठन में बदलाव व मंत्रिमंडल विस्तार की चर्चाओं के बीच दौरे का महत्व बढ़ा

जयपुर, 25 दिसम्बर। प्रदेश में संगठनात्मक फेरबदल और मंत्रिमण्डल विस्तार की चर्चाओं के बीच, भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा जयपुर का दो दिवसीय दौरा करेंगे। नड्डा गुरुवार रात 11 बजे जयपुर पहुंचेंगे। शुक्रवार को 11:30 से 2:30 बजे तक स्वामित्व योजना कार्यक्रम के तहत एग्रीकल्चर मैनेजमेंट दुर्गापुरा में रहेंगे। दोपहर 3 बजे भाजपा कार्यालय में वे प्रमुख भाजपा पदाधिकारियों व नेताओं के साथ संवाद करेंगे, उसके बाद शाम 5 बजे दिल्ली के लिए रवाना हो जाएंगे।

- नड्डा गुरुवार की रात जयपुर पहुँचेंगे। शुक्रवार को वे प्रदेश कार्यालय में वे पार्टी पदाधिकारियों व नेताओं से संवाद करेंगे।

प्रदेश में भाजपा की सरकार बनने के बाद जेपी नड्डा पहली बार प्रदेश भाजपा कार्यालय आ रहे हैं। इससे पहले, वे विधानसभा चुनाव प्रचार के दौरान जयपुर आए थे।

भाजपा प्रदेशाध्यक्ष मदन राठौड़, अध्यक्ष बनने के बाद से पुरानी टीम के साथ ही काम कर रहे हैं। अब उनकी नई टीम का गठन होना है। राष्ट्रीय स्तर पर भाजपा का संगठन पर्व भी चल रहा है, जिसमें बूथ अध्यक्ष से लेकर राष्ट्रीय अध्यक्ष के पद के लिए चुनाव होना है।

प्रदेश में बूथ और मंडल के चुनावों की समय सीमा निकल गई है। लेकिन कई जगह पर अभी भी बूथ अध्यक्ष और मंडल अध्यक्ष के चुनाव नहीं हो सके हैं। माना जा रहा है कि नड्डा इन तमाम मुद्दों को लेकर प्रमुख पदाधिकारियों के साथ चर्चा कर सकते हैं। नड्डा की बैठक से पहले, प्रदेश प्रभारी राधामोहन दास अग्रवाल प्रदेश भाजपा कार्यालय में पदाधिकारियों की बैठक लेंगे। वे नड्डा की बैठक में भी मौजूद रहेंगे।

नड्डा की जयपुर यात्रा के दौरान, मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा से मुलाकात के दौरान मंत्रिमण्डल विस्तार और राज्य सरकार की योजनाओं को लेकर भी चर्चा होने की संभावना हैं। हाल ही में, मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने दिल्ली में अमित शाह से मुलाकात की थी। उसके बाद से मंत्रिमंडल विस्तार व मंत्रिमंडल फेरबदल की प्रदेश में चर्चा शुरू हो गई। अब इन सभी चर्चाओं के बीच भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा का जयपुर दौरा और भाजपा मुख्यालय में उनका कार्यक्रम विशेष चर्चा का विषय बना हुआ है।

केन्द्र सरकार की स्वामित्व योजना के तहत, शुक्रवार को प्रदेश के 1.50 लाख से ज्यादा ग्रामीण परिवारों को जमीन के पट्टे दिए जाएंगे। प्रदेश के पुराने 33 जिला मुख्यालयों पर पट्टे बांटे जाएंगे।

इसके लिए जिला स्तरीय कार्यक्रम में लाभार्थियों को बुलाया जाएगा। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी वर्चुअली इस कार्यक्रम को संबोधित करेंगे।

क्या होगा दिल्ली की महिला सम्मान व संजीवनी योजनाओं का

दिल्ली सरकार के दो विभागों ने इन योजनाओं को अवैध बताते हुए नोटिस छपवाये

नई दिल्ली, 25 दिसंबर। दिल्ली में आम आदमी पार्टी की सरकार की तरफ से घोषित मुख्यमंत्री महिला सम्मान और संजीवनी योजना पर विवाद खड़ा हो गया है। संबंधित विभाग ने नोटिस जारी कर जनता को अगाह किया है कि ये योजनाएं अभी दिल्ली में आधिकारिक तौर पर लागू नहीं की गई है। एक सार्वजनिक नोटिस में दिल्ली सरकार के महिला एवं बाल विकास विभाग ने कहा है कि उन्हें मीडिया रिपोर्टों और सोशल मीडिया पोस्ट के माध्यम से जानकारी मिली है कि एक राजनीतिक दल मुख्यमंत्री महिला सम्मान के तहत दिल्ली की महिलाओं को 2100 रुपये प्रति माह देने का दावा कर रहा है। महिला एवं बाल विकास विभाग ने आज राष्ट्रीय समाचार पत्रों में जारी सार्वजनिक नोटिस में कहा, "यह स्पष्ट किया जाता है कि दिल्ली सरकार द्वारा ऐसी कोई योजना अधिसूचित नहीं की गई है।

विभाग ने कहा, इस बात पर जोर

- दिल्ली के महिला बाल विकास विभाग तथा स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग ने राष्ट्रीय अखबारों में सार्वजनिक नोटिस छपवा कर जनता को धोखाधड़ी से बचने के लिये आगाह किया।

दिया जाता है कि चूंकि ऐसी कोई योजना अस्तित्व में नहीं है, इसलिए इस गैर-मौजूद योजना के तहत पंजीकरण के लिए फॉर्म/आवेदन को स्वीकार करने का सवाल ही नहीं उठता। कोई भी निजी व्यक्ति/राजनीतिक दल जो इस योजना के नामपर फॉर्म/आवेदन एकत्र कर रहा है या जानकारी एकत्र कर रहा है वह जनता से धोखाधड़ी कर रहा है।

स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग की तरफ से भी कहा गया है कि "विभिन्न समाचार चैनलों/प्रिंट मीडिया के माध्यम से सामने आया है कि दिल्ली के निवासियों के बीच "संजीवनी योजना" नामक एक कथित योजना का प्रचार किया जा रहा है, जिसमें 60 वर्ष से अधिक आयु के लोगों को दिल्ली के सभी अस्पतालों (सरकारी या निजी) में आय मानदंड की परवाह किए बिना फ्री उपचार प्रदान करने का दावा किया गया है।

"इसके अलावा यह भी विभाग के संज्ञान में आया कि इस योजना के तहत भौतिक फॉर्म भरकर नामांकन कराने के लिए कुछ राजनीतिक दलों के पदाधिकारियों/स्वयंसेवकों द्वारा पंजीकरण अभियान भी शुरू किया गया है। इसके साथ ही कथित पंजीकरण फॉर्म में वरिष्ठ नागरिकों का विवरण मांगा जा रहा है, जिसमें फोन नंबर, पता, आधार और बैंक खाते का विवरण

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

सूचना निकलवाने वाले अधिकारियों पर कार्यवाही होगी- आतिशी

नई दिल्ली, 25 दिसंबर। दिल्ली में महिला सम्मान योजना और संजीवनी योजना को लेकर बीजेपी और आम आदमी पार्टी के बीच तलवारें खिंच गई हैं। दिल्ली की मुख्यमंत्री आतिशी ने बुधवार को प्रेस कांफ्रेंस कर कहा कि भाजपा ने अधिकारियों पर दवाब बनाकर यह नोटिस जारी किया है कि ये योजनाएं अस्तित्व में नहीं हैं। आतिशी ने कहा, दोषी अधिकारियों के ऊपर करवाई की जाएगी।

- उन्होंने कहा, योजनाओं को कैबिनेट से मंजूरी मिल चुकी है।

वहीं,आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल ने कहा कि सूत्रों के अनुसार, हाल ही में सीबीआई, ईडी और इनकम टैक्स विभाग के बीच एक बैठक हुई थी और उनसे सीएम के खिलाफ कोई झूठा मामला बनाकर सीएम आतिशी को गिरफ्तार करने के लिए कहा गया है।

केजरीवाल ने कहा कि हमने महिला सम्मान योजना और वरिष्ठ

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

हाइवे के किनारे मवेशियों के लिए शैल्टर बनेंगे, जोधपुर से होगी शुरुआत

भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण ने मवेशियों के कारण होने वाले सड़क हादसों को नियंत्रित करने के लिए यह योजना बनाई है

-जाल खंबात-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 25 दिसम्बर। नैशनल हाइवे अथॉरिटी ऑफ इंडिया (राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण) ने सड़क सुरक्षा को मजबूत बनाने व मवेशियों के कारण होने वाले सड़क हादसों की चुनौतियों से निपटने के लिए सड़क किनारे मवेशियों के लिए शैल्टर खोलने पर विचार कर रही है।

एन.एच.ए.आई. की इस पहल का उद्देश्य सड़क-यात्रियों के लिये अधिक सुरक्षित यात्रा अनुभव उपलब्ध कराना तथा कई राज्यों में राष्ट्रीय राजमार्गों पर आ जाने वाले आवारा पशुओं की समस्या से निबटना हैं।

हालाँकि, इस दिशा में पहले भी कई कदम उठाये गये हैं, लेकिन उन्हें कई सामाजिक तथा संवेदनशील मुद्दों के चलते अपेक्षित सफलता नहीं मिली।

ये शैल्टर क्षेत्र 0.21 से 2.29 हेक्टेअर में बनेंगे। इस पायलट प्रोजैक्ट के अन्तर्गत, ये शरणगाह आवारा पशुओं के लिये सुरक्षित स्थानों पर रणनैतिक रूप से स्थापित किये जायेंगे तथा इस प्रकार राष्ट्रीय राजमार्गों पर उनके आने-जाने में कमी आ जायेगी।

- यह योजना जोधपुर रिंग रोड के डांगियावास से जयवाल सैक्शन के बीच एन.एच. 112 पर शुरु होगी।
- यू.पी. व हरियाणा बॉर्डर से एन.एच. 334 बी पर भी शैल्टर बनाए जाएंगे।
- सूत्रों ने बताया कि शैल्टर में मवेशियों के लिए चारा व पानी के साथ इलाज की भी व्यवस्था होगी।

इस योजना की क्रियान्विति राष्ट्रीय राजमार्ग नम्बर 112 पर जोधपुर रिंग रोड के जोधपुर सैक्शन के डाँगियावास-जयवाल क्षेत्र के साथ ही, अन्य कई राष्ट्रीय राजमार्गों के हिस्सों पर की जायेगी। इनमें एन.एच.-334 बी का उत्तर प्रदेश-हरियाणा बॉर्डर सैक्शन भी शामिल है, जहाँ ये शरणगाह खरखोड़ बाईपास पर तथा एक अन्य शरणगाह एन.एच.-148 बी के भिवानी-हाँसी सैक्शन के हाँसी बाईपास पर बनाया जायेगा।

विभिन्न राज्यों की बहुत सी अदालतें राष्ट्रीय राजमार्गों पर आवारा पशुओं की आवाजाही के कारण होने वाले बदलावों के प्रस्तावों के लिये बहुत उत्सुक थीं। एन.एच.ए.आई. ने वर्तमान कन्सेशनायर, गावर कन्स्ट्रक्शन लिमिटेड के साथ एग्रीमैंट पर हस्ताक्षर कर दिये हैं। इन अनुबंध के तहत, कन्सेशनायर एन.एच.ए.आई. द्वारा उपलब्ध कराई गई जमीन पर केटल-शैल्टरों का निर्माण करेगी। यह कंपनी इन शैल्टरों का रख-रखाव भी करेगी, पशुओं को पर्याप्त चारा-पानी तथा प्राथमिक चिकित्सा उपलब्ध करायेगी तथा पूरी कन्सेशन अवधि केयरटेकर्स की व्यवस्था करेगी, जो पशुओं की खुशहाली सुनिश्चित करेंगे।

ये कन्सेशनायर घायल हुये आवारा पशुओं के इलाज के लिये लाने ले जाने के लिये मवेशी-एम्बुलैंस भी रखेगी। इन मवेशियों को समय पर चिकित्सा उपलब्ध कराने के लिये दोनों तरफ 50 किमी पर प्राथमिक चिकित्सा केन्द्र तथा पशु अस्पताल स्थापित करेंगी। इन शरणगाहों के निर्माण तथा रख-रखाव के अलावा, ये कन्सेशनायर आवारा पशुओं को इन सुविधाओं तक सुरक्षित रूप से ले जाने तथा लाने की सुरक्षित व्यवस्था भी सुनिश्चित करेंगी तथा "कैटल ट्रैसपास एक्ट, 1871 के प्रावधनों को सख्ती से लागू करेंगी।

एन.एस.ए.आई. चैयरमैन, संतोष कुमार यादव ने कहा कि यह एन.एच.ए.आई. की निष्ठा की क्रियान्विति की दिशा

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

राजस्थान, उड़ीसा व छत्तीसगढ़ को बाघ मिलेंगे

भोपाल, 25 दिसंबर। मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव के निर्देश पर, राज्य शासन द्वारा राजस्थान, उड़ीसा और छत्तीसगढ़ राज्य को बाघ हस्तांतरित करने के आदेश जारी कर दिये गये हैं। आधिकारिक जानकारी के अनुसार जारी आदेश में, बांधवगढ़ टाइगर रिजर्व, पेंच टाइगर रिजर्व और कान्हा टाइगर रिजर्व से राजस्थान को 4 मादा बाघ, उड़ीसा को एक नर एवं 2 मादा बाघ और छत्तीसगढ़ राज्य को 2 नर एवं 6 मादा बाघ सौंपे जायेंगे।

- मध्य प्रदेश राजस्थान को 4 मादा बाघ देगा।

जारी आदेश में कहा गया है कि बाघ देने की सैद्धांतिक प्रक्रिया में बाघ एवं बाघिन को ट्रांसलोकेट करने की कार्यवाही अधिकृत पशु चिकित्सक की देखरेख में की जाये। बाघों के जीवन को किसी प्रकार का खतरा न हो, इसका ध्यान रखा जाये। ट्रांसलोकेट किये जाने का सम्पूर्ण व्यय संबंधित राज्य द्वारा वहन किया जायेगा। हस्तांतरण की विधिवत अनुमति केन्द्र सरकार से प्राप्त की जाये।

2025 में भारत की पर्यटन ग्रोथ रेट चीन को भी पीछे छोड़ देगी

भारत से विदेश जाने वाले पर्यटकों की संख्या में 17 प्रतिशत वृद्धि होने की संभावना है

-सुकुमार साह-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 25 दिसम्बर। सन् 2025 में भारत से अन्य देशों को जाने वाले पर्यटकों की संख्या में 17 प्रतिशत वृद्धि के साथ महत्वपूर्ण बढ़ोतरी देखी जाएगी तथा 29 मिलियन पर्यटकों की यह अनुमानित संख्या, जहाँ, चीन से बाहर जाने वाले कुल पर्यटकों की संख्या का मात्र 20 प्रतिशत है, वहीं, भारत की पर्यटन ग्रोथ देश के उत्तरी पड़ौसी देश को पीछे छोड़ रही है। वीसा में छूट के कारण भारतीय यात्रियों में से अधिकतर एशिया के अंदर यात्रा करेंगे, लेकिन प्रमुख गतंव्य स्थानों में मिडिल ईस्ट और अमेरिका भी शामिल होंगे। माना जा रहा है कि भारतीय पर्यटक औसतन 1400 डॉलर प्रति व्यक्ति खर्च करेंगे, जो कि 1,033 डॉलर वैश्विक औसत से काफी अधिक है।

- वर्ल्ड ट्रैवल एण्ड टूरिज़्म काउन्सिल का अनुमान है कि भारत का पर्यटन उद्योग वर्ष 2034 तक दोगुना हो कर 523 अरब डॉलर तक पहुँच जाएगा, इससे विभिन्न स्किल्स के 1.8 करोड़ रोजगार सृजित होंगे।
- काउन्सिल की अध्यक्ष जूलिया सिम्पसन ने कहा, भारत पर्यटन क्षेत्र का ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन में भारी योगदान है, लेकिन पर्यटन के विस्तार की तुलना में ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन में कमी आई है, जो भारतीय पर्यटन उद्योग की बढ़ती क्षमता को दर्शाता है।
- ट्रैवल एण्ड टूरिज़्म से जुड़ी कई अन्य संस्थाओं और फर्मों ने पर्यटन के क्षेत्र में भारत के लिए उत्साहवर्धक भविष्यवाणियाँ की हैं और कहा है कि पर्यटन का स्तर जल्दी ही कोविड से पहले वाले स्तर तक पहुँच जाएगा।

वर्ल्ड ट्रैवल एण्ड टूरिज़्म काउन्सिल (डब्ल्यु.टी.टी.सी.) के पूर्वानुमान के अनुसार, भारत का टूरिज़्म सैक्टर 2034 तक दोगुना होकर, 523 बिलियन डॉलर तक पहुँच जाएगा। इस ग्रोथ के कारण 18 मिलियन नए रोजगार सृजित होने का अनुमान है, जिससे इस क्षेत्र का कुल रोजगार 63 मिलियन तक पहुँच जाएगा। डब्ल्यु.टी.टी.सी. अध्यक्ष जूलिया सिम्पसन ने कहा कि भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत तथा हॉस्पिटैलिटी प्रमुख आकर्षण हैं। देश की जी.डी.पी. में पर्यटन का योगदान 7 प्रतिशत है और यह विभिन्न प्रकार की स्किल्स को रोजगार भी प्रदान करता है।

सिम्पसन ने पर्यटन से पर्यावरण पर पड़ने वाले प्रभाव पर भी बात की। भारत में उत्सर्जित कुल ग्रीन हाउस गैसों, खासकर कार्बन डाईऑक्साइड का 5 प्रतिशत पर्यटन की ही देन है। हालांकि पर्यटन का विस्तार जारी है, पर कार्बन उत्सर्जन की गति धीमी हो गई है, यह बात पर्यटन में बढ़ती दक्षता को दर्शाती है।

सिम्पसन ने भारत सरकार के साथ मजबूत सहयोग पर जोर दिया ताकि जो परम्परा चली आ रही हैं, उन्हें प्रोत्साहन दिया, जा सके, खासकर उड्डयन क्षेत्र में। सिम्पसन ने एविएशन फ्यूल के तहत उत्पादन के लिए प्रोत्साहन देने की बात कही। उन्होंने तटवर्ती क्षेत्रों एवं नैचुरल लैंड स्केप के संरक्षण की आवश्यकता पर जोर दिया, जो कि अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटकों को आकर्षित करने में अहम भूमिका निभाते हैं। उन्होंने प्रधानमंत्री मोदी की सरकार के अक्षय ऊर्जा के प्रति संकल्प की तारीफ की

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

करंट से मौत, जयपुर डिस्कॉम पर 17.66 लाख का हर्जाना

जयपुर, 25 दिसंबर। अतिरिक्त जिला न्यायालय क्रम-4 महानगर प्रथम ने 11 केवी के तार से करंट लगने के चलते युवक की मौत के मामले में जयपुर डिस्कॉम पर 17.66 लाख रुपए का हर्जाना लगाया है। पीठासीन अधिकारी मुकेश परनामी ने डिस्कॉम को आदेश दिए हैं कि वह हर्जाना राशि पर छह फीसदी ब्याज भी अदा करे। अदालत ने चेताया है कि यदि 45 दिन में हर्जाना राशि का भुगतान नहीं किया गया तो डिस्कॉम को इस राशि पर नौ फीसदी ब्याज देना होगा। अदालत ने यह आदेश ढोढसर निवासी रेखा देवी व अन्य के परिवाद पर दिए।

- अतिरिक्त जिला न्यायालय ने करंट से मरने वाले युवक के परिजनों के परिवाद पर यह आदेश दिया।

परिवाद में अधिवक्ता मुकेश व्यास ने अदालत को बताया कि 9 सितंबर, 2019 को रामकिशोर घर की

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

विचार बिन्दु

भातृभाव का अस्तित्व केवल आत्मा में और आत्मा के द्वारा ही होता है, यह और किसी के सहारे टिक ही नहीं सकता। –श्री अरविंद

कर्ज के मकड़जाल में ग्रामीण, जागरुक होना जरुरी

या वज्जीवेत सुखं जीवेद, ऋणं कृत्वा घृतं पीवेत। भस्मीभूतस्य देहस्य पुनरागमन कुतः॥ लगता है चार्वाक का यह मूल मंत्र ग्रामीण क्षेत्र में भी असर दिखाने लगा है। सांख्यिकी मंत्रालय की हालिया रिपोर्ट तो इसी और इशारा करने लगी है। सांख्यिकी मंत्रालय की व्यापक वार्षिक माड्यूलर रिपोर्ट के अनुसार शहरों की तुलना में अब गांवों में कर्जदार अधिक होते जा रहे हैं। रिपोर्ट के अनुसार गांवों में प्रति एक लाख पर 18714 लोगों ने किसी ना किसी तरह का कर्ज लिया है वहीं शहरी क्षेत्र का यह आंकड़ा ग्रामीण क्षेत्र की तुलना में कुछ कम 17442 है। सबसे अच्छी बात यह है कि अब संस्थागत ऋणों की उपलब्धता सहज हो गई है पर गैर संस्थागत ऋण प्रदाताओं ने भी तेजी से पांव पसारे हैं। इन गैर संस्थागत ऋण प्रदाताओं में कहीं ना कहीं पुराने साहूकारों की झलक दिखाई देती है और यही चिंता का विषय है। दूसरी चिंता का कारण संस्थागत ऋण में भी इस तरह के ऋणों की ब्याजदर कहीं अधिक है और उससे भी ज्यादा गंभीर यह है कि संस्थागत हो या गैर संस्थागत ऋण प्रदाता ऋणी की एक किश्त भी समय पर जमा नहीं होती है तो फिर दण्डनीय ब्याज, वसूली के नाम पर संवर्क और पत्राचार आदि का खर्चा और इसी तरह के अन्य छुपे चार्जेज ऋणी की कमर तोड़ने में काफी है।

इसमें कोई दो राय नहीं होनी चाहिए कि शहरी नागरिकों की तरह ही ग्रामीण नागरिकों के जीवन स्तर और रहन-सहन में सुधार होना चाहिए। शहरों से किसी भी क्षेत्र में ग्रामीण पीछे नहीं रहने चाहिए। पर सवाल यह है कि कुछ इस तरह के ऋण होते हैं जिन्हें होड़ा होड़ी में ले लिया जाता है और उसका सीधा असर कर्ज के मकड़जाल में फंसने की तरह हो जाता है। सांख्यिकी मंत्रालय के आंकड़े तो यह भी बताते है कि ग्रामीण क्षेत्र में ऋण लेने में महिलाएं भी कहीं पीछे नहीं है और महिला ऋणियों की संख्या भी बढ़ती जा रही है। दरअसल चाहे ग्रामीण क्षेत्र हो या शहरी क्षेत्र अधिकतर व्यक्तिगत ऋण घरेलू जरुरतों को पूरा करने, बच्चों की पढ़ाई लिखाई, खान-पान और शानो शोकत से रहने के लिए पहनावे आदि के लिए ऋण लिया जाता है। गांव और शहरों में एक अंतर यह है कि शहरों में स्वास्थ्य सेवाएं सरकारी स्तर पर भी आसानी से उपलब्ध है वहीं गांवों में स्वास्थ्य और शिक्षा पर अधिक खर्च करना पड़ता है। यही कारण है कि शिक्षा और स्वास्थ्य जरुरतों को पूरा करने के लिए भी ग्रामीणों को ऋण लेना पड़ता है। यह सब कृषि कार्यों के लिए लिए जाने वाले ऋण से अलग हटकर है। वैसे भी अधिकांश स्थानों पर संस्थागत कृषि ऋण लगभग जीरो ब्याजदर पर या नाममात्र के ब्याज पर उपलब्ध होता है पर नकारात्मक पक्ष यह है कि बिना ब्याज के ऋण को समय पर नहीं चुका कर कर्ज माफी के राजनीतिक जुमले के चलते जीरो ब्याज सुविधा से भी बंचित हो जाते हैं। खैर यह विषय से भटकाव होगा।

दरअसल जब ऋण प्रदाता संस्था से ऋण लिया जाता है तो उस समय पर जो डाक्यूमेंट होता है वह इतना बड़ा और जटिल होता है कि उसे पूरा देखा ही नहीं जाता है और ऋण दिलाने वाला व्यक्ति टिक लगाये स्थानों पर हस्ताक्षर करने पर जोर देता है। पढ़ा-लिखा और समझदार व्यक्त भी पूरे डाक्यूमेंट से गो थ्रू नहीं होता और परिणाम यह होता है कि बाद में दस्तावेज के प्रावधानों के कारण दो-चार होना पड़ता है। हस्ताक्षर करने से हाथ बंध जाते है।

शहरों की तरह गांव भी आधुनिकतम सुख सुविधाओं से संपन्न हो इसमें कोई दो राय नहीं हो सकती। विकास की गंगा भी सभी तरफ समान रुप से बहनी चाहिए। इससे भी इंकार नहीं किया जा सकता। बल्कि यह सबका सपना है। ग्रामीण क्षेत्र में भी बढ़ते कर्ज के पीछे जो चिंतनीय बात है वह यह है कि कहीं ग्रामीण कर्ज के मकड़जाल में फंसकर कुछ पाने की जगह खो अधिक दे। इसका बड़ा कारण यह है कि संस्थागत ऋण यानी कि बैंकों द्वारा दिए जाने वाले ऋण हो या फिर गैर संस्थागत ऋण परेशानी इनकी वसूली व्यवस्था को लेकर होती है। जितने ऋण देते समय सहृदय होते हैं ऋण की किश्त की वसूली के समय उतने ही बेदर्द होने में कोई कमी नहीं रहती। शहरों में आए दिन रिकवरी एजेंटों के व्यवहार से दो-चार होते देखने में आ जाते है। गांवों में तो वसूली करने वालों के टार्चर के हालात बदतर ही होंगे। ऐसे में समय रहते इस विषय में सोचना ही होगा।

यह अच्छी बात है कि ग्रामीण अपने जीवन स्तर के लिए चिंतित है और इसके लिए ऋण सुविधाओं का लाभ उठा रहे हैं। इसे ग्रामीण क्षेत्र की बहबुदी का शुभ संकेत माना जा सकता है। पर सरकार और इस क्षेत्र में कार्य कर रहे गैरसरकारी संगठनों के सामने बडी जिम्मेदारी अवेयरनेस प्रोग्राम चलाने की आ जाती है। दरअसल जब ऋण प्रदाता संस्था से ऋण लिया जाता है तो उस समय पर जो डाक्यूमेंट होता है वह इतना बड़ा और जटिल होता है कि उसे पूरा देखा ही नहीं जाता है और ऋण दिलाने वाला व्यक्ति टिक लगाये स्थानों पर हस्ताक्षर करने पर जोर देता है। पढ़ा-लिखा और समझदार व्यक्त भी पूरे डाक्यूमेंट से गो थ्रू नहीं होता और परिणाम यह होता है कि बाद में दस्तावेज के प्रावधानों के कारण दो-चार होना पड़ता है। हस्ताक्षर करने से हाथ बंध जाते है। सवाल यह कि अभियान चलाकर यह बताया जाना जरुरी है कि ऋण की एक भी किश्त चुक गए तो कितना नुकसान भुगतना पड़ जाएगा और यदि दुर्भाग्यवश दो-तीन किश्त नहीं चुका पाये तो हालात बदतर हो जाएंगे और जिस तरह से किसी जमाने में साहूकार के चंगुल में फंस जाते थे वो ही हालात होने में देर नहीं लगती। दूसरा यह कि ऋण लेते समय प्राथमिकता भी साफ होनी चाहिए। केवल देखा देखी ऋण लेने की होड़ भी नुकसानदायक हो जाती है। गांवों में खेती की जमीन बेच कर अनावश्यक व दिखावे में राशि खर्च करने के दुष्परिणाम सामने हैं। ऐसे में बैंकों और एनजीओज को सामाजिक दायित्व समझते हुए अवेयरनेस प्रोग्राम चला कर लोगों को जागृत करना ही होगा नहीं तो कर्ज का यह मर्ज गंभीर रुप लेने में देरी नहीं लगायेगा।

–अतिथि सम्पादक,
डॉ.राजेन्द्र प्रसाद शर्मा
(वरिष्ठ लेखक)

केंद्र सरकार फसलों के समर्थन मूल्य की घोषणा किन आधारों पर व कैसे करती है? कैसे सुधारों की आवश्यकता है?

महावीर सिंह

किसी अखबार में एक कुछ सकून देने वाला समाचार पढा था कि संसद की एक समिति नें MSP की कानूनी गारंटी देने की सिफारिश की है और रिपोर्ट संसद को सौंप दी है। आंशिक सकून देने वाला समाचार है क्योंकि अधिकांशत: सरकारी स्तर पर MSP की कानूनी गारंटी के विरोध में तरह तरह के तर्क, कुतर्क प्रस्तुत किये जाते रहते है। कोई कहता है खुला बाजार विकृत हो जाएगा, कोई कहता है कि सरकार का सारा बजट फसलों की ख़रीदयी में ही चला जाएगा। सामान्य कामकाज व विकास के लिए तो बजट ही नहीं बचेगा।

एक आम आदमी पूछता है, क्या व्यापारी खाद्यान व्यापार पूर्णत: बंद कर देंगे? क्या लोग अन्न सेवन बंद कर देंगे? क्या सारा अन्न सरकार को खरीदना पड़ेगा? क्या सरकार खरीदे हुए अन्न को लोगों में वितरित नहीं करेगी? क्या सरकार अन्न भंडारों से निर्यात नहीं करेगी? क्या यह जिम्मेदारी किसानों की है कि उपभोक्ताओं को उत्पादन लागत से नीचे अन्न बेच कर, उन्हें सब्सिडाइज करे? यह कैसे कुतर्क है कि मानों श्रृंखला लागू करने से खुले बाजार में अन्न व्यापार ही बन्द जाएगा? इन सब तर्क-कुतर्क पर सुधि पाठक स्वयं विचार करें।

यह सरकार के जनता से सीधे चुने हुए भाग पर निर्भर करता है कि वह रिपोर्ट स्वीकार करके MSP की लीगल गरंटी का कानून बनाती है या नहीं।

पाठकों को पहली बात तो यह समझनी है कि MSP सब फसलों के लिए नहीं बल्कि सरकार द्वारा अधिसूचित कुछ ही फसलों के लिए घोषित की जाती है जैसे गेंहू, चना, चावल, ज्वार, बजरा, कुछ दलहनी फसलें जैसे मूंग, मसूर उड़द आदि,कुछ तिलहनी फसलें जैसे सरसों आदि, गन्ना, कपास आदि आदि। इस प्रकार की फसलों की सूची केंद्र सरकार अधिसूचित करती है।

विभिन्न अधिसूचित फसलों की MSP निर्धारण के लिए CACP (Commission for Agricultural Costs and Prices) (कृषि लागत और मूल्य आयोग) केंद्र सरकार को अनुशंसाएं भेजता है। CACP विभिन्न फसलों से सम्बंधित लागत, उत्पादन के कई प्रकार के आंकड़े राज्य सरकारों, केंद्र सरकार के कृषि व किसान कल्याण मत्रालय से, केंद्र सरकार के आर्थिक सलाहकार के कार्यालय से, श्रम कल्याण विभाग आदि से इक्कठा करता है। इनके आधार पर गणनाएं कर, खेती की लागत (कोस्ट ऑफ कल्टीवेशन, COC), खेती से हुए उत्पादन की लागत, (COP, कोस्ट ऑफ प्रोडक्शन) व MSP पर अपनी अनुशंसाएं केंद्र सरकार को भेजता है।

केंद्र सरकार के कृषि व किसान कल्याण मंत्रालय के आर्थिक-सांख्यकी-मूल्यांकन विभाग द्वारा कृषि लागत गणना 1970-71 से एक comprehensive स्टडी स्किम (व्यापक अध्ययन योजना)

MSP के अंतर्गत फार्म/पलोट स्तर से आंकड़े एकत्र किए जाते है। फिल्ड स्टडी में यह अपेक्षा की गई है कि रैंडम पद्दति से चुने तहसील, गांव व प्लॉट्स पर कृषि गतिविधियों यथा बान, जुताई, गुड़ाई, निराई आदि व किस फसल में कितने इनपुट्स किस मात्रा में कब कब काम में लिए गए, इनपुट्स का क्रय व उयोग कब हुआ, कब-कितने बाहरी मजदूर लगे, परिवार के सदस्यों का प्लाट पर खेती से जुड़ी क्रियाओं पर लगाया समय आदि विभिन्न क्रियाओं के आंकड़े दिन प्रतिदिन के आधार पर इक्कठे किए जाएंगे। हर राज्य में, राज्यों के लिए निर्धारित विश्वविधालय या अन्य संस्थाएं यह कार्य करते है। इस कार्य के लिए 100 प्रतिशत अनुदान कृषि मंत्रालय भारत सरकार देता है।

कॉम्प्रेहेंसिव स्टडी के आंकड़े 2,3 क्रॉप सीजन (फसली वर्ष) पुराने होते है। उदहारण के लिए क्रॉप सीजन 2024-2025 के लिए कॉम्प्रेहेंसिव स्टडी के आदिनांक आंकड़े उपलब्ध नहीं होने से 2020-21, 2021-22, 2022-23 के आंकड़ों के आधार पर CACP नें फसलों के लिए खेती लागत (COC), कृषि उत्पाद लागत (COP) निकाल कर MSP की अनुशंसा की है।

राज्य सरकारें भी स्वतंत्र रूप से, अपने स्तर पर, ऐसे आंकड़े इक्कठा करवाती है और उनका उपयोग कर कृषि लागत आदि निकाल कर अपने स्तर से CACP को भेजती है। इसकी पद्दति-प्रक्रिया- केंद्र सरकार द्वारा कराई जाने वाली प्लाट लेवल स्टडी से भिन्न होता।

COC, COP, MSP निर्धारण के लिए आवश्यक बहुत से आंकड़े मुख्यत: कृषि इनपुट्स की लागत, किसी फसल का बुवाई के अंतर्गत रकबा, अनुमानित उत्पादन के सम्बंध में होते है। राज्य वार श्रमिक पारिश्रमिक दरों के आंकड़े श्रम कल्याण मंत्रालय के लेबर ब्यूरो से लिए जाते है। कृषि के लिए आवश्यक डीजल, फर्टिलाइजर्स, बिजली, कृषि उपयोग की मशीनें, पशु आहार व चारा, कीट नाशक आदि की कीमतों के आंकड़े भारत सरकार के विभिन्न मंत्रालयों व आर्थिक सलाहकार के दफ्तर में एकत्र होलसेल प्राइस इंडेक्स आंकड़ों से लिए जाते हैं।

CACP इन सब उपरोक्त उल्लेखित आंकड़ों का उपयोग कर MSP की गणना कर केंद्र सरकार को भेजता है।

कृषि लागत गणना में कृषि इनपुट्स की पहचान कर,उनकी लागत तय की जाती है। इन इनपुट्स में मानव -पशु-मशीन- श्रम, बीज, केमिकल व अन्य खाद, कीटनाशक, सिंचाई शामिल हैं। इन पर किसान द्वारा फसल उत्पादन में किए गये खर्चे को कृषि उत्पादन लागत में शामिल किया जाता है।। आयोग के द्वारा यह तय किया जाता है कि किस इनपुट का कृषि लागत में क्या वेटेज है। जैसे फसल वर्ष 24-25 के लिए कुछ वेटेज इस प्रकार तय किए गए::-- मानव श्रम 37.5, मशीन श्रम 27.3 व पशु श्रम का 1.3%, बीज का 10.3 व फर्टिलाइजर्स का 10% भाग है, आदि-आदि।

आयोग के द्वारा सारी इनपुट्स पर अलग अलग स्टेटववाईज इनपुट प्राइस इंडेक्स निकाला जाता है। और फिर उन आंकड़ों से राष्ट्रीय स्तर पर कम्पोजिट इनपुट प्राइस इंडेक्स (CIPI) की गणना की जाती है।

CIPI के आधार पर, इनपुट्स की लागत में गत तीन सालों के वास्तविक आंकड़ों में चालू फसली साल में क्या बदलाव रह सकता है, यह निकाला जाता है। जैसे फसल वर्ष 24-25 के लिए वर्ष 20-21, 21-22, 22-23 की इनपुट कीमतों का काम में लेकर सांख्यिकी गणना से एक कम्पोजिट इनपुट प्राइस इंडेक्स (CIPI) तैयार किया गया और उसके आधार पर, फसल वर्ष 24-25 के लिए इनपुट्स में संभावित परिवर्तनों का अनुमान लगाया गया है। राज्यवार वेटेज गणना में स्टेटस का वेटेज उस फसल के अंतर्गत देश में कुल क्षेत्रफल में उस स्टेट में उस फसल के क्षेत्रफल के हिस्से के अनुपात में होता है। जिन प्रदेशों में किसी फसल के अंतर्गत नगण्य क्षेत्रफल होता है, उस राज्य के लिए उस फसल के बारे में यह गणना नहीं कि जाती है। चालू फसली साल में किस फसल के अंतर्गत कितना रकबा है और कितना उत्पादन राज्य वार व देश में होगा इसका भी अनुमान लगाया जाता है। कृषि लागत, उत्पादन लागत व MSP निकलने और केंद्र सरकार को अनुशंषाएँ भेजने के लिए, कृषि लागत व मूल्य आयोग

प्रत्येक अधिसूचित फसल के लिए कई प्रकार की सूचनाएं, कई स्त्रोतों से एकत्र की जाती हैं। कृषि इनपुट्स, मानव-मशीन-पशु आदि के श्रम के आंकड़े, फील्ड स्टडी से इक्कठे किए जाते है। प्लाट स्तर से लेकर राज्य स्तर पर राज्यवार कोस्ट ऑफ कल्टीवेशन, कोस्ट ऑफ प्रोडक्शन निकाली जाती है। अलग-अलग प्रदेशों के लिए इनमें अंतर होगा। इसे भी उस फसल के कुल उत्पादन व देश स्तर पर कुल उत्पादन के अनुपात में वेटेड एवरेज निकाल कर, राष्ट्रीय स्तर का प्रत्येक फसल की खेती व का उत्पादन लागत के आंकड़े निकाले जाते है।

पॉपुलर भाषा कृषि उत्पाद की कुल लागत आंकड़े को A2 कृषि लागत कहा जाता है। A2 कोस्ट में खाद, बीज, कीटनाशक, बाहरी मजदूर को दी गई नकद मजदूरी, सिंचाई, फ्यूल आदि गई नकद व्यय शामिल है।

FL में पारिवारिक सदस्यों द्वारा विभिन्न प्रकार से किए गए काम जैसे बुवाई, विडिंग, फसल कटाई का अनपेड श्रम मूल्य शामिल किया जाता है। FL को जोड़ कर A2+FL लागत निकाली जाती है। ।

कृषि उत्पादन के मूल्यों में एक ओर मूल्य C2 भी चर्चा में रहता है। डॉक्टर एम. स्वामीनाथन किसानों की समस्याओं के समाधान हेतु गठित डॉक्टर एम स्वामीनाथन आयोग नें C2 कोस्ट परिभाषित की थी ।

C2 में, A2+FL में पारिवारिक अनपेड श्रम का मूल्य जोड़ा जाता है। इसके अतिरिक्त कृषि के लिए काम में ली जाने वाली स्थायी मशीनरी, औजार-उपकरण, गोदाम-मकानात, आदि के मूल्य पर ब्याज जोड़ने की बात की जाती है। इसमें खेती के लिए आवश्यक वर्किंग पूंजी पर ब्याज जोड़ा जाता है। इसमें भूमि की रेंटल आय जोड़ी जाती है।

केंद्र सरकार की वर्तमान व्यापक अध्यन योजना की मैथडोलोजी में कमियां:-इस योजना के अंतर्गत फिल्ड कार्यकर्ताओं से यह अपेक्षा की गई है कि प्लाट केवल सर्वे के आंकड़े दिन-प्रतिदिन के आधार पर इक्कठे किए जाएंगे। प्रत्येक अधिसूचित फसल के लिए इसी प्रकार की सूचनाएं, आंकड़े प्लाट स्तर से लेकर राज्य स्तर पर राज्यवार कोस्ट ऑफ कल्टीवेशन, कोस्ट ऑफ प्रोडक्शन निकाली जाती है। अलग-अलग प्रदेशों के लिए इनमें अंतर होगा।

इसे भी उस फसल के कुल उत्पादन व देश स्तर पर कुल उत्पादन के अनुपात में वेटेड एवरेज निकाल कर, राष्ट्रीय स्तर का प्रत्येक फसल की खेती व का उत्पादन लागत के आंकड़े निकाले जाते है। हर राज्य में, राज्यों के लिए निर्धारित विश्वविधालय या अन्य संस्थाएं यह कार्य करते है। इस कार्य के लिए 100% अनुदान कृषि मंत्रालय भारत सरकार देता है।

कॉम्प्रेहेंसिव स्टडी प्रक्रिया में सुधार के लिए 1979-80 में सेन कमेटी गठित की गई। 1990 में हनुमंत राव कमेटी गठित की गई। इनकी सिफारिशों के आधार पर प्रक्रिया में कुछ सुधार किए गए। फिर भी इस क्षेत्र के विशेषज्ञों के अनुसार अभी काफी कमियां है जैसे स्कीम सभी राज्यों में ऑपरेटिव नही, सारी फसलों के लिए नहीं होकर मुख्यत: केवल कुछ (25) ही वार्षिक फसलों जैसे पैड़ी, गेंहू आदि व कपास गन्ना आदि के लिए है। सेम्पल्स चयन में विभिन्न श्रेणियों जैसे खातेदार, शेयर क्रोपर, बटाईदार, लीज होल्डर आदि का पर्याप्त मिश्रण नहीं आदि।

हनुमंत राव कमेटी की अनुशंसा थी कि मैनेजेरियल कोस्ट के रूप में A2 कोस्ट का 10% जोड़ा जाए किन्तु सरकार नें इसे C2 कोस्ट में जोड़ने का निर्णय लिया जो विशेषज्ञों व CACP की अनुसार उचित नहीं। एक अन्य समस्या खुद की भूमि व बटाई पर ली गई भूमि की रेंटल वैल्यू से सम्बंधित है। इससे कोई स्पष्टता नही। उपरोक्त वर्णित दोनों कमेटियों की अनुशंषाएँ सम्पूर्णता में लागू नहीं हुई है। इसी प्रकार कृषि उपयोग की स्थायी सम्पतियों यथा ट्रैक्टर, पलौ, हार्वेस्टर आदि, दूसरे छोटे औजार-उपकरण, गोदाम आदि के मूल्य पर 10% व वर्किंग राशि पर 12.5% ब्याज केवल आधे समय के लिए गणना में लिया जाता है।

टाटा इंस्टिट्यूट ऑफ सोसल साइंसेज के डिपार्टमेंट ऑफ डेवलपमेंटल स्टैंडिंग के प्रोफेसर आर रामकुमार और साथी आशीष कुमार के एक शोध पत्र के अनुसार CACP की अनुशंषाएँ 2 से 3 व अधिक वर्ष पुराने फील्ड लेवल डाटाज पर आधारित होती है। उन्होनें वर्ष 2004-05 से 2015-16 तक के उपलब्ध फील्ड डाटाज के आधार A2+FL व अन्य कोस्ट्स की गणनाओं और CACP के द्वारा गणना की A2+FL व दूसरी कोस्ट्स की तुलना की।

उनका यह निष्कर्ष था कि, आदिनांक फील्ड लेवल डेटा उपलब्ध नहीं होने के कारण, पुराने वर्षों के फील्ड लेवल डेटा उपयोग में लेने से कई वर्षों में 20 से 30% तक कम MSP की सिफारिश की गई।

इस शोध पत्र के अनुसार यद्यपि CACP द्वारा कुछ फसली सालों में, पुराने डेटा को उपयोग में लाते वक्त करेक्शन फैक्टर भी काम में लिया है किंतु इसके बावजूद A2+FL व C2 कोस्ट कम ही थी।

CACP के ध्यान में यह कमियां है किंतु अभी उचित समाधान नहीं हुआ है। CACP की रेकमनडेसन्स के अनुसार फील्ड लेवल डेटा रियल टाइम बेसिस पर इक्कठे किये जाएं। फील्ड लेवल पर चयनित कृषकों के सेल फोन नम्बर आयोग से शेयर किए जाएं ताकि प्रारंभिक क्रॉस चेक कर आश्वस्त हुआ जा सके कि कार्य सही प्रकार से हो रहा हैं अथवा नहीं।

–महावीर सिंह, पूर्व आईएएस

राजगढ़ धाम पर मनोकामनापूर्ण स्तम्भ की 22वीं वर्षगांठ का महोत्सव मनाया

अजमेर, (कासं)। श्री मसाणिया भैरवधाम चैरिटेबल ट्रस्ट राजगढ़ के तत्वावधान में ग्राम राजगढ़ स्थित श्री मसाणिया भैरवधाम पर मनोकामनापूर्ण स्तम्भ की 22वीं वर्षगांठ का महोत्सव धूमधाम के साथ बाबा भैरव व मां कालिका के जयकारों के बीच मनाया गया।

धाम के प्रवक्ता अविनाश सेन ने बताया कि मंदिर में बुधवार को प्रात: मनोकामनापूर्ण स्तम्भ पर पंड़ित चन्द्रशेखर आचार्य व मोहित आचार्य द्वारा वैदिक मंत्रोच्चार के साथ महाराज व मुख्य अतिथि के सानिध्य में हवन-यज्ञ सम्पन्न करवाया। हवन की पूर्णाहुति के बाद मां कालिका व बाबा भैरव की व गुरूआरती हुई। कार्यक्रम का शुभारम्भ मुख्य उपासक चम्पालाल महाराज तथा अन्य अतिथियों द्वारा मंदिर पर ध्वजारोहण से हुआ। मुख्य अतिथि केन्द्रीय कृषि राज्यमंत्री भागीरथ चौधरी ने श्रद्धालुओं को सम्बोधित करते हुए कहा कि मैंने देशभर में भ्रमण किया है, लेकिन राजगढ़ धाम राजस्थान ही नहीं अपितु पूरे भारतवर्ष में अद्भुत ख्याति प्राप्त देवस्थान है, जहां चम्पालाल महाराज श्री निस्वार्थ भाव से मानव जीव प्राणी की सेवा कर रहे हैं, जिसका बखान शब्दों के माध्यम से नहीं किया जा सकता है। महाराजश्री द्वारा जो राष्ट्रीय स्तर पर समाज के कल्याणकारी कार्य जैसे नशामुक्ति का अभियान व समाजकंटकों द्वारा की जा रही है। कन्या भ्रूण हत्या के विरोध में धाम पर चल रहे महाअभियान बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ व जल स्वालम्बन अपने आप में अनूठी मिसाल व्यक्त करता है। श्री मसाणिया भैरवधाम चैरिटेबलट्रस्ट राजगढ़ के तत्वावधान में नशा मुक्ति व बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ महाअभियान के अंतर्गत लगभग 50 लाख से अधिक लोगों ने राजगढ़ धाम में संकल्प लिया है, यह भी अपने आप में अनूठी मिसाल है।

ग्राम राजगढ़ स्थित श्री मसाणिया भैरवधाम पर आयोजित महोत्सव में मुख्य उपासक चम्पालाल महाराज, केन्द्रीय कृषि राज्यमंत्री भागीरथ चौधरी आदि मौजूद रहे।

■ लाखों की संख्या में श्रद्धालु उमड़े, वर्षगांठ महोत्सव पर गायकों ने भजनों की प्रस्तुतियां दी

इस अवसर पर भैरवधाम पर प्रदेश के कई मंत्री, विधायक, प्रशासनिक और पुलिस के आलाधिकारी मौजूद थे। कार्यक्रम में भीड़ का आलम यह था कि श्रद्धालुओं की संख्या लाखों के आंकड़े को भी पार कर गई। श्रद्धालु सायंकाल आरती तक धाम पर आकर परिक्रमा करते रहे और बाबा भैरव व मां कालिका के समक्ष शीश झुकाकर चम्पालाल महाराज से आशीर्वाद प्राप्त करते रहे। वर्षगांठ महोत्सव पर भजन गायक कलाकार नरेश दग्दी, ज्योति सैनी ने बाबा भैरव के भजनों की प्रस्तुतियां दी।

दिसम्बर के दूसरे पखवाड़े में दो पश्चिमी विक्षोभ ला रहे तापमान में उतार-चढ़ाव

बीकानेर, (निसं)। लगातार दो पश्चिमी विक्षोभ के कारण दिसंबर का दूसरा पखवाड़ा मौसमी उतार-चढ़ाव वाला साबित हो रहा है। 24 घंटे पहले बादलों के छाने से रात का पारा 14 डिग्री तक पहुंच गया। सामान्य से 7 डिग्री पारा अधिक होते ही मावठ हो गई। सोमवार को मावठ के बाद जब हवा चली तो वापस तापमान 6 डिग्री गिरा। न्यूनतम तापमान 14 डिग्री से गिरकर 8.4 डिग्री जा पहुंचा। 27 दिसम्बर को फिर से मावठ के आसार जताए जा रहे हैं। इसलिए 8.4 डिग्री वाला तापमान वापस 13-14 डिग्री तक जाने की संभावना है।

जानकारी के अनुसार पिछले सप्ताह रात का पारा 4.8 डिग्री तक पहुंच गया था। कड़ाके की सर्दी शुरू ही हुई थी कि अचानक पश्चिमी विक्षोभ आ गया। पश्चिमी विक्षोभ के कारण आसमान में बादल छाए तो पारा 14 डिग्री तक पहुंच गया। यानी सिर्फ दो दिन में तापमान ने 9 डिग्री से ज्यादा की उछाल भरी। उसके बाद 24 घंटे पहले 8 घंटे में तीन बार बूंदाबांदी हुई। मावठ सिर्फ एक एमएम हुई लेकिन सोमवार को दोपहर बाद चली बर्फीली हवाओं ने लोगों को कंपा दिया। इसी वजह से बीती रात का पारा 8.4 डिग्री रिकार्ड किया गया। 24 घंटे में ही 6 डिग्री तापमान में फिर गिरावट हुई। सिर्फ 4 दिन में 10 डिग्री के करीब तापमान का उतार-चढ़ाव हुआ। इस रात को भी तापमान 8 डिग्री के आसपास ही रहेगा लेकिन 26 और 27 को वापस बादल छाएंगे और तापमान में उछाल जाएगा।

मौसम विभाग ने संकेत दिए हैं कि गुरुवार को तापमान 13 से 14 डिग्री के करीब होगा, यानी साल का अंतिम सप्ताह काफी उतार-चढ़ाव वाला रहेगा। इसी सप्ताह तापमान भी ज्यादा रहेगा। बारिश भी होगी और कोहरा भी छाने के आसार हैं।

राशिफल गुरूवार 26 दिसम्बर, 2024

पंडित अनिल शर्मा

पौष मास, कृष्ण पक्ष, एकादशी तिथि, गुरूवार, विक्रम संवत 2081, स्वाती नक्षत्र सायं 6:10 तक, सुकर्मा योग रात्रि 10:23 तक, बव करण दिन 11:37 तक, चन्द्रमा आज तुला राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-धनु, चन्द्रमा-तुला, मंगल-कर्क, बुध-वृश्चिक, गुरू-वृष, शुक्र-मकर, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज सफला एकादशी व्रत है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ सूर्योदय से 8:35 तक। चर 11:10 से 12:27 तक, लाभ-अमृत 11:17 से 3:02 तक, शुभ 4:14 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 10:30 से 12:00 तक। सूर्योदय 7:18, सूर्यास्त 5:37

मेष
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा।

सिंह
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक अनुबंध प्राप्त होंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

धनु
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक यात्रा संभव है। परिवार में चल रहे आपसी मतभेद समाप्त होंगे।

वृष
व्यक्तिगत परेशानियां दूर होने लगेगी। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। विवादित मामलों से राहत मिलेगी। स्वास्थ्य में सुधार होगा। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी।

कन्या
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

मकर
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे।

मिथुन
परिजनों के व्यवहार के कारण मन खिन्न हो सकता है। आपसी ईर्ष्या-वैमनस्यता के कारण परेशानी हो सकती है। वाणी पर नियंत्रण रखना ठीक रहेगा।

तुला
व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। नौकरीपेशा व्यक्तियों को महत्वपूर्ण जिम्मेदारी मिल सकती है।

कुंभ
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक विवादों से राहत मिल सकती है।

कर्क
व्यावसायिक कार्यों के संबंध में संयम रखना ठीक रहेगा। नौकरीपेशा व्यक्तियों को तनाव पर नियंत्रण रखना ठीक रहेगा। परिवार में अतिथियों का आगमन रहेगा।

वृश्चिक
घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। अनर्गल कार्यों में समय खराब होगा। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी।

मीन
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। यात्रा टालना ठीक रहेगा।

सुशासन दिवस मनाया

नागौर। पूर्व प्रधानमंत्री भारत रत्न स्व. श्री अटल बिहारी वाजपेयी की जयंती के अवसर पर बुधवार को जिला परिषद सभागार में सुशासन दिवस मनाया गया।

मुख्य अतिथि के रूप में कार्यक्रम में मौजूद सार्वजनिक निर्माण व महिला एवं बाल विकास राज्य मंत्री डॉ. मंजू बाघमार ने श्री वाजपेयी के चित्र पर माल्यार्पण कर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित कर कार्यक्रम की शुरुआत की। इस अवसर पर जिला प्रमुख भागीरथ चौधरी, मेडता विधायक लक्ष्मणराम कलरू, खींवसर विधायक रेवंतराम डांगा, पूर्व विधायक मोहनराम चौधरी, जिला कलेक्टर अरुण कुमार पुरोहित सहित जनप्रतिनिधियों ने श्री अटल बिहारी वाजपेयी की तस्वीर पर पुष्पांजलि अर्पित की।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में संबोधित करते हुए राज्य मंत्री डॉ. मंजू बाघमार ने कहा कि श्री अटल बिहारी वाजपेयी के जन्मदिन के साथ ही आज ही के दिन गुरुनानक जयंती भी है। उन्होंने कहा कि इन महापुरुषों के बलिदान से ही हम आज इस अच्छी स्थिति में है। वैश्विक पटल पर भारत ने अपनी जो पहचान बनाई है वो इन महापुरुषो की ही देन है। इस मौके पर खींवसर विधायक श्री रेंवतराम डांगा ने श्री अटल बिहारी वाजपेयी के आदर्शों पर चलने का आव्हान किया। मेडता विधायक लक्ष्मणराम कलरू ने कहा कि श्री अटल बिहारी वाजपेयी किसानों के मसीहा थे।

सरवाड़ में पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी की जयंती सुशासन के रूप में मनाई

सरवाड़ (निसं)। भाजपा शहर मण्डल द्वारा गांधी चौक में भारत रत्न स्व श्रीअटल बिहारी वाजपेयी की जन्म जयंती मनाई गई वहीं यह जयंती भाजपा मण्डल अध्यक्ष प्यारे लाल खटीक के नेतृत्व में मनाई गई। इस मौके पर शहर के महामन्त्री कुशल किशोर सोनी ने बताया कि जनसंघ के संस्थापक भाजपा के प्रथम अध्यक्ष व भारत के तीन बार

भाजपा कार्यकर्ताओं ने पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी की जयंती मनाई।

- **अटल बिहारी वाजपेयी का कार्यकाल स्वर्णिम कार्यकाल रहा**

प्रधानमंत्री व भारत रत्न स्व अटल बिहारी वाजपेयी का कार्यकाल स्वर्णिम कार्यकाल रहा व आपने सदेव अपने आदर्शों पर शासन किया। स्वर्णिम चतुर्भुज सड़क योजना व नदी जोड़ो योजना आपकी दूरगामी सोच का परिणाम है। इस दौरान कार्यक्रम में मण्डल अध्यक्ष प्यारे लाल खटीक, पूर्व चेयरमैन दुर्गा लाल माली, शहर महामन्त्री कुशल किशोर सोनी, उपाध्यक्ष कैलाश घारू, मण्डल महामन्त्री नंदकिशोर रेगर, महिला मोर्चा अध्यक्ष रेखा तापड़िया, बूथ अध्यक्ष सूरज माली, बूथ मंत्री दर्शन जैन, किशन सिंह लाखनोत, सुखलाल प्रजापत, राजकुमार धूपड़ व राजू धाकड़ सहित सभी कार्यकर्ताओं ने अटलजी के चित्र पर माल्यार्पण करके पुष्पांजलि अर्पित की। **आसीन्द संवाददाता के अनुसार** : भारतीय जनता पार्टी नगर मंडल आसींद व ग्रामीण मंडल के तत्वाधान में बुधवार को पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेई की जन्म जयंती भाजपा कार्यालय पर विधायक जब्बर सिंह जी सांखला के सानिध्य में जन्म जयंती सुशासन दिवस के रूप में मनाई।

विधायक जब्बर सिंह सांखला ने कहा कि आज अटल बिहारी वाजपेई का 100 वा जन्म दिवस है हम सभी के लिए अटल जी प्रेरणा स्रोत है उनके विचारों को हमें आगे बढ़ाना है तथा आज ही के दिन गुरु गोबिंद सिंह जी के पुत्रों का बलिदान हुआ जिनको भी नमन करते है जिनका आज ही के दिन आक्रांतओ द्वारा दीवार में जिन्दा चुनवाया था। भाजपा नगर अध्यक्ष अनिल सिंह तँवर ने सभी का आभार ज्ञापित किया। पूर्व अध्यक्ष भंवर लाल चोरड़िया, पूर्व जिला मंत्री गोपाल सिंह चुंडावत, नगर मंत्री रामचंद्र सेन, उर्वशी मोर्चा अध्यक्ष सुरेश चंद्र पहाड़िया ओबीसी मोर्चा के संयोजक कैलाश चंद्र नगर पालिका उपाध्यक्ष विक्रम सिंह चुंडावत आदि उपस्थित रहे।

बाल दिवस कार्यक्रम मनाया

ब्यावर (निसं) भारतीय जनता पार्टी अजमेर देहात में तीन दिवसीय वीर बाल दिवस कार्यक्रम के उपलक्ष्य में मंगलवार को राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय एवं कैली देवी सांखला राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय सूरजपोल गेट ब्यावर में गुरु गोविंद सिंह के चार साहिबजादों की शहीदी को वीर बाल दिवस के रूप में मनाया गया। जिसमें मुख्यवक्ता एवं मुख्य अतिथि देवीशंकर भूतड़ा, जिलाध्यक्ष भाजपा अजमेर देहात उपस्थित रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता कार्यक्रम जिला संयोजक बृजकिशोर शर्मा एवं प्रधानाचार्य रमेश दाधीच एवं प्रधानाध्यापिका कच्छावा ने की।

कार्यक्रम के अंतर्गत राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय में आयोजित गोष्ठी कार्यक्रम में मुख्य अतिथि अजमेर देहात जिलाध्यक्ष देवीशंकर भूतड़ा ने कहा कि चार साहिबजादों की शहीदी के इतिहास को पिछली सरकारों ने बंद बक्सों में रखा गया था। वर्ष 2014 में भाजपा की सरकार बनने के बाद वीर साहिबजादों के बलिदान को याद किया है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में सरकार ने बाबा अजीत सिंह, जुझार सिंह, जोरावर सिंह और फतेह सिंह के बलिदान को व्यर्थ जाने नहीं दिया और प्रत्येक वर्ष 26 दिसंबर को शहीद वीर बाल दिवस की घोषणा की गई इसी क्रम में वीर बाल दिवस मनाया जा रहा है।उपस्थित सभी वरिष्ठ जनों ने अपने विचार रखें।

कार्यालय नगर परिषद् पुष्कर जिला अजमेर राजस्थान

क्रमांक/नपापु/भूमि/2024/3323 दिनांक–23–12–2024

उजरदारी सूचना

एतद्द्वारा सर्व साधारण को सूचनार्थ प्रकाशित किया जाता है कि निम्न व्यक्ति द्वारा नामान्तरण/भवन निर्माण/संयुक्तिकरण/पट्टा हेतु आवेदन पेश किया है। अतः आवेदक के बख्शीशुदा/खरीदशुदा सम्पत्ति हक हकूक एवं मालिकाना स्वामित्व संबंधी किसी व्यक्ति को कोई आपत्ति हो तो इस विज्ञप्ति के प्रकाशन की तिथि से 7 दिवस में अपनी आपत्ति मय प्रमाण प्रस्तुत करें। आपत्ति समयावधि बाद प्रस्तुत करने पर मान्य नहीं होगी तथा परिषद द्वारा नियमानुसार नामान्तरण/भवन निर्माण/संयुक्तिकरण/पट्टा की कार्यवाही प्रस्तावित कर दी जायेगी, जिसके बाद में कोई आपत्ति/उजर मान्य नहीं होगा। विवरण निम्नानुसार है।

क्र स	आवेदक का नाम मय पिता/पति	स्थान जहाँ सम्पत्ति स्थित है	चतुर्थी सीमा	क्षेत्रफल
1	श्रीमती कमला शर्मा पत्नि श्री गोपाल शर्मा	हेलोज रोड नायक कॉलोनी पुष्कर	पूर्व– हेलोज रोड पश्चिम– गली जायबाद नायक कॉलोनी उत्तर– सुण्डाराम जी नाई का मकान दक्षिण– गली जायबाद झंवर जी का मकान	445.00 वर्गगज

आयुक्त नगर परिषद पुष्कर

कार्यालय ग्राम पंचायत हरराजपुरा पंचायत समिति मसूदा ब्यावर

क्रमांकः जिप/लेखा/निविदा/2024/06 दिनांक- 23.12.2024

ई-निविदा सूचना

ग्राम पंचायत हरराजपुरा के विभिन्न ग्राम में निर्माण कार्यों हेतु ई-निविदा आमंत्रित की जाती है। अनुमानित लागत 25.00 लाख रू धरोहर राशि 50000/-, फार्म शुल्क 500/-, (प्रति कापी) टेण्डर प्रोसेसिंग शुल्क 500/- (प्रति कापी) के आनलाईन ग्राम पंचायत खाते में दिनांक 02.01.2025 को जमा कराना होगा। निविदा दिनांक 03.01.2025 को ग्राम पंचायत हरराजपुरा के ई-प्रकोष्ठ में खोली जावेगी। विस्तृत शर्तें निविदा फार्म उल्लेखित है। http://sppp.rajasthan.gov.in व eproc.rajasthan.gov.in ID-PAE2425WSOB00018 से प्राप्त की जा सकती है।

सरपंच
ग्राम पंचायत हरराजपुरा
पं.स. मसूदा (ब्यावर) राज.

कार्यालय ग्राम पंचायत धौलादाता पंचायत समिति मसूदा ब्यावर

क्रमांकः जिप/लेखा/निविदा/2024/06 दिनांक- 23.12.2024

ई-निविदा सूचना

ग्राम पंचायत धौलादाता के विभिन्न ग्राम में निर्माण कार्यों हेतु ई-निविदा आमंत्रित की जाती है। अनुमानित लागत 10.00 लाख रू धरोहर राशि 20000/-, फार्म शुल्क 500/-, (प्रति कापी) टेण्डर प्रोसेसिंग शुल्क 500/- (प्रति कापी) के आनलाईन ग्राम पंचायत खाते मे दिनांक 02.01.2025 को जमा कराना होगा। निविदा दिनांक 03.01.2025 को ग्राम पंचायत धौलादाता के ई-प्रकोष्ठ में खोली जावेगी। विस्तृत शर्तें निविदा फार्म उल्लेखित है। http://sppp.rajasthan.gov.in व eproc.rajasthan.gov.in ID-PAE2425WSOB00017 से प्राप्त की जा सकती है।

ग्राम विकास अधिकारी — सरपंच
ग्राम पंचायत धौलादाता — ग्राम पंचायत धौलादाता
पं.स. मसूदा (ब्यावर) राज. — पं.स. मसूदा (ब्यावर) राज.

रेगर पंचायत की नई कार्यकारिणी बनाई

मसूदा (निसं)। की अखिल भारतीय रेगर पंचायत मसूदा परगणा के 63 गावों की एक आम बैठक मसूदा के समाज के गंगा भवन में रखी गई। जिसमें सर्व सम्मति से तीन वर्ष बाद पुनः नई कार्य कारिणी का गठन किया गया।

जिसमे अध्यक्ष पद पर धन्ना लाल मुनोत श्योपुरा, उपाध्यक्ष रायमल सुकरिया नीतिनगर, चांद?मल बोकोलिया मसूदा, सचिव रामदेव बोकोलिया सतावड़िया, कोषाध्यक्ष– देबीलालजी लगाया जालिया महामंत्री– दीपक नुबाल सथाना, अकेक्षक ऑडिटर–सूरजमल जी मौर्य मसूदा, बाबूलालजी बोकोलिया देवीसागर, संरक्षक– रतन लाल मुनोत सुरामला, रामगोपाल मौर्य शिखरानी, राजमल सुकरिया लोरड़ी, नारायण जी सुवासिया नंदवाड़ा को मनोमित किया। और 63 गांवों से एक–एक कार्यकारीणी सद्स्य मनोनित किये। नवमनोभित सदस्यों को निर्वतमान अध्यक्ष रामगोपाल मौर्य ने समाज सेत्रा और पद त?था गोपनीयता की शपथ दिलाई। बैठक में अध्यक्ष ने उद्?बोधन में समाज की निस्वार्थ भाव से सेवा करने आपसी सामंजस्य से मस्याओं और समाज की सम प्रकरणों के निस्तारण का आश्वासन दिया।

आम सभा में मसूदा क्षेत्र के लगभग पांच सौ अधिक समाज प्रेमियों ने भाग लिया और अन्तः में स्नेह भोज लिया।मसूदा परगणा ने किया विधायक का सम्मान आम सभा में क्षेत्रीय विधायक मसूदा का साफा बन्धाकर माला पहनाकर अध्यक्ष धन्ना लाल और गणमान्य समाज सेवियों ने विधायक का गंगा भवन स्वागत सत्कार किया। विधायक ने गंगा भवन परिसर परिसर में सामुदायिक भवन बनाने का आश्वासन दिया।

'भागवत कथा का श्रवण करने से मोक्ष की प्राप्ति'

मदनगंज–किशनगढ़,(निस)। अजमेर रोड स्थित महेश विहार में आयोजित श्रीमद् भागवत कथा के दूसरे दिन अनंत विभूषित निंबार्काचार्य पीठाधीश्वर श्यामशरण देवाचार्य श्रीजी महाराज ने श्रद्धालुओं को कथा का श्रवण कराते हुए कहा की हृदय को एकाठाचित कर श्रीमद् भागवत कथा का श्रवण करने वाले को निश्चित ही मोक्ष मिलता है और उसका आत्म कल्याण होता है। श्रीजी महाराज ने कहा श्रीमद् भागवत कथा के श्रवण से भक्ति ज्ञान व वैराग्य की प्राप्ति होती है। मनुष्य को जीवन में परम विवेक मिलता है। भगवान की कथाएं दिव्य होती है व सभी देव कथाओं में मनुष्य को भगवान की सर्वश्रेष्ठ कृति बतलाया गया है। वेदशास्त्र में वर्णित है कि सर्वप्रथम तो मानव देह पाना ही कठिन है और मनुष्य जन्म मिल जाने पर यदि भक्ति मार्ग मिल जाए तो फिर भवसागर से ऐसा जीव निश्चित ही पार हो जाता है। भगवान के लिए मनुष्य का भक्ति भाव व उसका आचरण महत्व रखता है। पीठाधीश्वर जगदगुरु श्यामशरण देवाचार्य श्रीजी महाराज ने व्यक्ति की किशोर अवस्था को लेकर युवाओं को सचेत करते हुए कहा कि जीवन में कभी कोई गलती होने पर प्रायश्चित करना चाहिए, किसी प्रिय के पास पहुंचकर इसका समाधान ढूंढना चाहिए न की अवसाद में आकर किसी अनिष्टकारी मार्ग को चुनना चाहिए। कथा के दौरान आयोजक श्रीगोपाल सोनी परिवार को श्रीमद् भागवत रसवर्षण के लिए साधुवाद देते हुए आचार्य श्री ने कहा कि इनके माध्यम से हजारों लोगों को श्रीमद् भागवत कथा के श्रवण का पुण्य मिल रहा है। कथा में जै राधा, जै कृष्ण मुरारी, मुरलीधर गोवर्धन धारी, राधे कृष्णा, राधे कृष्णा, कृष्णा, कृष्णा, राधे राधे, राधेश्याम, राधे श्याम, श्यामा, श्यामा राधे राधे भजन गाने पर श्रद्धालु भाव विभोर होकर झूमने लगे। आचार्य श्री ने कहा कि संतों का हृदय नवनीत के समान होता है जो दूसरों की पीडा जानकर तुरंत ही द्रवित हो जाता है। श्रीमद् भागवत कथा के श्रवण से भक्ति ज्ञान व वैराग्य की प्राप्ति होती है। मनुष्य को जीवन में परम विवेक मिलता है। आचार्य श्री ने श्रीमद् भागवत कथा में गोकर्ण कथा के बारे में विस्तार से बताया। कथा समापन पर आयोजक सोनी परिवार व श्रद्धालुओं ने व्यास पीठ की आरती उतारी।

जयंती मनाई

पुष्कर (निसं)। भारत के पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी की 100 वी जन्म जयंती के अवसर पर पुष्कर भाजपा मंडल द्वारा कार्यक्रम आयोजित कर स्वर्गीय अटल जी को श्रद्धांजलि अर्पित की गई। इस अवसर पर पार्टी के मंडल अध्यक्ष ने सभी कार्यकर्ताओं से आ ान किया कि अटल जी के बताइए मार्ग पर चलें। यह जयंती निवर्तमान सभापति नगर परिषद पुष्कर कमल पाठक के नेतृत्व में मनाई गई। सभी उपस्थित कार्यकर्ताओं ने अटल जी के पद चिन्हों पर चलने का संकल्प लिया।

कार्यालय नगर पालिका मण्डल जहाजपुर (शाहपुरा)

E-Mail Id- mhjahazpur@gmail.com Phone No 01485-294101

कमांक/नपाज /भूमि / 2024-25 / 2806 दिनांक : 24.12.2024

आपत्ति आमंत्रण सूचना

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि निम्नलिखित व्यक्ति द्वारा स्वयं खातेदार की खसरा भूमि को भू-राजस्व अधिनियम 1956 की धारा 90क के अधीन गैर कृषि प्रयोजन के लिए अनुज्ञा / संपरिवर्तित भूमि के आवंटन के लिए नगर पालिका जहाजपुर में आवेदन प्रस्तुत किया गया है। जिसका विवरण निम्न प्रकार से है, उक्त बाबत किसी भी व्यक्ति संस्था की कोई आपत्ति विज्ञप्ति प्रकाशन के 7 दिवस ने मय सबूत के लिखित में आपत्ति प्रस्तुत करें बाद मियाद प्राप्त आपत्ति मान्य नहीं होगी तथा नियमानुसार कर दी जायेगी

क्र. सं.	आवेदनकर्ता का नाम व पता	स्थान व प्रस्तावित कॉलोनी नाम	आराजी खसरा संख्या	क्षेत्रफल	प्रयोजनार्थ
	1. श्री जगदीश चन्द्र मीणा पुत्र श्री नाथुलाल मीणा 2. श्रीमती खुशी मीणा पुत्री राजुलाल मीणा 3. श्री मिनाक्षी मीणा पत्नि श्रवण मीणा 4. श्री नरेन्द्र कुमार मीणा पुत्र श्री जगदीश चन्द्र मीणा 5. श्रीमती सीमा देवी पत्नि श्री जगदीश चन्द्र मीणा निवासीगण जहाजपुर, तह जहाजपुर जिला शाहपुरा	जहाजपुर देवली रोड, जिला- शाहपुरा राजस्थान	आराजी खसरा न. 4810 आराजी खसरा न. 4813 कुल किता 2	0.2671 हैक्टर 0.7932 हेक्टयर 1.0603 हैक्टयर मे से कुल क्षेत्रफल 0.5800 है (6937.38 वर्गगज) आवासीय रूपान्तरण	गैर कृषिक प्रयोजन आवासीय

अधिशाषी अधिकारी नगरपालिका जहाजपुर

कार्यालय नगर पालिका मण्डल जहाजपुर (शाहपुरा)

E-Mail Id- mhjahazpur@gmail.com Phone No 01485-294101

कमांक/नपाज /भूमि / 2024-25 /2802 दिनांक : 24.12.2024

आपत्ति आमंत्रण सूचना

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि निम्नलिखित व्यक्ति द्वारा स्वयं खातेदार की खसरा भूमि को भू-राजस्व अधिनियम 1956 की धारा 90क के अधीन गैर कृषि प्रयोजन के लिए अनुज्ञा / संपरिवर्तित भूमि के आवंटन के लिए नगर पालिका जहाजपुर में आवेदन प्रस्तुत किया गया है। जिसका विवरण निम्न प्रकार से है, उक्त बाबत किसी भी व्यक्ति संस्था की कोई आपत्ति विज्ञप्ति प्रकाशन के 7 दिवस ने मय सबूत के लिखित में आपत्ति प्रस्तुत करें बाद मियाद प्राप्त आपत्ति मान्य नहीं होगी तथा नियमानुसार कर दी जायेगी

क्र. सं.	आवेदनकर्ता का नाम व पता	स्थान व प्रस्तावित कॉलोनी नाम	आराजी खसरा संख्या	क्षेत्रफल	प्रयोजनार्थ
	1. श्री जगदीश चन्द्र मीणा पुत्र श्री नाथुलाल मीणा 2. श्रीमती खुशी मीणा पुत्री राजुलाल मीणा 3. श्री मिनाक्षी मीणा पत्नि श्रवण मीणा 4. श्री नरेन्द्र कुमार मीणा पुत्र श्री जगदीश चन्द्र मीणा 5. श्रीमती सीमा देवी पत्नि श्री जगदीश चन्द्र मीणा निवासीगण जहाजपुर, तह जहाजपुर जिला शाहपुरा	जहाजपुर देवली रोड, जिला- शाहपुरा राजस्थान	आराजी खसरा न. 4803	0.0809 हैक्टर क्षेत्रफल 0.0809 है. 809 वर्गमीटर	गैर कृषिक प्रयोजन वाणिज्यिक

अधिशाषी अधिकारी नगरपालिका जहाजपुर

विशेष टिकट चेकिंग अभियान

अजमेर। बेटिकट व नियम विरुद्ध रेल यात्रा करने वाले लोंगों को हतोत्साहित करने के मद्देनजर अजमेर मंडल पर मंगलवार को विशेष किलेबंदी के रूप में सघन टिकट चेकिंग अभियान चलाया गया। वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक बीसीएस चौधरी के आदेश पर मंडल वाणिज्य प्रबंधक मोनिका यादव के निर्देशन में मुख्य रूप से अजमेर स्टेशन सहित मंडल के विभिन्न खण्डों अजमेर–पालनपुर, अजमेर–फुलेरा व अजमेर–उदयपुर खण्डों पर संचालित होने वाली विभिन्न ट्रेनों में सघन टिकिट चेकिंग की गयी, जिसके अंतर्गत कुल 376 मामलों से 148375 रूपये की आय अर्जित की गयी जिसमे बिना टिकट यात्रा के 352 मामले शामिल थे।

वाजपेयी को याद किया

अजमेर, (कासं)। भारतीय जनता पार्टी शहर जिला अजमेर के बजरंग मंडल द्वारा अटल उद्यान में पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेई की सवी जयंती वीर बाल दिवस पर संगोष्ठी व पुष्पांजलि कर उनके बलिदान व त्याग को नमन किया गया। भारत रत्न श्रद्धेय अटल बिहारी वाजपेयी जी की जन्म शताब्दी व सुशासन दिवस के अवसर पर उनके कृतित्व और व्यक्तित्व को नमन कर उन्हें पुष्पांजलि की गई। भाजपा शहर जिला अध्यक्ष रमेश सोनी ने कहा कि अटल जी अपने ओजस्वी विचारों और कार्यों से न सिर्फ जन–जन में लोकप्रिय थे, बल्कि विपक्षी दल के नेता भी उनके व्यक्तित्व से प्रभावित थे। प्रधानमंत्री रहते हुए उन्होंने सेवा, सुशासन और देश के सामरिक विकास के नये आयाम स्थापित किये हैं,जनसंघ से लेकर भारतीय जनता पार्टी की यात्रा में संगठन को सशक्त करने और असंख्य कार्यकर्ताओं को गढ़ने में अटल जी का योगदान प्रणम्य है। सेवा एवं सुशासन को समर्पित अटल जी का जीवन दर्शन हम सभी के लिए पाथेय है। उनके कार्य एवं विचार, देश व जनसेवा हेतु सदैव हमारा मार्ग प्रशस्त करते रहेंगे।श्रद्धेय अटल जी आपातकाल के खिलाफ लड़ाई का भी बड़ा चेहरा थे। 'जनसंघ' का जनता पार्टी में विलय करने और भारतीय जनता पार्टी की स्थापना कर असंख्य कार्यकर्ताओं को जोड़ने में उनका योगदान अनुकरणीय है। यह भी सच है कि हर राष्ट्रभक्त कार्यकर्ता की तरह उनके लिए दल से बड़ा देश था, संगठन से बड़ा, संविधान था। जिला संयोजक वीर बाल दिवस तेजपाल साहनी ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने वीर बाल दिवस मनाने की घोषणा की थी। अब प्रत्येक वर्ष 26 दिसंबर को वीर बाल दिवस मनाया जाएगा। साहनी ने कहा कि वीर बाल दिवस गुरु गोविंद सिंह के पुत्रों की शहादत का प्रतीक है,उन वीरों के शौर्य की सच्ची श्रद्धांजलि के लिए हमें उनसे सीख लेनी चाहिए,वीर बाल दिवस हमारे इतिहास के उन नायक बच्चों की याद दिलाता है, जिन्होंने धर्म, संस्कृति और देश की रक्षा के लिए अपने प्राणों की आहुति दी। यह दिन साहस, निष्ठा और बलिदान का प्रतीक है।

साथ ही वीर बाल दिवस व अटल जी के जन्म दिवस पर सुशासन दिवस का कार्यक्रम प्रत्येक मंडल व बूथ स्तर पर मनाया गया।

बिजली रही गुल

अजमेर। बिजली व्यवस्था संभाल रही टाटा पावर ने बार–बार होने वाली ट्रिपिंग रोकने के लिए शहर में बिजली फीडरों का मेंटीनेंस शुरू कर दी है, जिसके चलते बुधवार को ब्यावर रोड स्थित हजारी बाग पावर हाउस के अजयनगर फीडर और सतगुरु फीडर 7 सात घंटे के लिए बिजली आपूर्ति को बंद रखी।

एक–दूसरे की दी ईसा मसीह के जन्म की बधाई

राजस्थान महिला कल्याण मंडल द्वारा संचालित अद्वैत केंद्र पर बुधवार को क्रिसमस दिवस कार्यक्रम मनाया।

- **समारोह में दिव्यांग बच्चे भी शामिल हुए**

अजमेर (कासं)। राजस्थान महिला कल्याण मंडल द्वारा संचालित अद्वैत केंद्र पर बुधवार को क्रिसमस दिवस कार्यक्रम मनाया गया। इसमें मुख्य अतिथि के रूप में अदिति एवं उनके संगठन ने शिरकत की। कार्यक्रम में संस्था के निदेशक राकेश कुमार कौशिक, क्षमा आर कौशिक(मुख्य कार्यकारिणी), समृद्धि कौशिक, प्रेरणा शर्मा खैरुन्निसा शेख, समीक्षा राठौर, शानू कँवरिया, संतोष द्वारा कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। संस्था मुख्य कार्यकारिणी क्षमा आर कौशिक द्वारा संस्थागत जानकारी देते हुए आए हुए अतिथियों को संस्था द्वारा किए जा रहे कार्यों के बारे में बताया गया तथा बताया गया कि संस्था में सभी प्रकार के उत्सव दिव्यांग बच्चों के साथ हर्ष के साथ मनाए जाते हैं।अतिथियों का स्वागत प्रेरणा शर्मा एवं बच्चों द्वारा तिलक लगाकर किया गया।

आए हुए अतिथियों द्वारा केक काटकर बच्चों को बताया गया कि क्रिसमस क्यों मनाया जाता है और अद्वैत सेंटर के बच्चों ने अतिथियों के साथ जमकर डांस का लुत्फ उठाया तथा आए हुए अतिथियों ने संस्था के कार्यों की सराहना की तथा आगे बढ़ाने की शुभकामनाएं दी गई इस मौके पर कार्यक्रम का संचालन समृद्धि कौशिक द्वारा किया गया।

शपथ ग्रहण समारोह संपन्न

अजमेर,(कासं)। जैन इंटरनेशनल ट्रेड ऑर्गनेशन (जीतो) के अजमेर चैप्टर के वर्ष 2025–26 की नई कार्यकारिणी का शपथ ग्रहण समारोह जयपुर रोड स्थित होटल रामाडा में आयोजित किया गया। प्रवक्ता आभा गांधी ने बताया कि इस अवसर पर जीतो अजमेर चेप्टर के अध्यक्ष मनीष रांका लेडीज विंग की अध्यक्ष सुनीता सेठी एवं यूथ विंग के अध्यक्ष विमल जैन को उनकी कार्यकारिणी सहित शपथ दिलाई गई।

समारोह में भीलवाड़ा, ब्यावर, किशनगढ़, अजमेर, विजयनगर, गुलाबपुरा, जयपुर के 200 से अधिक सदस्यों एवं पदाधिकारियों ने भाग लिया। समारोह के मुख्य अतिथि समाजसेवी पारसमल रांका ने कहा कि किसी भी संस्था की कामयाबी उसके श्रेष्ठ कार्यों एवं उपलब्धियों से होती है। जीतो ने अपने अल्प कार्यकाल में यह हासिल कर अपना स्थान बना कर सफलता प्राप्त की है। जीतो अपेक्स से पधारे महावीर चौधरी, नितिन जैन, राजजी गोलेछा, यशवंत रांका ने भी अपने विचार रखे। चीफ सेक्रेटरी निर्मल कोठारी ने सभी का आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर अनिता रांका, अशोक जैन, अलका दूधेडिया, धर्मीचंद रांका, सुनील सेठी सहित अन्य गणमान्य लोग उपस्थित थे।

राजस्थान सरकार

कार्यालय–खण्ड मुख्य चिकित्सा अधिकारी मेड़तासिटी (नागौर)

E mail: bcmo.merta@yahoo.com PH: 01590-231488

क्रमांकः लेखा/चिकि/2024/491 दिनांक- 24-12-2024

शुद्धीपत्र

इस कार्यालय की विज्ञप्ति क्रमांकः लेखा/चिकि/2024/487 दिनांक 23.12.2024 में निम्नानुसार संशोधन किया जाता है–

1. क्र.स. 1 में अनुमानित राशि 25 लाख स्थान पर 9,90,000 पढ़ा जावे।
2. क्र.स. 1 से 6 तक में निविदा विक्रय तिथि दिनांक 25.12.2024 से 31.12.2024 पढ़ा जावे। शेष यथावत।

Tender NIB Code- MHS2425A3039

(डॉ0 रविन्द्र कुमार तँवर)
खण्ड मुख्य चिकित्सा अधिकारी
मेड़तासिटी (नागौर)

कार्यालय पंचायत समिति हुरडा जिला भीलवाडा

क्रमांक– पसहु/लेखा/2024/1428 दिनांक–

निविदा सूचना (281242540863)

पंचायत समिति हुरड़ा के अधिनस्थ निम्नानुसार ग्राम पंचायतों में अवस्थित ग्रामों में वित्तिय वर्ष 2024 25 हेतु घर एवं व्यावसायिक प्रतिष्ठानों से कचरा संग्रहण एवं पृथक्ककरण, गावों की सड़क एवं नाली सफाई कार्य तथा सामुदायिक स्वच्छता परिसर की सफाई कार्य की सेवाओं हेतु इच्छुक जीएसटी पंजीकृत निविदाताओं/फर्मों से निविदायें आमंत्रित की जाती है। निविदायें सम्बन्धित ग्राम पंचायत द्वारा दिनांक 27.12.2024 को प्रातः 11 बजे तक विक्रय कर दिनांक 27.122024 को दोपहर 100 बजे तक प्राप्त की जाकर उसी दिन को बाद दोपहर 3.00 बजे सम्बन्धित ग्राम पंचायत उपापन समिति द्वारा खोली जायेगी। निविदा से सम्बन्धित जानकारी एवं शर्तें सम्बन्धित ग्राम पंचायत कार्यालय/ पंचायत समिति एवं Sppp rajasthan govin पर देखी भी जा सकती है।

क्र.सं.	ग्राम पंचायत	UBN Number	अनुमानित लागत	प्रतिभूति राशि
1	सरेरी	ZBL2425WSRC02057	357467.00	7150
2	खेजड़ी	ZBL2425WSRC02054	398197.00	7964
3	कोटडी	ZBL2425WSRC02055	248225.00	4965
4	बराठियों	ZBL2425WSRC02045	383979.00	7680
5	भोजरास	ZBL2425WSRC02060	510321.00	10206
6	सोडार	ZBL2425WSRC02048	277053.00	5542
7	दांतड़ा	ZBL2425WSRC02049	212229.00	4244
8	टोकरवाड़	ZBL2425WSRC02047	217986.00	4360
9	लाम्बा	ZBL2425WSRC02038	335952.00	6720
10	उखलियाँ	ZBL2425WSRC02043	277053.00	5542
11	टाचा	ZBL2425WSRC02044	357141.00	7142
12	कंवलियास	ZBL2425WSRC02056	462294.00	9246
13	तस्वारियाँ	ZBL2425WSRC02039	228165.00	4563
14	कानियाँ	ZBL2425WSRC02058	160548.00	3210
15	रूपाहेली	ZBL2425WSRC02042	288370.00	5768
16	बड़ला	ZBL2425WSRC02041	324001.00	6480
17	गागेड़ा	ZBL2425WSRC02052	392751.00.00	7856
18	जालखेड़ा	ZBL2425WSRC02051	327006.00	6540
19	गढ़ का खेड़ा	ZBL2425WSRC02040	314172.00	6284
20	फलामादा	ZBL2425WSRC02046	413613.00	8272
21	अण्टाली	ZBL2425WSRC02050	284265.00	5686
22	हुरड़ा	ZBL2425WSRC02059	646544.00	12930
23	जालमपुरा	ZBL2425WSRC02053	160902.00	3218

मधुसूदन रतनू (ARDS)
विकास अधिकारी
पंचायत समिति हुरडा

बस से अवैध चंदन की लकड़ी ले जाते जयपुर निवासी एक व्यक्ति गिरफ्तार

प्लास्टिक के कट्टों से 125 किलो 640 ग्राम चंदन की लकड़ी बरामद हुई

- कोई लाईसेंस या अनुज्ञा पत्र नहीं देने पर चंदन की लकड़ी के कट्टों को जप्त किया
- आरोपी से चन्दन की लकड़ी के संबंध में पूछताछ की जा रही है

कोटा, (निसं)। रानपुर पुलिस टीम ने नाकाबंदी के दौरान एक स्लीपर बस से अवैध चंदन की लकड़ी ले जाते हुए एक व्यक्ति को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने पकड़े गये आरोपी के कब्जे से तीन प्लास्टिक के सफेद कट्टों मे 125 किलो 640 ग्राम चंदन की लकड़ी बरामद की है।

शहर पुलिस अधीक्षक अमृता दुहन ने बताया कि अवैध गतिविधियों के संबध में पुलिस उपअधीक्षक मनीष शर्मा के सुपरविजन एवं रानपुर थाने के पुलिस निरिक्षक थानाधिकारी मांगेलाल के नेतृत्व में टीम का गठन किया गया। टीम ने नाकाबंदी के दौरान कार्रवाई करते हुए जयपुर निवासी अब्दुल हमीद को गिरफ्तार किया है। शहर पुलिस अधीक्षक अमृता दुहन ने बताया कि रानपुर थाने के उप निरिक्षक भीमसिंह मय जाप्ता कोटा-झालावाड़ हाईवे पर नाकाबंदी कर झालावाड़ से कोटा की ओर आने वाले वाहनों की चैकिंग कर रहे थे। शहर एसपी ने बताया कि उसी दौरान एक स्लीपर बस को चैकिंग के लिये रूकवाया गया। बस की डिग्गी में रखे सामानों की चैकिंग के दौरान डिग्गी में प्लास्टिक के तीन सफेद कट्टे मिले। प्लास्टिक के कट्टे के बारे में पूछताछ की तो कट्टे अब्दुल हमीद ने अपने होने बताये। प्लाास्टिक के कट्टे संदिग्ध लगने पर खोलकर चैक किया तो कट्टों से अवैध वन सम्पदा चंदन की कटी हुई गीली लकड़ी मिली। पुलिस ने जब कट्टों का वजन किया तो तीनों कट्टों का कुल वजन 125 किलो 640 ग्राम मिला।

शहर एसपी ने बताया कि अवैध चंदन की लकड़ी बरामद होने पर अब्दुल हमीद से लकड़ी परिवहन व रखने के लिये लाईसेंस मांगा गया, लेकिन व्यक्ति द्वारा कोई लाईसेंस या अनुज्ञा-पत्र नही देने पर लकड़ी के कट्टों को जप्त कर उत्तरप्रदेश के कन्नौज हाल जयपुर निवासी अब्दुल हमीद (51) को गिरफ्तार कर लिया। आरोपी से चन्दन की लकड़ी के संबंध मे पूछताछ की जा रही है।

पुलिस ने अवैध चंदन की लकड़ी सहित आरोपी को गिरफ्तार किया।

बी.एस.एफ. ने बॉर्डर पर पाक घुसपैठिया को मार गिराया

पाक घुसपैठिया भारतीय सीमा में आने का प्रयास कर रहा था

- घुसपैठिये के पास कुछ पाकिस्तानी मुद्रा, सिगरेट का पैकेट और कुछ अन्य सामान मिला
- घुसपैठिये के पास से एक आईडी कार्ड मिला है, जिस पर उर्दू में कुछ लिखा हुआ है

श्रीगंगानगर, (निसं)। श्रीगंगानगर जिले के भारत-पाकिस्तान बॉर्डर पर घुसपैठिए को बॉर्डर सिक्योरिटी फोर्स (बीएसएफ) ने मार गिराया। देर रात साढ़े बारह बजे पाकिस्तानी घुसपैठिया भारतीय सीमा में घुसने का प्रयास कर रहा था। एसपी गौरव यादव ने बताया कि केसरीसिंहपुर इलाके के एक एक्स गांव के पास यह घटना हुई है। घुसपैठिया भारतीय सीमा में पिलर की तरफ आने का प्रयास कर रहा था।

इसी दौरान बीएसएफ जवानों ने उसे सचेत किया। फिर भी वह नहीं माना। इसके बाद जवानों ने उसे ढेर कर दिया। उसके पास कुछ पाकिस्तानी मुद्रा, सिगरेट का पैकेट और कुछ अन्य सामान मिला है। सेना और पुलिस जानकारी जुटाने में लगी है। बॉर्डर पर मारे गए घुसपैठिए के बारे में जानकारी जुटाई जा रही है। सेना और पुलिस के अफसरों के बीच लगातार बातचीत हो रही है। घुसपैठिए के पास से एक आईडी कार्ड मिला है, जिस पर उर्दू में कुछ लिखा है।

एसपी गौरव यादव ने बताया कि घटनास्थल श्रीगंगानगर जिला मुख्यालय से करीब 50 किलोमीटर दूर है। ग्रामीण इलाके में कोहरे के कारण सुबह पुलिस नहीं पहुंच पाई थी। घुसपैठिए ने कुर्ता और पायजामा पहना था। उसका चेहरा ढका हुआ था। बीएसएफ अधिकारियों का कहना है कि पोस्टमॉर्टम होने के बाद ही आगे की कार्रवाई की जाएगी। केसरीसिंहपुर एसएचओ जितेंद्र स्वामी ने बताया कि पुलिस घटनास्थल पर बुधवार दोपहर करीब 12 बजे तक पहुंच पाई थी। घटनास्थल पर घुसपैठिए के पास क्या मिला है और वह किस उद्देश्य से इस तरफ आया था, इस बारे में किसी भी जानकारी का अभी खुलासा नहीं कर पाएंगे।

श्रीगंगानगर में 10 महीने पहले भी एक घुसपैठिया मारा गया था। वह रात एक बजे पाकिस्तान सीमा से तार फेंसिंग लांघकर भारतीय सीमा में घुसने की कोशिश कर रहा था। सुरक्षा बलों को हलचल दिखी तो उन्होंने पहले घुसपैठिए को चेतावनी दी, नहीं रुका तो उसे मार गिराया था। इस साल अगस्त में बाड़मेर में भी एक घुसपैठिए को बीएसएफ ने पकड़ा था। बाड़मेर से लगती भारतीय सीमा में तारबंदी पार कर घुसपैठिया बॉर्डर से 15 किलोमीटर अंदर सेड़वा के झड़पा गांव तक पहुंच गया था। ग्रामीणों की सूचना पर बीएसएफ और पुलिस की टीम ने संयुक्त कार्रवाई की थी। घुसपैठिए का नाम जग्सी कोहली था। वह हाकली खारोड़ा, थारपारकर, पाकिस्तान का रहने वाला था। थारपारकर जाने के लिए लोगों से बस के बारे में पूछ रहा था।

मुख्य रोकड़िए ने 1.14 करोड़ का गबन किया

- मावली विद्युत विभाग के मुख्य रोकड़िये धर्मवीर चौधरी ने निगम की राशि का गबन किया

उदयपुर, (कासं)। मावली विद्युत विभाग में कार्यरत मुख्य रोकड़िए ने विभाग में जमा होने वाली 1 करोड़ 14 लाख रूपए की राशि का फर्जी इन्द्राज कर गबन कर लिया।

विद्युत विभाग में कार्यरत सहायक अभियंता ब्रजेन्द्र सिंह पुत्र जगदीश सिंह निवासी नंदन रेलिटक्सी न्यू नवरतन काम्पेलक्स देवरो की मंगरी भुवाणा ने रिपोर्ट दी कि मुझ प्रार्थी ने 21 दिसम्बर को एक शिकायत मावली थाने में दर्ज करवाई थी।

शिकायत करने के पश्चात हमारे विभाग के लेखाधिकारी एवं सहायक लेखाधकारी एवं उनकी टीम ने मुख्य रोकडिया के पद पर कार्यरत धरमवीर चौधरी पुत्र नारायण लाल चौधरी निवासी गायत्री नगर मावली द्वारा निगम की गबन की गई राशि का प्रारम्भिक स्तर पर आंकलन किया जिसकी अनुमानित राशि लगभग 1 करोड 14 लाख 82 हजार रूपए हैं। निगम की इतनी बड़ी राजस्व राशि बिना निगम की जानकारी के धरमवीर चौधरी द्वारा गबन कर दिए जाने से विभाग को भारी आर्थिक नुकसान हुआ हैं। कर्मचारी धरमवीर चौधरी द्वारा राशी के गबन करने के लिए तथा विभाग के साथ धोखाधडी करने के लिए केश बुक में राशि जमा होने की फर्जी इन्द्राज कर दस्तावेजों की कूटरचना की है।

साथ ही निगम काउंटर पर संग्रहित होने वाली रोकड राशि को भी निगम के बैंक खाते में जमा नहीं करवाया है। निगम के कर्मचारी धरमवीर चौधरी मुख्य रोकडिया द्वारा विभाग के गबन की गई राशि का पता 19 दिसम्बर को चला, जिस पर प्रारम्भिक जांच कर 21 दिसम्बर को परिवाद दर्ज करवाया तथा गबन की प्रारंभिक जांच के आधार पर अनुमानित राशि 1 करोड़ 14 लाख 82 हजार रूपए के गबन करने के लिए रिपोर्ट दी। रिपोर्ट पर मावली थाना पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

कुएं में डूबने से किसान की मौत

डूंगरपुर, (निसं)। वरदा थाना क्षेत्र के मांडव गांव में एक किसान कुएं में गिर गया। किसान की कुएं में डूबने से मौत हो गई। पैर फिसलने से हादसा हुआ। पुलिस ने पोस्टमार्टम के बाद शव परिजनों को सौंप दिया है। पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

- किसान कुएं पर पानी पीने गया था, पैर फिसलने से गिरा

वरदा पुलिस के अनुसार मांडव निवासी किसान मोगजी पुत्र अमरजी पाटीदार गांव में बस स्टैंड के पास ग्रामीणों के साथ बैठा था। प्यास लगने पर कुएं की ओर गया, जहां पैर फिसलने से वह कुएं में गिरा और डूब गया। आवाज सुनकर पास ही मौजूद ग्रामीण भी कुएं पर पहुंचे, लेकिन कोई दिखाई नहीं दिया। ग्रामीणों ने काफी मशक्कत के बाद मोगजी को बाहर निकाला और सागवाड़ा अस्पताल लेकर गए, जहां डॉक्टरों ने जांच के बाद उसे मृत घोषित कर दिया। सूचना पर वरदा थाने से एएसआई मानसिंह भी पहुंचे और शव का पोस्टमार्टम करवाकर परिजनों को सौंप दिया।

घर में सो रहे परिवार पर हमला करने के पांच आरोपी गिरफ्तार

मंदिर के पास कचरा डालने की बात को लेकर विवाद हुआ था

खेतड़ी, (निसं)। पचेरीकलां पुलिस ने देर शाम को थाना क्षेत्र के गूंति गांव में एक माह पहले घर में सो रहे परिवार पर जानलेवा हमला करने के पांच आरोपियों को गिरफ्तार किया है। जानकारी के अनुसार इस दौरान आपस में मारपीट में दो महिलाओं सहित चार जने घायल हो गए थे, जिस पर पीड़ित की ओर से थाने में 11 जनों के खिलाफ जानलेवा हमला करने का मामला दर्ज करवाया गया था। मंदिर के पास कचरा डालने की बात को लेकर विवाद हुआ था।

थानाधिकारी राजपाल सिंह यादव ने बताया कि 9 नवंबर को गूंति निवासी सोनू पुत्र भूपसिंह ने रिपोर्ट दी कि उसके पास शिशपाल के नंबर से फोन आया तथा उसे घर पर होने की जानकारी ली गई। इसके बाद उदयभान, नीरज, बिजेंद्र, जोगेंद्र, लोकेश, संदीप, सुरेश, धर्मेंद्र, विजेंद्र व रामकरण गाड़ी व बाइक पर सवार होकर उसके घर आए तथा घर में घुसकर उसके साथ बेरहमी से मारपीट करने लगे। शोर शराबा होने पर परिवार के अन्य लोग बीच-बचाव करने आए तो उन्होंने विकलांग पिता व माता के साथ मारपीट की। इस दौरान आरोपियों ने उसकी माता की लज्जा भंग करने का प्रयास किया। मारपीट के दौरान गांव के अन्य लोग भी एकत्रित हुए तो वह गाड़ियों में बैठकर फरार हो गए थे। थाने में मामला दर्ज होने के बाद एसपी शरद चौधरी ने मामले को गंभीरता से लेते हुए एक विशेष टीम का गठन कर आरोपियों को गिरफ्तार करने के निर्देश दिए। पुलिस की टीम आरोपियों के संभावित ठिकानों पर दबिश दे रही थी कि पुलिस को सूचना मिली कि जानलेवा हमला करने के आरोपी अपने गांव आए हुए हैं, जिस पर पुलिस की टीम ने दबिश देकर विजेंद्र, जोगेंद्र पुत्र जगदेव, सुरेश पुत्र धर्मपाल, लोकेश पुत्र सुरेंद्र, शिशपाल पुत्र कंवर सिंह को गिरफ्तार कर लिया। थानाधिकारी ने बताया कि गिरफ्तार आरोपियों से गहनता से पूछताछ की जा रही है तथा वारदात में शामिल अन्य आरोपियों के बारे में जानकारी जुटाई जा रही है। इस दौरान टीम में थानाधिकारी राजपाल सिंह यादव, एएसआई नरेश कुमार, कांस्टेबल विजय सिंह, रामसिंह आदि शामिल थे।

परिवार पर जानलेवा हमला करने के आरोपियों को पुलिस ने गिरफ्तार किया।

अटलजी के स्थापित मानक सदैव प्रेरक रहेंगे : शेखावत

पूर्व प्रधानमंत्री की 100वीं जयंती पर केंद्रीय मंत्री शेखावत ने अटलजी को याद किया

जोधपुर, (कासं)। केंद्रीय संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत ने पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी को उनकी 100वीं जयंती पर याद किया। शेखावत ने कहा कि अटलजी ने भारत की राजनीति में सुचिता, पवित्रता, ईमानदारी और देश के प्रति नीति-निर्धारण में प्राथमिकता को राजनीति से ऊपर रखा, उनके स्थापित मानक सदैव प्रेरक रहेंगे।

बुधवार को गृह जोधपुर पहुंचे शेखावत ने एयरपोर्ट और जोधपुर भाजपा कार्यालय में मीडिया से बातचीत में कहा कि अटलजी ने कहा था कि हार नहीं मानूंगा, रार नई ठानूंगा...उनका यह संकल्प आज भी सिद्ध हो रहा है। भाजपा दुनिया का सबसे बड़ा राजनीतिक दल है। तीन बार लगातार बहुमत के साथ में देश में सरकार चलाने वाली पार्टी है। अटलजी ने गठबंधन की सरकारों के जो मूल्य स्थापित किए थे, वो आज सब हम सबके समक्ष हैं। आज उनका स्थापित किया पौधा वट वृक्ष का रूप धारण कर चुका है। देश के दो-तिहाई हिस्से में उनकी स्थापित की हुई पार्टी की प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से सरकार है, जो देश के परिवर्तन और विकसित भारत के लिए काम कर रही है।

शेखावत ने कहा कि अटलजी की कविताओं में राजनीति ढूंढना और राजनीति में कविता ढूंढना, इसके सफल-असफल प्रयास आज तक लोग कर रहे हैं। अटलजी को तीन बार प्रधानमंत्री बनने का अवसर मिला और तीनों बार उन्होंने गुड गवर्नेंस को प्राथमिकता दी। देश के विकास की एक दीर्घकालीन सोच के साथ आगे बढ़े। गांव को सड़कों से जोड़ना हो या रोड इंफ्रास्ट्रक्चर का डेवलपमेंट, दोनों विषयों के अतिरिक्त समाज के सर्वहारा वर्ग के जीवन में परिवर्तन लाने का कार्य किया। आज नरेंद्र मोदी जी अटलजी की नीतियों को आगे बढ़ाने का काम कर रहे हैं। उसका परिणाम हम सबको दिखाई देता है।

- 'अटलजी ने गठबंधन की सरकारों के जो मूल्य स्थापित किए थे, वो आज सब हम सबके समक्ष हैं'

केंद्रीय मंत्री ने कहा कि सुशासन वाली नीतियों पर चलने वाली सरकार के चलते आज देश में 25 करोड़ से ज्यादा लोग गरीबी रेखा से बाहर आए हैं। देश के करोड़ों लोग, जो वर्षों और दशकों से मूलभूत आवश्यकताओं से दूर थे, वो आज विकसित भारत के संकल्प के साथ काम कर रहे हैं।

केन्द्रीय संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री गजेन्द्र सिंह शेखावत ने जोधपुर एयरपोर्ट पर कार्यकर्ताओं से मुलाकात की। इसके बाद केन्द्रीय मंत्री ने विविध कार्यक्रमों में शिरकत की। पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी की जयंती पर जोधपुर भाजपा कार्यालय में पुष्पांजलि कार्यक्रम में शामिल हुए। केन्द्रीय मंत्री ने अटलजी को श्रद्धासुमन अर्पित किए और कार्यकर्ताओं से उनके बताए प्रेरक मार्ग पर चलने का आव्हान किया। इस दौरान भाजपा जोधपुर शहर जिला अध्यक्ष देवेन्द्र सालेचा, सूरसागर विधायक देवेन्द्र जोशी सहित अनेक जिला पदाधिकारी मण्डल मोर्चा अध्यक्ष, जनप्रतिनिधि कार्यकर्ता मौजूद रहे।

शोक सभाओं में शामिल हुए :- जोधपुर प्रवास के दौरान केन्द्रीय मंत्री शेखावत अनेक शोक सभाओं में भी शामिल हुए। दिव्यांग विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. कुसुमलता भंडारी के निधन उनके निवास जाकर शोक संवेदना जताई। भाजपा युवा मोर्चा के पूर्व अध्यक्ष घनश्याम वैष्णव की माताजी गीता देवी के निधन पर आयोजित शोकसभा में शामिल हुए। इसके अलावा अन्य कई शोक सभाओं में शामिल हुए। केन्द्रीय मंत्री शेखावत इसके बाद बालोतरा के कल्याणपुर गए और कल्याणपुर प्रदान वरिष्ठ समाजसेवी उम्मेद सिंह अराबा के निधन पर आयोजित शोकसभा में शामिल हुए। केन्द्रीय मंत्री ने अराबा को श्रद्धांजलि अर्पित की।

लाखों का मादक पदार्थ जब्त, तीन गिरफ्तार

उदयपुर, (कासं)। जिले की सुखेर थाना पुलिस ने बुधवार को अवैध मादक पदार्थ तस्करी के विरूद्ध कार्रवाई करते हुए लाखों रूपये का मादक पदार्थ एमडीएमए जब्त कर तीन अभियुक्तों को गिरफ्तार किया है।

जिला पुलिस अधीक्षक, उदयपुर योगेश गोयल द्वारा अवैध मादक पदार्थों की तस्करी की रोकथाम एवं धरपकड़ हेतु दिशा-निर्देश दिये गये, जिस पर उमेश ओझा, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक, शहर व कैलाशचन्द्र, पुलिस उप अधीक्षक, वृत नगर पश्चिम के सुपरविजन में हिमांशु सिंह थानाधिकारी, सुखेर के नेतृत्व में गठित टीम ने गश्त के दौरान भैरवगढ़, 200 फीट रोड पर पहुंचे। जहां पर तीन युवा उम्र के लड़के पुलिस टीम को देखकर भागने लगे। जिस पर टीम द्वारा तीनों को रोककर भागने का कारण पूछा तो तीनों युवक घबराने लगे। उक्त तीनों युवकों की गतिविधियां संदिग्ध होने से नाम पता पूछा तो अपना नाम आदिल पिता मोहम्मद अशफाक छीपा निवासी देहली गेट, चित्तौड़गढ़, समीर पिता महबूब छीपा निवासी पुरानी पुलिस चौकी के सामने, छीपा मोहल्ला आयड, भुपालपुरा व अब्बू फैजान पिता रसीद मोहम्मद निवासी कालका माता रोड, गणेश नगर पायड़ा, प्रतापनगर, उदयपुर बताया।

तीनों युवकों की तलाशी ली गई तो आदिल के कब्जे से 39.92 ग्राम एमडीएमए, समीर के कब्जे से 33.74 ग्राम तथा अब्बु फैजान के कब्जे से 30.05 ग्राम एमडीएमए मिली। जिस पर टीम द्वारा तीनों से कुल 103.71 ग्राम अवैध मादक पदार्थ एमडीएमए बरामद की गई। अभियुक्त आदिल, समीर व अब्बु फैजान को पूछताछ कर गिरफ्तार किया जाकर प्रकरण दर्ज किया।

अजमेर में कोहरे और ओस ने सर्दी बढ़ाई

अजमर में शीतलहर के कारण लोग अलाव तापते नजर आये।

अजमेर, (कासं)। पश्चिम विक्षोभ और पहाड़ों पर हुई बर्फबारी व प्रदेश के जिलों में हुई पहली मवाठ की बारिश के चलते मौसम ने करवट बदली है। मवाठ और ठंडी हवाओं के चलते घने कोहरे व तापमान में गिरावट के चलते शीतलहर ने लोगों को धूजणी छुड़ा दी है।

वर्ष 2024 के अंतिम सप्ताह में कड़ाके की ठंड ने अजमेरवासियों को भी कंपकंपा दिया है। बुधवार सुबह कोहरे ने अरावली की पहाड़ियों ढक लिया। जमीन पर गहरी ओस नजर आई। शहर की ऐतिहासिक आनासागर झील पर कोहरे की चादर छाई रही। सर्द हवाओं के चलते गलन और नमी के अहसास ऊनी कपड़ों के पहनने के बाद भी लोगों को होता रहा। शहर का न्यूनतम तापमान 3.8 और अधिकतम 20.0 डिग्री सेल्सियस रहा। बर्फीली हवा ने सुबह से ही कंपकंपाया।

पहाड़ियों और आसमान पर कोहरा मंडराता रहा। धूप निकलने के बाद भी सर्दी के तीखे अंदाज बने रहे, दिनभर सूरज की आंख मिचोली चलती रही। दोपहर बाद धूप में तेजी आई, लेकिन ठंडी हवाओं से ठिठुरन कायम रही। ठंड से बचाव के लिए लोग अल सुबह अलाव जलाकर राहत पाते देखे गए। बाजारों और सड़कों पर देर रात दिखने वाली रौनक भी जल्द सिमट गई।

बोरवेल में फंसी बालिका को बाहर नहीं निकाला जा सका

- बच्ची के दादा समेत अन्य परिजन व ग्रामीणों ने प्रशासन पर रेस्क्यू ऑपरेशन में लापरवाही बरते जाने के आरोप लगाये
- एनडीआरएफ, एसडीआरएफ, सिविल डिफेंस सहित स्थानीय पुलिस प्रशासन द्वारा किये गये तमाम प्रयासों को सफलता नहीं मिली

कोटपूतली, (निसं)। कोटपूतली के ग्राम किरतपुरा की ढाणी बडीयाली में सोमवार दोपहर करीब दो बजे बोरवेल में गिरी तीन वर्षिय मासूम बालिका चेतना पुत्री भूपेन्द्र चौधरी को बुधवार रात्रि आठ बजे तक घटना के लगभग 54 घण्टे का समय बीत गया। इसके बाद भी बोरवेल से बालिका को बाहर निकालने में एनडीआरएफ, एसडीआरएफ, सिविल डिफेंस सहित स्थानीय पुलिस प्रशासन द्वारा किये गये तमाम प्रयासों को अभी तक कोई सफलता नहीं मिली है।

इधर अब चेतना के माता-पिता सहित परिजनों का रो-रो कर बुरा हाल है, वहीं बच्ची के दादा हरसहाय चौधरी समेत अन्य परिजन व ग्रामीण प्रशासन पर रेस्क्यू ऑपरेशन में लापरवाही बरते जाने का आरोप भी लगा रहे हैं। दादा हरसहाय चौधरी ने प्रशासन पर गंभीर लापरवाही का आरोप लगाया है। उन्होंने कहा कि पहले मिट्टी हटाने की बात कही गई। फिर 28 घण्टे बाद मशीन से गड्ढा खोदने का फैसला किया गया। प्रशासन समय से निर्णय नहीं ले पा रहा है। ग्रामीणों में इस बात का आक्रोश था कि इतनी बड़ी घटना हो जाने के बावजूद भी जिला कलेक्टर कल्पना अग्रवाल मौके पर क्यों नहीं पहुंची है। हालांकि जयपुर ग्रामीण सांसद राव राजेन्द्र सिंह व विधायक हंसराज पटेल की मॉनीटरिंग में पुलिस प्रशासन के अधिकारी निरन्तर मौके पर मौजूद रहकर व्यवस्थाओं को संभाल रहे हैं। घटना के बाद से ही एडीएम ओमप्रकाश सहारण, एसडीएम बृजेश चौधरी, एसपी राजन दुष्यंत, एएसपी वैभव शर्मा, नगरपरिषद आयुक्त धर्मपाल जाट सहित पुलिस प्रशासन के आला अधिकारी मौके पर मौजूद है। एसडीएम बृजेश चौधरी ने बताया कि दोनों ऑपरेशन जारी है। बुधवार सुबह रोशनी की कमी के कारण ऑपरेशन के संचालन में परेशानी का सामना करना पड़ा। विराटनगर के पूर्व विधायक इन्द्राज गुर्जर ने भी बुधवार शाम मौके पर पहुंच कर घटनाक्रम की जानकारी ली।

बोरवेल में फंसी बालिका को निकालने के लिए एनडीआरएफ व एसडीआरएफ की टीमें लगी हुई है।

जानकारी के अनुसार चेतना करीब 750 फीट गहरे बोरवेल में करीब 120 फीट पर अटकी हुई है। प्रशासन द्वारा प्लान ए के तहत देशी जुगाड़ से बच्ची को निकालने के लिए किये जा रहे प्रयास विफल रहने के बाद प्लान बी के तहत हरियाणा के मानेसर से पाईलिंग मशीन मंगवाई गई जो कि मंगलवार व बुधवार की मध्य रात्रि को मौके पर पहुंची। पाईलिंग मशीन के लिये 20 फीट लम्बाई व चौड़ाई के साथ 25 फीट गहरा एक गड्ढा बोरवेल से करीब 20 फीट दूरी पर खोदकर पाईलिंग प्लेटफॉर्म तैयार किया गया। जिसके बाद मशीन के द्वारा बुधवार सुबह आठ बजे खुदाई शुरू कर करीब 40 फीट खुदाई करने के बाद ही मिट्टी के धंसने के कारण ऑपरेशन को रोक दिया गया था। बताया जा रहा है कि पाईलिंग मशीन द्वारा 110 फीट गहरी खुदाई की जायेगी। गड्ढे में मिट्टी ना ढहे इसके लिये खेतड़ी से केसिंग व दूदू से पाइप मंगवाये गये हैं। जिसके साथ गड्ढा खोदा जायेगा। इसी के चलते गड्ढा खोदने का कार्य बुधवार को दिन में करीब साढ़े चार घण्टे तक रूका रहा। जिसके बाद शाम करीब 05.45 बजे फिर से काम शुरू किया गया। पाईलिंग मशीन के साथ ड्रिल के लिये चार फीट व्यास का बिट लगाया गया है। एनडीआरएफ निरीक्षक योगेश मीणा ने बताया कि 20 फीट की दूरी पर 150 फीट गहरी समानान्तर सुरंग खोदी जायेगी। जिसके बाद एक छोटी टनल बनाकर बच्ची तक पहुंचेंगे। शुरूआत में बच्ची को 155 फीट की गहराई पर देखा गया था। इसलिये सुरंग के जरिये हम 160 फीट की गहराई पर जायेंगे।

बच्ची हमारे ऊपर हो इससे हम नीचे से बोरवेल में बच्ची तक सबसे सुरक्षित तरीके से पहुंच सकेंगे। फिलहाल जी शेप हुक के जरिये बच्ची को बोरवेल में अटकाया हुआ है। वहीं दूसरी ओर प्लान ए के तहत देशी तकनीक से एल बैंड लगाकर भी चेतना को बाहर खींचने के प्रयास विफल होने के बाद अम्ब्रेला बेस व जी शेप हुक लगाकर बाहर निकालने के प्रयास किये जा रहे है। हालांकि मंगलवार अल-सुबह से ही बालिका की कोई मुवमेंट दिखाई नहीं दे रहा है। वहीं दूसरी ओर बुधवार शाम करीब छह बजे हरियाणा से 200 फीट क्षमता की एक अतिरिक्त पाईलिंग मशीन भी मौके पर पहुंची है, जिसके लिये गुजरात से ऑपरेटर आये हैं।

मीरां बाईसा पर आपत्तिजनक बयान देने पर राजपूत समाज में आक्रोश

जयपुर। युवा शक्ति संयोजन के मुख्य ध्वजवाहक शक्ति सिंह बांदीकुई ने आज कानून मंत्री और बीकानेर सांसद अर्जुनराम मेघवाल के भक्त शिरोमणि मीरां बाईसा पर दिए गए आपत्तिजनक और गलत बयानों के खिलाफ कड़ी प्रतिक्रिया व्यक्त की है।

बांदीकुई ने कहा, ''इतिहास पर हमले दर हमले हो रहे हैं, और अब तो सरकार के कानून मंत्री तक हमारे आदर्शों और परंपराओं पर भद्दे बयान देने से नहीं चूक रहे। मंत्री द्वारा मीरां बाईसा के जीवन और हमारे गौरवशाली इतिहास के बारे में किए गए मनगढ़ंत दावों ने न केवल क्षत्रिय समाज, बल्कि समस्त सनातनी समाज की भावनाओं को आहत किया है।''

उन्होंने स्पष्ट किया कि मंत्री का यह कहना कि मीरां बाईसा के पति कुंवर भोजराज की मृत्यु खानवा युद्ध में हुई थी, ऐतिहासिक रूप से पूरी तरह से गलत है। ''भोजराज खानवा के युद्ध से छह वर्ष पहले ही स्वर्ग सिधार चुके थे। इसके अलावा, मंत्री मेघवाल का यह दावा कि विवाह के एक साल बाद भोजराज की मृत्यु हो गई थी, भी गलत है। भोजराज का निधन विवाह के सात वर्ष बाद हुआ था, और उनके अंतिम समय में मां मीरा ने स्वयं उन्हें अपनी गोद में लेकर अपने पद पधारो श्रीजी संग सरकार, खुले है मन मंदिर के द्वार, तुम्हारी दासी करे इंतजार, पधारो श्रीजी संग सरकार..... का गायन किया था।''

> ■ माफ़ी मांगे कानून मंत्री अर्जुनराम मेघवाल, अन्यथा देशव्यापी आंदोलन होगा

शक्ति सिंह बांदीकुई ने मंत्री के इस बयान को और भी आपत्तिजनक बताया जिसमें उन्होंने कहा कि मीरां बाईसा का देवर उनसे विवाह करना चाहता था। ''यह बयान हमारी क्षत्रिय परंपरा और समाज की गरिमा पर गंभीर आघात है। क्षत्रिय समाज में देवर और भाभी के रिश्ते को पवित्रता और मां-पुत्र समान माना जाता है। इस तरह के निराधार बयान न केवल हमारे समाज के आदर्शों का अपमान करते हैं, बल्कि इतिहास के साथ भी छेड़छाड़ करते हैं।''

शक्ति सिंह बांदीकुई ने मांग की कि अर्जुनराम मेघवाल समस्त राजस्थान और क्षत्रिय समाज से सार्वजनिक रूप से माफी मांगें। साथ ही, उन्होंने कहा कि मंत्री को मीरां बाईसा के मेड़ता स्थित मंदिर में जाकर नाक रगड़कर दण्डवत माफी मांगनी चाहिए।

उन्होंने चेतावनी दी कि यदि मंत्री मेघवाल माफी नहीं मांगते, तो समूचे देश के मीरा भक्त उनसे जवाब मांगेंगे। ''मीरां बाईसा केवल क्षत्रिय समाज का नहीं, बल्कि पूरे भारत का गौरव हैं। उनके नाम और सतीत्व पर अनर्गल टिप्पणियां बर्दाश्त नहीं की जाएंगी।''

अंत में, शक्ति सिंह बांदीकुई ने नेताओं को आगाह करते हुए कहा, ''मीरां बाईसा को जाति और धर्म की सीमाओं में बांधने का प्रयास न करें। उनके गुरु संत रविदास ने जो संदेश दिया, वह समाज के हर वर्ग और हर धर्म को जोड़ने का था। ऐसे पवित्र व्यक्तित्व पर सस्ता ज्ञान बांटने की कोशिश न करें।''

मुख्यमंत्री ने स्व.अटल बिहारी को पुष्पांजलि अर्पित की

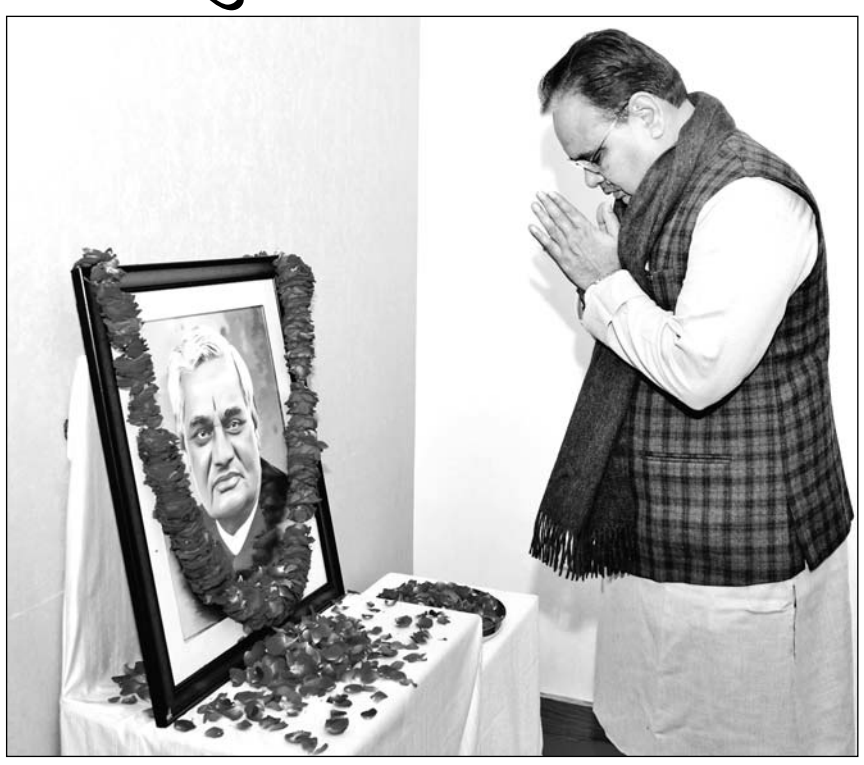

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने बुधवार को मुख्यमंत्री निवास पर पूर्व प्रधानमंत्री स्व. अटल बिहारी वाजपेयी की 100वीं जयंती पर पुष्पांजलि अर्पित की। शर्मा ने कहा कि भारत रत्न वाजपेयी भारतीय राजनीति के शिखर पुरुष थे। वे राजनीति में मर्यादा, धैर्य और सौम्यता के प्रतीक थे। उनका जीवन हम सभी के लिए प्रेरणा का अद्वितीय स्त्रोत है। उन्होंने कहा कि वाजपेयी द्वारा प्रारम्भ किए गए स्वर्णिम चतुर्भुज सड़क परियोजना, प्रधानमंत्री ग्रामीण सड़क योजना और सर्वशिक्षा अभियान जैसे जन-कल्याणकारी निर्णयों ने देश को नई दिशा दी। उनके नेतृत्व में मई 1998 में पोकरण में किए गए परीक्षण से भारत परमाणु शक्ति सम्पन्न राष्ट्र बना। मुख्यमंत्री ने कहा कि पारदर्शी और जबावदेह कार्यो के लिए प्रतिबद्धता प्रकट करने के लिए आज पूरा देश उनको नमन करते हुए सुशासन दिवस मना रहा है।

धूमधाम से मनाया क्रिसमस का त्यौहार

जयपुर। ईसाई धर्मावलंबियों ने बुधवार को क्रिसमस का त्यौंहार धूमधाम से मनाया गया। चर्च में प्रार्थना सभा की गई और बच्चों में चॉकलेट और टॉफियां बांटी गई। लोगों ने एक-दूसरे को केक खिलाकर खुशी का इजहार किया। मसीह समाज के लोगों ने अपने घरों में बने केक को एक-दूसरे घर भेजकर क्रिसमस की बधाई दी।

चर्च में सजी झांकियां लोगों के आकर्षण का केन्द्र रहीं। प्रभु यीशु से जुड़ी झाकियों को देख यहां लोग मंत्र मुग्ध हो गए। इसके साथ ही छोटी-छोटी झोपड़ी भी बनाई गई थीं और उस दौर के परिवेश को दिखाने की कोशिश की गई थी। रंग बिरंगी लाइटें लोगों को अपनी ओर आकर्षित कर रही थीं। गिरिजाघरों की रौनक देखते ही बन रही थी। रंगीन फरियों से सजे और रोशनी से जगमगाते चर्च में खास सजावट की गई। घर-घर क्रिसमस ट्री लगाए गए और क्रिसमस केक तैयार किए गए। मसीह समाज के श्रद्धालुओं ने प्रभु यीशु को याद कर एक- दूसरे को केक खिलाकर क्रिसमस की बधाई दी। गिरजाघरों में यीशु के जन्म को दर्शाती हुई झांकियां आकर्षण का केन्द्र रही। ईसाई धर्मगुरुओं ने विशेष प्रार्थना सभाओं में यीशु की शिक्षाओं को अपनाने पर जोर दिया। लोगों ने यीशु के सामने मोमबत्तियां जलाकर जीवन में प्रकाश की कामना की और खुशी को

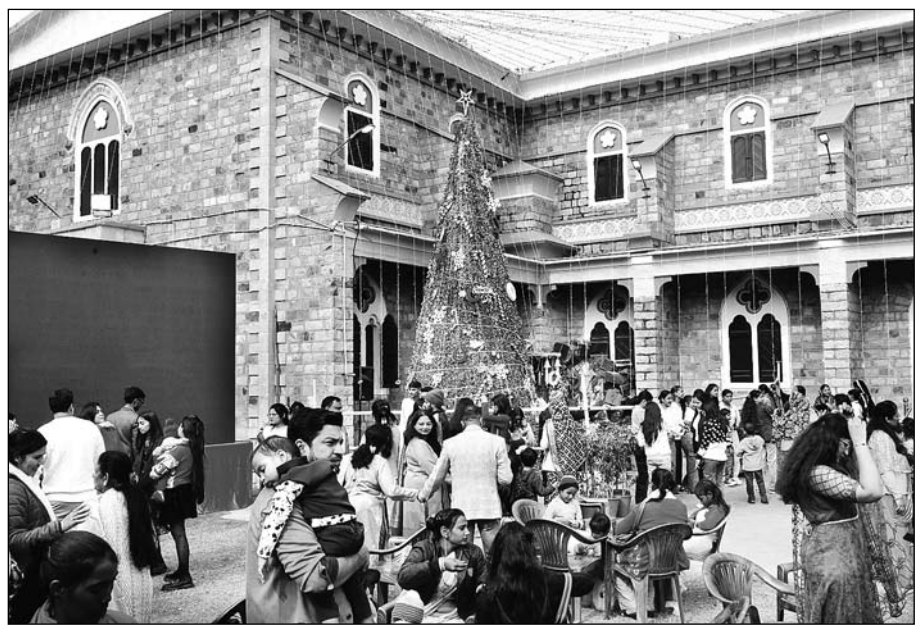

जयपुर में चांदपोल स्थित सेंट एंड्रयूज चर्च में ईसाई श्रद्धालुओं ने क्रिसमस ट्री बनाकर एक-दूसरे को बधाई दी।

घंटियां बजाकर व्यक्ति किया। खुशियां बांटने के लिए केक काटे गए। चर्च में छोटे बच्चे सांता बनकर पहुंचे। वहीं युवा लाल रंग की कैप लगाए हुए नजर आए। सांता ने बच्चों को चॉकलेट, टॉफी दी।

इसी प्रकार घाटगेट स्थित सेक्रेड हार्ट चर्च, चांदपोल स्थित सेंट एंड्रयूज चर्च, निर्मल पथ अजमेर रोड स्थित न्यू अपोस्टोलिक चर्च, सी स्कीम अशोक नगर के सेंट जेवियर्स चर्च, शिप्रा पथ मानसरोवर स्थित मार्थोमा चर्च, चर्च रोड गोपालबाड़ी स्थित ऑल सेंट्स चर्च, विद्याधरनगर स्थित पेंटेकोस्टल मिशन सोसाइटी चर्च, गुर्जर की थड़ी स्थित मोरग्रेगोरियोस जैकोबाइट सीरियन चर्च, अजमेर रोड स्थित न्यू लाइफ फेलोशिप चर्च, मरुधरनगर अजमेर रोड स्थित अगापे फेलोशिप चर्च सहित करीब तीस चर्चों में क्रिसमस का पर्व धूमधाम से मनाया गया।

कार ने बुजुर्ग महिला को टक्कर मारी

जयपुर। नगर निगम ग्रेटर कार्यालय के सामने डिवाइडर के पास खड़ी महिला को एक कार ने टक्कर मार दी। इससे उसकी मौत हो गई। मामले की जांच दुर्घटना थाना पूर्व पुलिस कर रही है। पुलिस के अनुसार विद्याधर नगर निवासी 71 वर्षीय प्रेमलता पत्नी बजरंग लाल किसी काम से नगर निगम के पास आई थी। 24 दिसम्बर को शाम करीब पांच बजे एक कार ने उसे टक्कर मार दी। इससे वह गंभीर रूप से घायल हो गई। कार चालक ने ही महिला को जयपुरिया अस्पताल में भर्ती करवाया।

मोटे मुनाफे का लालच देकर 2.30 लाख रु. ठगे

जयपुर। मुहाना इलाके में इन्वेस्ट करने पर मोटा मुनाफा कमाने का लालच देकर एक युवक से 2.30 लाख ठगने का मामला सामने आया है। पुलिस के अनुसार कृष्णा सरोवर कॉलोनी निवासी अरुण शर्मा ने मामला दर्ज करवाया कि उसके पास इंस्टाग्राम पर एक मैसेज आया। इसमें एक कंपनी में निवेश करने पर मोटा मुनाफे का झांसा दिया गया। इसके बाद उसके पास एक लिंक भेजा गया है। लिंक भेजने वाले ने उसके पास अपना मोबाइल नम्बर भी भेजा था।

इसके बाद पीड़ित ने निवेश करना चालू कर दिया। निवेश करने के बाद उसे शुरुआत में कुछ रुपए लाभांश के रूप में दिया गया। इस प्रकार उसने कई बार में 2.30 लाख रुपए का निवेश कर दिया। आरोपी ने उसे बाद में लाभांश देना बंद कर दिया। पीड़िता ने आरोपी से सम्पर्क किया तो टारगेट पूरा करने के लिए उसे और निवेश करने की बात कहीं। इस पर पीड़ित को ठगी का अहसास हुआ। इस पर पीड़ित ने पुलिस की शरण ली।

एकल पट्टा मामले में सचिवालय कर्मचारियों के खिलाफ मुकदमा दर्ज

जयपुर। राजस्थान के चर्चित एकल पट्टा मामले में अब एक नया मोड़ आ गया है। इस मामले से जुड़ी पत्रावली (फाइल) गुम होने के मामले में 9 साल पहले दर्ज हुई एफ.आई.आर. पर ही सवाल खड़े हो रहे हैं। अब उस पुरानी एफआईआर को लेकर अशोक नगर थाने में एक नई प्राथमिकी दर्ज हुई है, जिसमें कूटरचित (जाली) दस्तावेजों के आधार पर फाइल की गुमशुदगी थाने में दर्ज करवाने का आरोप सचिवालय के कर्मचारियों पर लगा है। फिलहाल अशोक नगर थाना पुलिस इस पूरे मामले को लेकर पड़ताल में जुटी है।

थानाधिकारी उमेश बेनीवाल ने बताया कि एकल पट्टा मामले की जांच कर रही समिति के सचिव रवि शर्मा ने मुकदमा दर्ज करवाया है कि शासन सचिवालय के कर्मचारियों ने कूटरचित दस्तावेजों के आधार पर एकल पट्टा प्रकरण की पत्रावली की गुमशुदगी 29 अगस्त 2013 को अशोक नगर थाने में दर्ज करवाई थी। ऐसे में सचिवालय के कर्मचारियों के खिलाफ यह नया मुकदमा दर्ज हुआ है, जिसकी जांच थानाधिकारी उमेश बेनीवाल कर रहे हैं।

> ■ आरोप है कि वर्ष 2013 में फर्जी दस्तावेजों से अशोक नगर थाने में एकल प्रट्टा प्रकरण की फाइल गुम होने की रिपोर्ट दर्ज करायी गई थी

गौरतलब है कि एकल पट्टा प्रकरण से जुड़ी फाइल गुम होने की रिपोर्ट 29 अगस्त 2013 को अशोक नगर थाने में दर्ज हुई थी। एकल पट्टा मामले की जांच कर रही समिति की पड़ताल में यह सामने आया कि उस समय कूटरचित दस्तावेजों के आधार पर फाइल गुम होने की रिपोर्ट अशोक नगर थाने में दर्ज करवाई गई थी। ऐसे में रिपोर्ट दर्ज करवाने वाले कर्मचारियों के खिलाफ अब आईपीसी की धारा 420, 465, 467, 468 और 120बी के तहत यह मुकदमा दर्ज हुआ है।

भाजपा आज मनाएगी ''वीर बाल दिवस''

जयपुर। भाजपा प्रदेश कार्यालय प्रभारी मुकेश पारीक ने बताया कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में 26 दिसंबर को देशभर में ''वीर बाल दिवस'' मनाया जाएगा। वीर बाल दिवस पर सिख गुरू गोविंद सिंह के पुत्र साहिबजादों बाबा जोरावर सिंह और बाबा फतेह सिंह की शहादत की स्मृति में प्रदेशभर में विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया जाएगा। भाजपा मुख्यालय पर साहिबजादों की शहादत की स्मृति में शब्द कीर्तन होंगे। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा और भाजपा प्रदेश अध्यक्ष मदन राठौड़ सुबह 11 बजे कार्यक्रम में सम्मलित होंगे।

उन्होंने बताया कि वीर बाल दिवस पर प्रदेश मुख्यालय के साथ प्रत्येक मंडल पर एक विशेष सभा का आयोजन कर साहिबजादों के बलिदान के बारे में युवाओं को बताया जाएगा। इसके साथ ही स्थानीय गुरूद्वारा में शब्द कीर्तन, मंडल एवं जिलों में प्रभात फेरी का भी आयोजन किया जाएगा। इस दौरान प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिताओं के साथ जिला स्तरीय बौद्धिक संगोष्ठी, स्कूल-कॉलेजों में विचार संगोष्ठी के साथ भाषण प्रतियोगिताओं का आयोजन भी किया जाएगा।

भाजपा कार्यालय प्रभारी मुकेश पारीक ने बताया कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में प्रदेशभर में सभी जिला मुख्यालयों पर वीर बाल दिवस मनाया जाएगा। इसके लिए भाजपा की ओर से प्रदेश स्तरीय समन्वय समिति का गठन किया गया है। समन्वय समिति में प्रणवेंद्र शर्मा को संयोजक, सह संयोजक सरदार अजयपाल सिंह, जितेंद्र मीणा, डॉ अशोक यादव, विक्रम सिंह शेखावत, डॉ चंद्रदीप हाडा को बनाया गया है।

जयपुर महानगर के विद्याधर जिला के शास्त्री नगर प्रखंड में शौर्य संचलन का कार्यक्रम आयोजन किया गया। जिसमें 300 से अधिक दुर्गावाहिनी की बहनों ने दंड धारण करके शौर्य संचलन में भाग लिया। कार्यक्रम में जयपुर क्षेत्र की क्षेत्रीय संयोजिका लता ने धर्म रक्षा का संदेश देते हुए आसुरी शक्तियों के खिलाफ जन जागरण और युवतियों को जोड़ने का आव्हान किया। मंच संचालन विद्याधर जिला सह संयोजिका चांदनी के द्वारा रहा एवं मंच पर प्रांत मंत्री राधेश्याम गौतम जिला अध्यक्ष संजय अग्रवाल उपस्थित रहे। जिले और प्रखंड से अन्य दायित्वन कार्यकर्ता भी आयोजन में उपस्थित रहे।

लूट-डकैती व हत्या के मामलों में लिप्त 24 बदमाश गिरफ्तार

जयपुर पुलिस ने ''ऑपरेशन हाईड आउट सर्च'' अभियान चलाया

जयपुर (कासं)। जयपुर पुलिस कमिश्नरेट की पुलिस जिला पुलिस ने ऑपरेशन हाईड आउट सर्च के तहत बुधवार को चौबीस मोस्ट वांटेड आरोपियों को गिरफ्तार किया है। इन बदमाशों पर डकैती,लूट और हत्या समेत कई मामले दर्ज थे और लंबे समय से फरार चल रहे थे। पुलिस इन आरोपियों को पकड़कर पूछताछ शुरू कर दी है।

पुलिस उपायुक्त जयपुर पश्चिम अमित कुमार ने बताया कि एक अक्टूबर से ऑपरेशन हाईड आउट सर्च चलाया जा रहा है। इस ऑपरेशन के तहत जिला और थाना स्तर पर अलग-अलग टीम बनाकर छापेमारी की गई थी। इस दौरान ऐसे आरोपियों का डाटा तैयार किया और जिनके खिलाफ से ज्यादा बार चालान पेश हो रखे थे। इसके साथ ही जो बार-बार अपराध कर रहे थे। टीम की ओर से अलग-अलग जगह पर छापेमारी कर इन चौबीस मोस्ट बदमाशों की गिरफ्तारी की है।

पुलिस उपायुक्त जयपुर पश्चिम अमित कुमार ने बताया कि झालावाड से तारा मीणा निवासी कालवाड,चौमू से मुकेश सैनी निवासी ब्रहमपुरी, विजय कुमार मीणा निवासी जयपुर, भांकरोटा से संजय चौधरी निवासी भरतपुर,चित्रकूट से अजीत चौधरी निवासी सदर जयपुर,बनीपार्क से रमेश कश्यप निवासी यूपी,प्रकाश कश्यप यूपी,करधनी से राहुल यादव निवासी झोटवाड़ा, मुरलीपुरा से दशरथ सिंह निवासी नागौर,अजय सिंह उर्फ दिलीप सिंह निवासी करधनी जयपुर,दौलतपुरा से राकेश यादव निवासी श्रीमाधोपुर ,झोटवाड़ा से नरेन्द्र सिंह निवासी दूदू जयपुर,चौमू से कैलाश नायक निवासी चौमू, करधनी विजय सिंह निवासी करधनी जयपुर,रामस्वरूप, राजेन्द्र कुमार स्वामी उर्फ गज्जू,मुरलीपुरा से विरेन्द्र यादव,चौमू से संतोष उर्फ संतु मीणा, सिंधी कैंप से साहिल मंसूरी उर्फ एलम,वैशाली नगर से नदां उर्फ नंदकिशोर राम नारायण उर्फ रूपा मीणा और बनीपार्क से हिमांशु जांगिड़ को गिरफ्तार किया है।

सांता क्लॉज के साथ झूमे बाल कैंसर रोगी

जयपुर (कासं)। भगवान महावीर कैंसर चिकित्सालय एवं अनुसंधान केन्द्र में बुधवार को बाल कैंसर रोगियों के लिए क्रिसमस डे सेलिब्रेशन का आयोजन किया गया। सेलिब्रेशन के दौरान जब लाल ड्रेस पहनकर सान्ताक्लॉज बच्चों के बीच आए तो सभी बच्चों के चेहरे पर ख़ुशी और उत्साह की लहर दौड़ गई। कैंसर केयर (महिला प्रकोष्ठ) और ड्रीम्ज़ फाउंडेशन के तहत आयोजित इस कार्यक्रम में बच्चों के लिए मनोरंजक गतिविधियां आयोजित की गई। समारोह की मुख्य अतिथि कैंसर केयर संरक्षिका सुनीता गहलोत ने कहा कि ये सभी बच्चे फाइटर है। इनमें कुछ बच्चे कैंसर की जंग जीत चुके है और कुछ की जंग अभी जारी है। हमें इन बच्चों से सीखना चाहिए कि किस तरह जीवन में हर हाल में खुश रहे। इस दौरान सुनीता गहलोत की संगीतमय प्रस्तुति ने सभी का मन मोह लिया।

भांकरोटा अग्निकांड में घायल युवती सहित तीन और लोगों ने इलाज के दौरान दम तोड़ा

अजमेर-जयपुर एक्सप्रेस हाईवे पर गत 20 दिसंबर को ट्रक की टक्कर के बाद एल.पी.जी. गैस टैंकर में ब्लास्ट हुआ था, अब तक 18 लोगों की मौत हो चुकी

जयपुर (कासं)। भांकरोटा इलाके में अजमेर-जयपुर एक्सप्रेस हाईवे पर 20 दिसंबर की सुबह एलपीजी गैस टैंकर ब्लास्ट में गंभीर रूप से झुलसी युवती सहित तीन और लोगों की बुधवार को उपचार के दौरान सवाई मानसिंह अस्पताल में मौत हो गई। पिछले 4 दिन में मरने वालों की संख्या अब 18 पहुंच गई है। इसमें एक पूर्व आईएएस भी शामिल है।

पुलिस के अनुसार एलपीजी गैस टैंकर ब्लास्ट में गंभीर रूप से झुलसे विजेता (22) निवासी प्रतापगढ़ (राजस्थान) विजेंद्र (36) निवासी भुरीबडाज पावटा (जयपुर) और बंसीलाल (35) की बुधवार सुबह मौत हो गई। विजेता और विजेंद्र 70-70 प्रतिशत झुलसे थे। गंभीर रूप से झुलसे 15 मरीजों का अभी सवाई मानसिंह हॉस्पिटल के बर्न वार्ड में इलाज चल रहा है। दोनों के शवों को एसएमएस अस्पताल के मुर्दाघर में रखवा दी है। मेडिकल बोर्ड से पोस्टमार्टम होने के बाद शव परिजनों को दिए जाएंगे।

गौरतलब है कि मंगलवार को भी दो लोगों की मौत हुई थी। इसमें एटा (यूपी) के रहने वाले नरेश बाबू और नूंह (हरियाणा) के यूसुफ शामिल हैं। एसएमएस प्लास्टिक सर्जन डॉक्टर राकेश जैन ने बताया कि अब तक उठारह लोगों की मौत हो चुकी है। मंगलवार को दो लोगों की मौत के बाद बुधवार को भी सुबह दो लोगों ने और दोपहर को एक व्यक्ति ने दम तोड़ा। जिनमें एक महिला और दो पुरुष शामिल हैं।

> ■ इस हादसे में गंभीर रूप से झुलसे 15 मरीजों का अभी सवाई मानसिंह हॉस्पिटल के बर्न वार्ड में इलाज चल रहा है।

अब गंभीर रूप से घायल एक मरीज को वेंटिलेटर पर रखा गया है। इसे मिलाकर पन्द्रह लोगों का इलाज चल रहा है। इसके अलावा पांच अन्य मरीजों को डिस्चार्ज किया जा चुका है। तीन को सोमवार को और दो को मंगलवार को हॉस्पिटल से डिस्चार्ज किया गया था।

गौरतलब है कि अजमेर रोड पर भांकरोटा डीपीएस स्कूल के पास बीस दिसंबर को हुए हादसे में चार लोग मौके पर ही जिंदा जल गए थे। आठ लोगों ने उसी दिन सवाई मानसिंह हॉस्पिटल में इलाज के दौरान दम तोड़ा था। एक मौत जयपुरिया हॉस्पिटल में हुई थी।

टैंकर में गैस लीकेज के बाद आग इतनी तेजी से फैली थी कि चालीस से ज्यादा गाड़ियां उसकी चपेट में आ गई थी। टैंकर के ठीक पीछे चल रही एक स्लीपर बस और हाईवे किनारे मौजूद पाइप फैक्ट्री भी जल गई थी।

एक्सीडेंट की वजह से बस का दरवाजा एक ट्रक से चिपक गया। इस कारण उसमें सवार चौतीस लोगों को बाहर निकलने की जगह ही नहीं मिली। बड़ी मुश्किल से ड्राइवर वाले गेट से लोगों को बाहर निकाला गया। आग बुझने के बाद कई शवों को पोटली में डालकर अस्पताल ले जाया गया था।

भांकरोटा एलपीजी अग्निकांड में चौथे अज्ञात मृतक की पहचान हो गई है। मृतक कालूराम पुत्र डालूराम चित्तौड़गढ़ निवासी है और वह उदयपुर से जयपुर आने वाले बस का खलासी था। मृतक की पहचान उसके पुत्र व पुत्री के डीएनए के मिलान से हुआ है। मृतक की पहचान को लेकर चार दिन से जयपुर पुलिस ने चितौड़गढ़ में डेरा डाल रखा था।

मृतक के पास मिले आधार कार्ड में अधूरा नाम-पता लिखा था। मंगलवार को परिजनों का पता चलने पर डीएनए सेम्पल लेकर उसका मिलान किया गया ।

पुलिस उपायुक्त जयपुर (पश्चिम) अमित कुमार ने बताया कि एलपीजी टैंकर के ड्राइवर के जिंदा मिलने के बाद एक अधजले शव की पहचान नहीं हो पा रही थी। हादसे में एक मृतक को छोड़कर सभी की पहचान हो चुकी थी।

उदयपुर की लेकसिटी ट्रैवल्स की बस के खलासी कालूराम जाटिया का पता नहीं चला है। चितौड़गगढ़ में उनके शंभूपुरा स्थित घर पर टीम भेजी गई। वहां उनके परिजन नहीं मिले। उनके पिता काफी समय पहले डबोक एयरपोर्ट पर चौकीदारी का काम करते थे।

वहां भी टीम भेजकर परिजनों की जानकारी जुटाई गई। परिजनों का पता चलने के बाद शव के डीएनए का मिलान करवाया गया।

'भाजपा का कार्यकर्ता वाजपेयी के पद चिन्हों का अनुसरण कर रहा है'

जयपुर। पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी की जन्म जयंती पर बोलते हुए हरियाणा के प्रदेश प्रभारी डॉ. सतीश पूनिया ने कहा कि कोई चलता है पदचिन्हों पर तो कोई पद चिन्ह बनाता है।

उन्होंने कहा कि अटल बिहारी वाजपेयी ऐसी शख्सियत थे कि उन्होंने जो पद चिन्ह बनाएं उसका अनुसरण भाजपा का एक-एक कार्यकर्ता करता है। डॉ. पूनिया ने कहा कि अटलजी की समाधि का नाम सदैव अटल है और युगों-युगों तक जब तक यह सृष्टि रहेगी अटल बिहारी वाजपेयी का नाम रहेगा। डा. सतीश पूनिया ने कहा कि जब हमने अपने विचार और संगठन की शुरूआत जनसंघ के तौर पर की थी तब उस समय हमारे राजनीतिक विरोधी मजाक उड़ाते थे। हमारे विरोधी बोलते थे कि जिस दिए में तेल नहीं, सरकार चलाना खेल नहीं। डॉ. पूनिया ने कहा कि हमने तीन प्रतिशत और तीन सीटों से शुरूआत की। दुनिया ने भाजपा के विचारों की प्रबलता देखी और हम देश की हुकुमत पर 303 सीटों पर काबिज हुए।

डा. सतीश पूनिया ने कहा कि भाजपा के शुरूआती दौर में लोग यह भी कहते थे कि संगठन बनाना सपने जैसा है। वाजपेयी की कही गई पंक्तियों को याद करते हुए डॉ.पूनिया ने कहा कि 1980 के भाजपा अधिवेशन में अटलजी ने कहा था ''अंधेरा हटेगा, सूरज उगेगा, कमल खिलेगा। उन्होंने कहा कि आज निश्चित तौर पर भाजपा का स्वर्णिम कमल पूरी दुनिया के नक्शे पर खिल रहा है। भाजपा दुनिया की सबसे बड़ी पार्टी है।'' उन्होंने कहा कि पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने जो हौंसला और प्रेरणा हमें दी।

शिल्पग्राम उत्सव: देश की सतरंगी लोक संस्कृति एक मंच पर साकार हुई

बहरूपिया कलाकारों को मिला मंच, दिनभर मेला प्रांगण में लोगों को हंसाते रहे

उदयपुर, (कासं)। पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र द्वारा हवाला-शिल्पग्राम में आयोजित मुक्ताकाशी मंच पर बुधवार को पांचवे दिन ओडिशा में भगवान जगन्नाथ को रिझाने के लिए किए जाने वाले नृत्य गोटीपुआ में नर्तकों ने भक्ति नृत्य में एक्रोबेटिक शैली से दर्शकों को कई बार आश्चर्यचकित किया। वहीं खूब वाहवाही भी लूटी। वहीं मेवाड़ी गेर ने भी भरपूर मनोरंजन किया।

भूंगड़ खान एंड पार्टी ने मांगणियार गायन में जहां शानदार प्रस्तुतियों से माहौल में सूफी रंग भर दिया, वहीं राजस्थानी गीत-संगीत को अपने खास अंदाज में पेश कर खूब दाद पाई। मणिपुर का पुंग ढोल चेलम में विशेष प्रकार के ढोल के साथ सुंदर नृत्य पेश कर दर्शकों को खूब रिझाया। इसके साथ ही पश्चिम बंगाल के बीरभूम, बर्धमान और मुर्शिदाबाद जिलों के फोक डांस राय बेंस में दर्शकों को एक्रोबेटिक, मार्शल आर्ट और फोक का अनूठा संगम देख बहुत रोमांचित हुए। पश्चिम बंगाल के ही नटुआ डांस में भी फोक और एक्रोबेटिक का खूबसूरत समन्वय दिखा। इनके आलावा भारतीय पारंपरिक खेल मलखंभ के करतबों ने

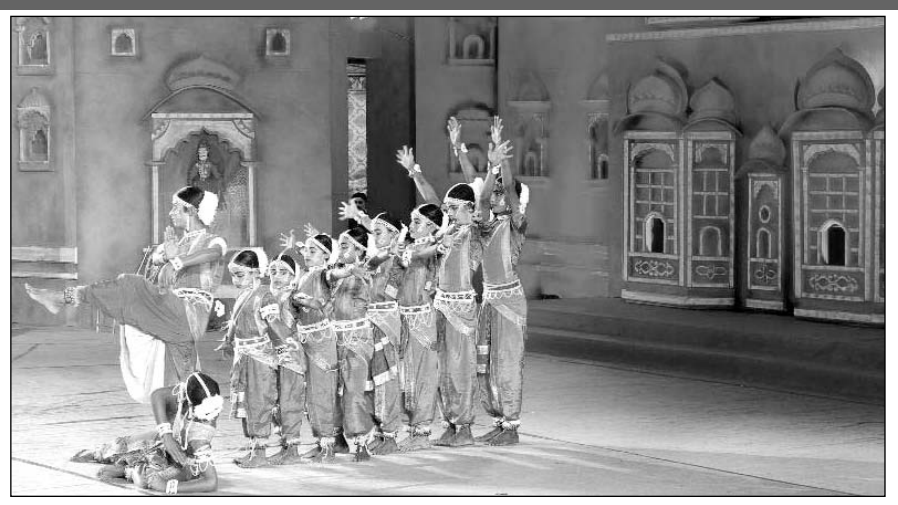

उदयपुर के शिल्पग्राम में मुक्ताकाशी रंगमंच पर प्रस्तुति देते कलाकार।

दर्शकों की भरपूर तालियां लूटी।

इधर, मुक्ताकाशी रंगमंच पर इस बार शिल्पग्राम में बहुरूपिया कलाकारों ने भी अपनी प्रस्तुति दी। पहले वे शिल्पग्राम में हर साल आते व दिनभर मेला प्रांगण में ही लोगों का मनोरंजन करते थे लेकिन इस बार उन्हें अपनी प्रतिभा दिखाने व विलुप्त होती उनकी इस कला को बचाने के लिए मंच प्रदान किया गया। इस बार शिल्पग्राम में बांदीकुंई से अकरम व उनके साथियों का बहुरूपिया दल शिल्पग्राम में आया हुआ है।

वहीं लोक नृत्यों के साथ ही गुजराती आदिवासी डांस राठवा की रोमांचक शैली पर दर्शक झूमने लगे। साथ ही, हिमाचल प्रदेश के सिरमौरी नाटी ने दर्शकों का मन जीत लिया। वहीं, कश्मीर के लोक नृत्य रौफ में डांसर्स के सुंदर समन्वय और 'बुमरो बुमरो श्याम रंग बुमरो' के गीत-संगीत पर दर्शकों ने खूब लुत्फ उठाया। इनके साथ ही उत्तर प्रदेश के ढेडिया नृत्य ने माहौल को राममय बना दिया। राजस्थान के प्रसिद्ध भवाई नृत्य में डांसर्स के रोमांचक करतब देख लोक कलाप्रेमी न केवल हतप्रभ ही हुए, बल्कि हर खूबसूरत करतब पर जमकर तालियां बजाकर दाद दी। पश्चिम बंगाल के पुरुलिया छाऊ

- **ओडिशा में भगवान जगन्नाथ को रिझाने के लिए किए जाने वाले नृत्य गोटीपुआ में नर्तकों ने दर्शकों को आश्चर्यचकित कर दिया**

लोक नृत्य ने भी कला प्रेमियों का दिल जीत लिया।

लोक नृत्यों के साथ ही लोक कला के अन्य रूपों बहरूपिया और माइम (मुकाभिनय) ने दर्शकों को खूब गुदगुदाया। इन प्रस्तुतियों के दौरान दर्शकों ने कई बार ठहाके भी लगाए। वहीं, आरंभ में नगाड़ा वादन पर सैकड़ों कला प्रेमी झूम उठे। वहीं, जुम्मे खान के भपंग वादन ने लोककला प्रेमियों का मन मोह लिया।

पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र के निदेशक फुरकान खान ने बताया कि गुरुवार को कावड़ी कड़गम (तमिलनाडु), संबलपुरी (ओडिशा), बिहू (असम) जैसे लोक नृत्य दर्शकों का मन मोहेंगे, वहीं हरियाणा की घूमर डांस भी रिझाएगा। इनके साथ ही मणिपुर के थांगता एंड स्टिक में मार्शल आर्ट का रोमांचक प्रदर्शन होगा।

महिला को डिजिटल अरेस्ट कर ठगी मामले में तीन गिरफ्तार

दामाद की गिरफ्तारी का डर दिखाकर महिला से 66.70 लाख रुपये ठगे थे

श्रीगंगानगर, (निसं)। शहर के अग्रसेन नगर निवासी महिला को डिजिटल अरेस्ट कर 66.70 लाख रुपए की ठगी के मामले में पुलिस ने तीन आरोपियों को गिरफ्तार किया है। तीनों आरोपी भोपाल के रहने वाले हैं। श्रीगंगानगर पुलिस ने इन्हें भोपाल में पकड़ा है। आरोपी वहां झुग्गी झोपड़ियों में रहते हैं।

घटना को अंजाम देने वाले मुख्य आरोपियों ने ठगी करते ही इस रुपए को करीब 50 खातों में रोटेट किया। इन्हीं खातों में से पहला नंबर इन आरोपियों का था। यानी इन आरोपियों ने घटना को अंजाम देने वाले साइबर ठगों को अपना बैंक खाता उपयोग करने की अनुमति दी। साइबर ठगों ने इन खातों का उपयोग कर घटना की। इनसे आगे की चेन खंगाली जा रही है।

अग्रसेन नगर के रहने वाले जयभगवान गुप्ता ने इस साल जुलाई में पुलिस को दी रिपोर्ट में बताया कि उसकी पत्नी के पास व्हाट्सएप कॉल आई। कॉल करने वाले के व्हाट्सएप

- **तीन दिन तक श्रीगंगानगर पुलिस सादा वर्दी में भोपाल में डेरा डाले रही, वहां से आरोपियों को पकड़ा**

पर पुलिस अधिकारी की फोटो लगी थी। कॉल करने वाले ने गुप्ता की पत्नी के बताया कि पुलिस ने उनके दामाद को रेप के मामले में पकड़े जाने की बात कही। इस पर गुप्ता की पत्नी घबरा गई। आरोपी ने उनके बताए खातों में रुपए डलवाने को कहा। दामाद की गिरफ्तारी का डर दिखाकर आरोपियों ने अलग-अलग खातों में 66 लाख 70 हजार रुपए डलवा लिए।

पीड़ित के पास जब रुपए खत्म हो गए तो उन्होंने इसके लिए दूसरों से रुपए उधार लेने चाहे तो मामला खुला। मामला दर्ज होने पर जांच अधिकारी डीएसपी कुलदीप वालिया ने उन खातों का पता किया, जिनमें रुपए जमा हुए। जांच में पता लगा कि रुपए जमा होते ही 50 खातों में रोटेट हो गए। इस पर पुलिस ने आरोपियों की तलाश शुरू की। इस गैंग में पहले नंबर पर पकड़े गए आरोपी भोपाल निवासी मंगल सरसिया पुत्र मुकेश सरसिया, सुमित चन्नाल पुत्र प्रकाश चन्नाल और आरिफ खान पुत्र अनवर खान को गिरफ्तार किया। तीनों आरोपियों ने बताया कि उन्हें उनके खाते में रुपए जमा होने की एवज में 3 से 5 हजार रुपए दिए गए।

लोन दिलवाने का झांसा देकर इन लोगों के एटीएम कार्ड, चैक बुक ओर पास बुक अपने पास रख लिए। इसके आधार पर उनके खातों का उपयोग किया। आरोपी भोपाल में झुग्गियों में रहते हैं। बैंक पास बुक में इनका जो पता था वे वहां नहीं मिले। इस पर उन्हें दूसरी झुग्गियों में तलाशा गया। तीन दिन श्रीगंगानगर पुलिस सादा वर्दी में भोपाल में डेरा डाले रही। वहां आरोपियों का पता लगने पर उन्हें झुग्गियों से बाहर बुलाकर गिरफ्तार किया गया। पुलिस उन्हें लेकर श्रीगंगानगर आई है।

चिड़ावा में होटल पर झुंझुनू के युवक ने फांसी लगाकर आत्महत्या की

पुलिस को नहीं मिला कोई सुसाइड नोट, दो-तीन दिन से युवक लापता था

चिड़ावा, (निसं)। शहर के बाइपास पर एक युवक द्वारा फांसी लगाकर आत्महत्या करने का मामला सामने आया है। कस्बे के बाइपास स्थित बालाजी पेट्रोल पम्प के पास एक होटल में आत्महत्या की यह वारदात हुई है।

चिड़ावा सीआई विनोद सामरिया ने जानकारी देते हुए बताया कि प्रदीप उर्फ जॉनी (22 वर्ष) पुत्र ओमप्रकाश कुमावत मूल रूप से झुंझुनू का रहने वाला था जो कि चिड़ावा में वार्ड नंबर 9, जोशियों की बगीची के पास अपने ननिहाल में रहता था। युवक ने बाइपास पर बने होटल में फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। होटल गोदारा परिवार का है जिसे दो माह पहले ही मृतक युवक के मामा महेन्द्र ने किराए पर लिया था। मृतक युवक प्रदीप मकानों में रंग-पेंट का काम करता था। और कई

मृतक युवक।

बार होटल पर अपने मामा के पास आ जाया करता था। मृतक युवक के पिता का पहले ही देहांत हो चुका है और उसके दो छोटे भाई और हैं। जानकारी मिली है कि मृतक प्रदीप उर्फ जॉनी 2-3 दिन से काम की तलाश में कहीं बाहर गया हुआ था और उसके बारे में परिवार में भी किसी के पास कोई सूचना नहीं थी कि वह कहां गया है। परिवार के लोग अपने स्तर पर युवक की तलाश भी कर रहे थे। बीती रात 10:30 बजे के बाद होटल संचालक महेन्द्र काम खत्म करके होटल पर ही बने अपने कमरे में सोने के लिए चला गया था और उस वक्त प्रदीप उर्फ जॉनी होटल पर नहीं था। वह रात को होटल पर कब आया और अन्दर कैसे आया इसके बारे में भी किसी को कोई जानकारी नहीं थी।

- **युवक अपने ननिहाल में रहकर रंग-पेंट का काम करता था और कई बार होटल पर अपने मामा के पास आता था**

बताया जा रहा है कि देर रात किसी समय होटल पर आकर युवक होटल में ही बनाए गए टिनशेड में लगी गार्टर से फंदा लगाकर झूल गया। सुबह उठने पर होटल संचालक महेन्द्र ने सोनू के शव को देखा, जिसके बाद इसकी सूचना पुलिस को दी गई। घटना की सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को नीचे उतरवा कर एम्बुलेंस से चिड़ावा उप जिला अस्पताल की मोर्चरी में भिजवाया और मौका मुआयना किया। पुलिस को मौके से कोई सुसाइड नोट नहीं मिला है। मृतक प्रदीप उर्फ जॉनी के परिजनों को सूचना दे दी गई है। परिजनों के आने के बाद ही आत्महत्या के वास्तविक कारणों की जानकारी मिल पाएगी।

डीआरएम अजमेर ने निरीक्षण किया

अजमेर, (कासं)। अजमेर मंडल रेल प्रबंधक आलोक अग्रवाल ने बुधवार को मंडल के अजमेर-पालनपुर खंड पर अजमेर से श्रीअमीरगढ़ स्टेशनों के बीच स्थित विभिन्न स्टेशनों पर जारी अमृत स्टेशन योजना के अंतर्गत विकास कार्यों व अन्य गतिविधियों का निरीक्षण किया व अधीनस्थ अधिकारियों को आवश्यक दिशा निर्देश दिए। मंडल रेल प्रबंधक ने निर्माण कार्यों को शीघ्र पूरा किए जाने व यात्री सुविधाओं को और अधिक बढ़ाने के निर्देश दिए। जिन प्रमुख स्टेशनों का निरीक्षण किया, उनमें ब्यावर, सोजत रोड, मारवाड़ जंक्शन, रानी, फालना, पिंडवाड़ा व श्री अमीरगढ़ शामिल हैं।

निरीक्षण के दौरान वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक बीसीएस चौधरी, वरिष्ठ मंडल इंजीनियर समन्वय संदीप जैन, वरिष्ठ मंडल परिचालन प्रबंधक जितेंद्र मीणा, वरिष्ठ मंडल संकेत एवं दूरसंचार इंजीनियर अंकुर झिंगोनिया, वरिष्ठ मंडल बिजली इंजीनियर विजेंद्र कुमार, वरिष्ठ मंडल इंजीनियर विनोद मीणा व शेरसिंह सहित अन्य अधिकारी व कर्मचारी उपस्थित थे।

हत्या के मामले में दो साल से फरार आरोपी गिरफ्तार

खेतड़ी, (निसं)। खेतड़ी पुलिस ने मर्डर के मामले में फरार चल रहे एक आरोपी को गिरफ्तार किया। आरोपी ने दो साल पहले बिहार के जमुई में हत्या की वारदात को अंजाम दिया था, जिसके बाद वहां से आकर खेतड़ी के खनन क्षेत्र में काम करने लगा था।

- **खेतड़ी के खनन क्षेत्र में काम कर रहा था आरोपी**
- **आरोपी ने दो साल पहले बिहार के जमुई में वारदात की थी**

पुलिस ने हत्या के मामले में आरोपी को गिरफ्तार किया।

सीआई भंवरलाल कुमावत ने बताया कि बिहार पुलिस ने सूचना दी कि बिहार के जमुई इलाके में दो साल पहले एक व्यक्ति की बेरहमी से हत्या कर दी गई थी। हत्या का आरोपी वारदात के बाद फरार हो गया था। आरोपी की पुलिस काफी समय से तलाश कर रही थी। इस दौरान दो दिन पहले बिहार पुलिस को सूचना मिली कि हत्या का आरोपी खेतड़ी के करमाड़ी गांव के खनन क्षेत्र में मशीन चलाने का काम करता है। जिस पर वहां की पुलिस ने खेतड़ी पुलिस को सूचना दी, जिस पर सीकर एसपी भूवन भूषण यादव के निर्देश पर एक विशेष टीम का गठन कर करमाड़ी के खनन क्षेत्र में दबिश दी गई। इस दौरान बिहार पुलिस द्वारा दी गई सूचना के आधार पर एक व्यक्ति को हिरासत में लेकर पूछताछ की तो सामने आया कि उसने दो साल पहले मर्डर की वारदात को अंजाम दिया था। जिस पर पुलिस ने कांगण थाना जमुई बिहार निवासी शैलैश सिंह पुत्र रामबालक सिंह को गिरफ्तार कर लिया। आरोपी के गिरफ्तार करने पर जमुई पुलिस खेतड़ी पहुंची, जिस पर खेतड़ी पुलिस ने आरोपी को बिहार पुलिस के सुपुर्द कर दिया। इस दौरान पुलिस आरोपी को अपने साथ ले गई। थानाधिकारी ने बताया कि खेतड़ी के खनन क्षेत्र में संदिग्ध लोगों पर विशेष नजर रखी जा रही है। इस दौरान कोई भी व्यक्ति संदिग्ध गतिविधियों में शामिल पाया गया तो उसके खिलाफ प्रभावी कार्रवाई की जाएगी। इस दौरान टीम में थानाधिकारी भंवरलाल कुमावत, एचसी सुंडाराम, कांस्टेबल राकेश कुमार मोडसरा, अनिल कुमार आदि शामिल थे।

भीलवाड़ा एवं शाहपुरा जिलों को दो दिन नहीं मिलेगा चंबल का पानी

भीलवाड़ा/शाहपुरा, (निसं)। चम्बल भीलवाड़ा पेयजल परियोजना के अन्तर्गत भीलवाड़ा एवं शाहपुरा जिलों में शुद्ध पेयजल की आपूर्ति की जाती है। अधिशाषी अभियन्ता जन स्वा. अभि. विभाग परियोजना खण्ड-प्रथम भीलवाड़ा अवजीत सिंह ने बताया कि चम्बल भीलवाड़ा पेयजल परियोजना के अन्तर्गत फेज 1, पैकैज एवं के तहत रॉ एवं क्लियर वॉटर पंपिंग एवं ट्रांसमिशन सिस्टम तथा आरोली डब्ल्यूटीपी के वार्षिक संधारण एवं जनरल रिपेयर कार्य हेतु 26 दिसम्बर प्रात: सात बजे से 36 घंटे का शटडाउन रहेगा। जिसके कारण भीलवाड़ा शहर सहित समस्त भीलवाड़ा एवं शाहपुरा जिले में 26 दिसम्बर सांय से 28 दिसम्बर प्रात: तक चंबल से होने वाली पेयजल आपूर्ति बाधित रहेगी। उन्होंने भीलवाड़ा शहर सहित भीलवाड़ा एवं शाहपुरा जिलावासियों से अनुरोध किया है कि शटडाउन पूर्व पेयजल का समुचित भंडारण सुनिश्चित कर लेवे तथा पेयजल मितव्ययता से खर्च करें।

स्कार्पियो कार की टक्कर से बाइक सवार दो जनों की मौत

सादुलपुर, (निसं)। राजगढ़ में एन. एच. 52 पर श्री कृष्णा धर्मकांटा के पास हिसार की तरफ से आ रही एक स्कार्पियो गाड़ी की टक्कर लगने से मोटरसाइकिल सवार दो व्यक्तियों की मौके पर ही दर्दनाक मौत हो गई। घटना के बाद बुधवार को राजकीय उप जिला अस्पताल राजगढ़ में ग्रामीणों की भीड़ जमा हो गई। वहीं पुलिस ने मृतक व्यक्तियों का पोस्टमार्टम करवाकर शव उनके परिजनों को सौंप दिया।

राजगढ़ थाने में दर्ज मामले में थाना अधिकारी पुष्पेन्द्र झाझाडियां ने बताया कि मुकेश पुत्र विनोद नायक निवासी ख्याली तहसील सिद्धमुख जिला चूरू ने मामला दर्ज करवाया है कि 24 दिसंबर को सांय ख्याली से राजगढ़ के लिए उसका भाई रवि पुत्र विनोद नायक व बलवीर पुत्र उदमीराम निवासी ख्याली एक मोटरसाइकिल पर आ रहे थे एवं उनके पीछे वह तथा महेश कुमार पुत्र सांवलराम स्वामी निवासी ख्याली आ रहे थे। जैसे ही वह एन. एच. 52 पर श्री कृष्णा धर्मकांटा के पास पहुँचे तो हिसार की तरफ से आ रही एक स्कार्पियो गाड़ी चालक ने तेज गति व लापरवाही से उसके भाई रवि व बलवीर को टक्कर मार दी।

- **हादसे के बाद चालक कार लेकर फरार हो गया**

दुर्घटना में रवि व बलवीर की मौके पर मौत हो गई। हादसे के बाद वाहन चालक ने एक बार तो अपना वाहन रोका, लेकिन भीड़ होती देख कर अपना वाहन लेकर भगा कर ले गया। राजगढ़ थाना पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

पतंगों की सजने लगी दुकानें

निवाई, (निसं)। मकर संक्रान्ति 14 जनवरी की है, लेकिन अभी से शहर सहित ग्रामीण क्षेत्र में मकर संक्रान्ति के पर्व से पहले से ही युवक-युवतियों में पतंगबाजी को लेकर देर शाम तक काफी उत्साह देखा जा रहा है, जिसके चलते आसमान में रंग-बिरंगी पतंगे दिखने लगी है। दिनभर वो काटा वो मारा की आवाजें सहित स्पीकरों की आवाजें सुनाई देने लगी है। शीतकालीन अवकाश को लेकर सुबह सूर्योदय के साथ ही बालक छतों पर पहुंचकर पतंग उड़ाने में मशगूल हो जाते हैं। छतों पर लगे ध्वनि यंत्रों की आवाजे गूंजने लगी है। बच्चों के साथ बड़े बुजुर्ग भी मकानों की छतों पर धूप एवं चाय आनन्द लेने के साथ-साथ पतंगबाजी का लुत्फ उठा रहे हैं। शहर के बड़ा बाजार, चौहटी बाजार, बिलाला मार्केट, गणगौरी बाजार व झिलाय रोड सहित अन्य बाजारों में पतंगों की दुकानें सजी हुई है। जिन पर पतंग खरीदने वालों की भीड़ बढ़ रही है। इस दौरान पतंग लूटेरे शहर के मुख्य बाजारों एवं गलियों में नजर आने लगे हैं।

बेटी ने पिता के शव को कंधा देकर मुखाग्नि दी

मृतक पिता की पुत्री दीपिका ने शव को कंधा देकर मुखाग्नि दी।

ब्यावर, (निसं) श्रीमाली ब्राह्मण समाज के स्व. गुलाबचंद ओझा के पुत्र देवेंद्र कुमार ओझा को उनकी इकलोती पुत्री जो कि जोधपुर रहती है, दीपिका बोहरा ने कंधा और मुखाग्नि देकर अपना फ़र्ज़ निभाया। 76 वर्षीय देवेंद्र ओझा एयरफोर्स से डायरेक्टर पद से सेवानिवृत होकर अपनी पत्नी के साथ प्रताप नगर स्थित गली नंबर दो में अपने मकान में रहते थे। उनके उनकी पुत्री के अलावा अन्य कोई संतान नहीं थी दोनों ही एक दूसरे का सहारा बनकर जीवन यापन करते थे। देवेंद्र ओझा श्रीमाली समाज के कर्मठ समाजसेवी के रूप में जाने जाते थे और बाल मंदिर स्कूल के समिति सदस्य भी रह चुके हैं। उनकी पत्नी वल्लभ देवी गायत्री शक्ति पीठ महिला मंडल की अध्यक्ष पद पर अपना सेवाकार्य कर रही है। श्रीमाली समाज और आसपास क्षेत्र से आये महिला-पुरुषों ने पुत्री को सांत्वना दी।

श्रीगंगानगर में कुछ हिस्सों में कोहरा छाया

श्रीगंगानगर, (निसं)। जिले के कुछ हिस्सों और पड़ोसी जिले अनूपगढ़ के जैतसर में बुधवार अलसुबह कोहरे का असर रहा। हालांकि श्रीगंगानगर शहर और केसरीसिंहपुर में हालात सामान्य थे। यहां विजिबिलिटी क्लीयर थी, जबकि श्रीकरणपुर और सूरतगढ़ से सटे जैतसर इलाके में अलसुबह घना कोहरा नजर आया। इससे लोगों को परेशानी का सामना करना पड़ा।

जिला मुख्यालय पर सुबह दिन की शुरुआत सामान्य थी। सर्दी खूब तेज रही। हालांकि न्यूनतम तापमान 7.7 डिग्री सेल्सियस रहा, लेकिन सड़कों पर निकले कोचिंग स्टूडेंट, फल-सब्जी वेंडर और दूध बेचने वाले ठिठुरते नजर आए। सुबह से ही सड़कों के किनारे अलाव जलने लगे। तेज सर्दी के चलते मुख्य बाजार में सुबह दस बजे के बाद रौनक नजर आई। सर्दी के चलते बाजार सुबह देरी से खुल रहे हैं। वहीं शाम सात बजे के बाद व्यापारी घरों को लौटने लगते हैं। सर्दी के चलते इन दिनों खान-पान भी बदलने लगा है। गर्म पकवानों की दुकानें सजने लगी है। शहर में शाम ढलने के साथ ही चना सूप, आलू टिक्की और चाय-कॉफी की बिक्री बढ़ने लगी है।

पत्नी के लिए पति ने जल्दी लिया रिटायरमेंट, उसी दिन पत्नी की हुई मौत

पति देवेंद्र ने अपनी पत्नी की बिगड़ी सेहत को देखते हुए वॉलंटरी रिटायरमेंट लिया था

कोटा, (निसं)। कोटा में खुशियों से भरे दिन में जब पति देवेंद्र संदल अपने रिटायरमेंट के जश्न में थे इसी दौरान उनकी पत्नी दीपिका यह दुनिया छोड़कर चली गई। देवेंद्र ने अपनी पत्नी की बिगड़ी सेहत को देखते हुए वॉलंटरी रिटायरमेंट का आवेदन किया था, ताकि वह अपनी पत्नी का ख्याल रख सके, उनके साथ समय बिता सके, उनका वीआरएस स्वीकृत भी हुआ। वह मंगलवार को रिटायरमेंट के बाद अपने जीवन के अगले पड़ाव की शुरुआत पत्नी के साथ करने वाले थे लेकिन संयोग से उसी दिन रिटायरमेंट समारोह में खुशियों के बीच उनकी पत्नी दीपिका की मौत हो गई। यह दुखद घटनाक्रम शास्त्री नगर के दादाबाड़ी इलाके का है।

देवेंद्र के करीबी पड़ोसी गिरीश गुप्ता ने बताया कि देवेंद्र संदल सेंट्रल वेयर हाऊस में मैनेजर थे। मंगलवार को उनके कार्यालय में रिटायरमेंट समारोह आयोजित किया गया था। समारोह के दौरान दीपिका भी वहां मौजूद थी। सभी लोग देवेंद्र को शुभकामनाएं दे रहे थे लेकिन इस खुशी के पल में अचानक दीपिका कुर्सी पर बैठी-बैठी गिर गई। उन्हें तुरंत अस्पताल ले जाया गया लेकिन डॉक्टरों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। राजफैड के कार्यवाहक क्षेत्रीय निदेशक विष्णु दत्त शर्मा ने बताया कि दीपिका के अचानक गिरने के बाद उन्हें तुरंत अस्पताल ले जाया गया लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी थी। गिरीश गुप्ता ने बताया कि दीपिका और देवेंद्र की कोई संतान नहीं थी।

पति के रिटायरमेंट समारोह में ही पत्नी दीपिका का देहांत हो गया।

- **देवेंद्र के कार्यालय में रिटायरमेंट समारोह आयोजित किया था, वहीं पर हुई पत्नी की मौत**

दीपिका को दिल की समस्या थी जिसके चलते देवेंद्र ने समय से पहले रिटायरमेंट लेने का फैसला किया था ताकि वह अपनी पत्नी का ध्यान रख सके। रिटायरमेंट के दिन दीपिका पति के स्वागत के लिए अपने घर को सजाकर कार्यक्रम में शामिल होने पति के ऑफिस गई थी। पड़ोसी दोनों के लौटने का इंतजार कर रहे थे लेकिन कुछ ही समय बाद दीपिका की मौत की खबर आई जिसे सुनते ही पूरे कॉलॉनीवासी शोक में डूब गए। बुधवार को उनका अंतिम संस्कार कर दिया गया।

मेरा पाकिस्तान के खिलाफ टेस्ट खेलने का सपना अधूरा ही रह गया। मैं बचपन से पाकिस्तान के खिलाफ टेस्ट खेलना चाहता था। लेकिन कुछ कारणों से ऐसा नहीं हो सका।

- आर. अश्विन

भारतीय गेंदबाज, पाकिस्तान से टेस्ट खेलने का सपना अधूरा रहने पर बोलते हुए।

खेल जगत

आज का खिलाड़ी ▶ रवि शास्त्री

पूर्व कोच रवि शास्त्री ने गुरुवार से यहां शुरू होने वाले बॉक्सिंग डे टेस्ट मैच में भारत को जीत का दावेदार बताते हुए कहा कि उसने अभी तक ऑस्ट्रेलिया की शीर्ष क्रम की कमजोरी का पूरा फायदा उठाया है। शास्त्री ने इसके साथ ही कहा कि तेज गेंदबाजी के अगुआ जसप्रीत बुमराह ने अकेले दम पर भारत को इस मुकाम पर पहुंचाया जहां बॉर्डर गावस्कर ट्रॉफी के लिए खेली जा रही पांच मैच की श्रृंखला 1-1 से बराबरी पर है। कोई भी विदेशी टीम अगर पर्थ, एडिलेड और ब्रिस्बेन में खेलने के बाद1-1 से बराबरी पर हो तो वह इससे प्रेरणा ले सकती है।

क्या आप जानते हैं ?... टेनिस स्टार जिम्मी कोनर्स के ऊपर 20,000 डॉलर का जुर्माना और दस सप्ताह के लिए उन्हें निरस्त किया गया था।

जसप्रीत बुमराह ने रचा इतिहास

अश्विन के बाद ऐसा करने वाले दूसरे भारतीय गेंजबाज

दुबई, 25 दिसंबर। भारत के प्रमुख तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह ने टेस्ट गेंदबाजी में 904 रेटिंग अंक हासिल कर हाल में अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट से संन्यास लेने वाले रविचंद्रन अश्विन के रिकार्ड की बराबरी कर ली है। बुमराह ने बॉर्डर गावस्कर ट्रॉफी में अब तक कुल 21 विकेट हासिल किए हैं और इसके चलते उन्होंने शीर्ष स्थान पर 48 रेटिंग अंकों के अंतर से अपनी बढ़त बढ़ाई है। कगिसो रबाडा 856 रेटिंग अक दूसरे और जॉश हेजलवुड 852 रेटिंग अंक के साथ तीसरे स्थान पर हैं। पैट कमिंस 822 रेटिंग अंक के साथ चौथे, रविचंद्रन अश्विन 789 रेटिंग के साथ पांचवें स्थान पर है। इसके अलावा मैट हैनरी (782) छठे, नाथन लायन (770) सातवें, प्रभात जयसूर्या (768) आठवें, नोमान अली (759) नौवें और रवींद्र जडेजा (755) रेटिंग अंक के साथ दसवें स्थान पर है। मोहम्मद सिराज एक स्थान के फायदे के साथ 24वें पायदान पर पहुंच गए हैं। जबकि पिछले टेस्ट की पहली पारी में 152 रनों की पारी खेलने वाले ट्रैविस हेड यशस्वी जायसवाल को पछाड़ते हुए बल्लेबाजी रैंकिंग में चौथे स्थान पर पहुंच गए हैं। शीर्ष स्थान पर जो रूट का कब्जा है। गाबा टेस्ट के एक अन्य शतकवीर स्टीव स्मिथ भी शीर्ष 10 में वापसी हुई हैं। स्मिथ ने पिछले मैच में 101 रनों की पारी खेली थी।

बॉक्सिंग डे टेस्ट में रोमांचक मुकाबले की संभावना, क्या रोहित शर्मा करेंगे ओपनिंग

मेलबर्न, 25 दिसम्बर। क्रिकेट ग्राउंड पर भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच बॉक्सिंग डे टेस्ट मैच के दूसरे भाग में बॉर्डर गावस्कर ट्रॉफी के साथ रोमांचक होने की उम्मीद है। पर्थ टेस्ट में भारत को 295 रन की बड़ी जीत मिली, लेकिन पैट कमिंस की ऑस्ट्रेलिया ने एडिलेड ओवल में गुलाबी गेंद वाले टेस्ट में 10 विकेट की जीत के साथ वापसी की। पांच मैच की टेस्ट श्रृंखला अभी 1-1 से बराबर है। मेलबर्न टेस्ट सीरीज में भारत की किस्मत का फैसला कर सकता है। मौजूदा पांच मैचों की टेस्ट सीरीज में बॉक्सिंग डे टेस्ट भारत के लिए बनाने या बिगाड़ने वाला हो सकता है। रोहित शर्मा पर दबाव है, जिन्होंने अपने पिछले पांच टेस्ट नहीं जीते हैं, लेकिन उनमें से चार हार गए हैं। बांग्लादेश के खिलाफ टेस्ट सीरीज़ के बाद से, रोहित को परेशानियों का सामना करना पड़ा है क्योंकि उन्होंने बल्ले से भी अच्छा प्रदर्शन नहीं किया है।

भारतीय कप्तान क्रिसमस की पूर्व संध्या पर अभ्यास के लिए उतरने वाले आखिरी खिलाड़ी थे और कयास लगाए जा रहे हैं कि वह अभी तक अच्छा प्रदर्शन करने वाले केएल राहुल की जगह पारी की शुरुआत कर सकते हैं। अगर ऐसा होता है तो राहुल को फिर तीसरे नंबर पर बल्लेबाजी के लिए उतरना पड़ेगा। इस तरह की स्थिति में शुभमन गिल को या तो मध्य क्रम में उतरना होगा या फिर उन्हें ध्रुव जुरेल के लिए जगह खाली करनी होगी।

रोहित मध्यक्रम में असफल रहे और अभी तक तीन पारियों में उनके नाम पर केवल 19 रन दर्ज हैं। अब अगर उन्हें सलामी बल्लेबाज के रूप में उतारा जाता है तो यह देखना दिलचस्प होगा कि भारतीय टीम का बल्लेबाजी क्रम का संयोजन कैसा होगा। दूसरी ओर, ऑस्ट्रेलिया की टीम लय में है, हालांकि वे ब्रिस्बेन के गाबा में तीसरे टेस्ट में जीत हासिल नहीं कर सके। भारत को एमसीजी में खेलने में मजा आता है, खासकर टेस्ट क्रिकेट में। भारत ने ऑस्ट्रेलियाई धरती पर 10 टेस्ट जीते हैं, जिनमें से चार मेलबर्न के प्रतिष्ठित स्थल पर जीते हैं। 1977 में बिशन सिंह बेदी की कप्तानी में भारत ने 222 रनों से जीत हासिल की थी, जिसके बाद 1981 में सुनील गावस्कर एंड कंपनी ने 59 रनों से जीत हासिल की थी। वास्तव में, भारत ने मेलबर्न में अपना दबदबा दिखाते हुए बैक-टू-बैक टेस्ट जीते थे।

पिछली यादगार जीत को दोहराने मेलबर्न उतरेगी भारतीय टीम

मेलबर्न, 25 दिसंबर। कल से शुरु होने जा रहे चौथे टेस्ट मैच में भारतीय टीम में पिछली बार वर्ष 2020-21 बॉर्डर-गावस्कर सीरीज में इसी मैदान पर मिली जीत के दोहराने के इरादे से उतरेगी। भारतीय प्रबंधन को इस टेस्ट में जीत दर्ज करने के लिए चुनौतीपूर्ण निर्णय लेने होंगे। सीरीज के पिछले तीन मुकाबलों में देखा गया है कि भारतीय टीम शीर्षक्रम बल्लेबाजी को लेकर असमंजस की स्थिति रही। अब तक देखा गया है कि फॉर्म में चल रहे बल्लेबाज ने इस सीरीज में बेहतरीन प्रदर्शन किया है, लेकिन खराब फॉर्म से जूझ रहे कप्तान रोहित शर्मा ने भारत के बल्लेबाजी क्रम को बिगाड़ दिया है। इस बॉक्सिंग डे टेस्ट में दो क्रिकेट दिग्गज रोहित शर्मा ,केएल राहुल के चरित्र, धैर्य और दृढ़ संकल्प की परीक्षा होगी। भारत अभी भी बुमराह के पर्याप्त समर्थन और खराब फॉर्म में चल रहे शीर्ष क्रम के बल्लेबाजों से काफी अपेक्षा कर रहा है। बल्लेबाजी क्रम में खिलाड़ियों को बदलने के मामले में भारत के पास अधिक विकल्प नहीं हैं। इसलिए वे उम्मीद करेंगे कि कोई के एल राहुल का साथ दे और उनके साथ घंटों बल्लेबाजी कर सके। अगर भारतीय टीम यह टेस्ट हारती है तो डब्ल्यूटीसी के फाइनल में पहुंचने के लिए उन्हें अन्य मैचों के परिणाम पर निर्भर रहना होगा। साथ ही एक दशक के बाद ऐसा होगा, जब ऑस्ट्रेलिया भारत के खिलाफ कोई टेस्ट श्रृंखला जीतने के बेहद करीब होगा।

कोलंबो में होने वाली दिव्यांग क्रिकेट चैम्पियंस ट्रॉफी में हिस्सा लेगी भारतीय टीम

नई दिल्ली, 25 दिसम्बर। भारतीय दिव्यांग क्रिकेट परिषद (डीसीसीआई) ने कहा है कि 12 से 21 जनवरी तक श्रीलंका के कोलंबो में आयोजित होने वाली दिव्यांग क्रिकेट चैंपियंस ट्रॉफी 2025 में भारतीय टीम हिस्सा लेगी। इस टूर्नामेंट में भारत, पाकिस्तान श्रीलंका और इंग्लैंड भाग ले रहे है। इस अंतरराष्ट्रीय टूर्नामेंट से पहले भारतीय टीम जयपुर में प्रशिक्षण शिविर में भाग लेगी। शिविर के दौरान अंतिम टीम का चयन किया जाएगा। चारों टीमों के बीच दो-दो मैच खेले जायेंगे। टूर्नामेंट का पहला मुकाबला 12 जनवरी को भारत और पाकिस्तान की टीम के बीच खेला जायेगा। 13 जनवरी को भारतीय टीम इंग्लैंड से भिड़ेगी। 15 जनवरी को भारत का मुकाबला श्रीलंका से होगा। इसके बाद 16 जनवरी को फिर भारत और पाकिस्तान के बीच दूसरा मैच होगा। 18 जनवरी को भारत बनाम इंग्लैंड और 19 जनवरी को भारत बनाम श्रीलंका का मैच होगा। टूर्नामेंट का फाइनल 21 जनवरी को खेला जायेगा।

द. अफ्रीका की नजरें पाक को टेस्ट श्रृंखला में हराकर डब्ल्यूटीसी फाइनल में जगह बनाने पर

सेंचुरियन, 26 दिसम्बर। पाकिस्तान के खिलाफ बृहस्पतिवार से शुरू हो रही टेस्ट श्रृंखला जीतकर दक्षिण अफ्रीका की नजरें विश्व टेस्ट चैम्पियनशिप फाइनल में जगह पक्की करने पर लगी हैं। दक्षिण अफ्रीका को लॉडर्स पर अगले साल होने वाले विश्व टेस्ट चैम्पियनशिप फाइनल में जगह बनाने के लिये इस चक्र के बाकी दो में से एक टेस्ट जीतना जरूरी है। कप्तान तेम्बा बावुमा को यकीन है कि उनकी टीम दो टेस्ट मैचों की आगामी श्रृंखला में अपेक्षाओं पर खरी उतरेगी। बावुमा ने कहा ,'' अपेक्षाओं का दबाव तो है लेकिन हम श्रृंखला 2 . 0 से जीतने के इरादे से उतरेंगे। हमें पता है कि इसके लिये एक टीम के रूप में हमें सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करना होगा।'' दक्षिण अफ्रीका ने टीम में चार तेज गेंदबाजों को शामिल किया है जिनमें 140 किलोमीटर की रफ्तार से गेंद फेंकने वाले कोर्बिन बॉश अपने शहर में टेस्ट पदार्पण करेंगे। तेज गेंदबाज कैगिसो रबाडा और मार्को जानसेनके साथ डेन पीटरसन और बॉश तेज गेंदबाजी का जिम्मा संभालेंगे। पिछले छह साल में सेंचुरियन की पिच पर तेज गेंदबाजों की तूती बोली है जिन्होंने 227 विकेट लिये जबकि स्पिनरों को 16 विकेट ही मिले। दक्षिण अफ्रीका को वनडे श्रृंखला में पाकिस्तान के हाथों 0 . 3 से पराजय झेलनी पड़ी है। इससे उबरकर टेस्ट श्रृंखला में जीत की राह पर लौटना आसान नहीं होगा। पाकिस्तान ने दक्षिण अफ्रीका में 15 में से सिर्फ दो टेस्ट जीते हैं और 12 गंवाये हैं। डब्ल्यूटीसी अंकतालिका में पाकिस्तान सातवें नंबर पर है और इस चक्र में आकिब जावेद टीम के चौथे मुख्य कोच हैं। मिकी आर्थर और मोहम्मद हाफिज ने एक श्रृंखला के बाद ही पद छोड़ दिया जबकि जैसन गिलेस्पी ने इस टेस्ट से दो सप्ताह पहले ही पद छोड़ा है।

आरसीए में फिर मचा घमासान धनंजय सिंह की लीक हुई मेल से मामला उजागर

धनंजय सिंह ने कन्वीनर जयदीप बियानी पर लगाए गंभीर आरोप

जयपुर, 25 दिसम्बर। सरकार ने बीजेपी विधायक और श्रीगंगानगर जिला क्रिकेट संघ के कोषाध्यक्ष जयदीप बिहानी को एडहॉक कमेटी का संयोजक बनाया। कमेटी में सदस्य नागौर जिला क्रिकेट संघ के अध्यक्ष धनंजय सिंह खींवसर, पाली जिला क्रिकेट संघ के सचिव धर्मवीर सिंह, झुंझुनूं जिला क्रिकेट संघ के सचिव हरिशचंद्र सिंह, बीकानेर जिला क्रिकेट संघ के सचिव रतन सिंह शेखावत को और वहीं अलवर जिला क्रिकेट संघ के सचिव पवन गोयल को हटाकर उनकी जगह जैसलमेर जिला क्रिकेट संघ के सचिव विमल शर्मा को कमेटी का सदस्य बनाया गया। सरकार ने सरकार ने क्रिकेट को दुरुस्त करने के लिए कमेटी बनाई लेकिन एडहॉक कमेटी के वरिष्ठ सदस्य धनंजय सिंह ने कन्वीनर जयदीप बियानी पर लगाए गंभीर आरोप, कहा- आरसीए में चल रही कन्वीनर बियानी की मनमानी। खिलाड़ी चयन में नहीं कोई पारदर्शिता दिखाई नही देती है। कमेटी के बिना सदस्यों को सूचित किए कन्वीनर बियानी ले रहें फैसलें। बिना सदस्यों की सहमति के बदल रहे नियम। खिलाड़ी चयन को लेकर बियानी के ख़िलाफ़ खेल मंत्री को मिल चुकी है शिकायतें। खिलाड़ियों के आक्रोश को धनंजय सिंह ने मेल में किया उजागर। धनंजय सिंह की लीक हुई मेल से मामला उजागर। एडहॉक कमेटी के सदस्य धनंजय सिंह ने कहा कि मैंने मेल कमेटी (बियानी) को किया था। अब जांच का विषय यह है कि मेल लीग कहां से हुई। इसका पता लगाना चाहिये। कमेटी का कौनसा सदस्या है जो मेल लीक करता है।

संस्कार सारस्वत ने बैडमिंटन में पुरुष युगल चैम्पियन बनकर इतिहास रच दिया

जयपुर, 25 दिसंबर। जयपुर (राजस्थान) के संस्कार सारस्वत ने बंगलुरू में दिनांक 18 से 24 दिसंबर तक आयोजित सीनियर नैशनल बैडमिंटन चैम्पियनशिप 2024 में पुरुष युगल का खिताब अपने नाम कर इतिहास रच दिया! राजस्थान बैडमिंटन संघ के सचिव के के शर्मा ने जानकारी देते हुए बताया कि संस्कार सारस्वत राजस्थान के बैडमिंटन इतिहास में सीनियर नैशनल बैडमिंटन चैम्पियनशिप में पदक जीतने वाले पहले खिलाड़ी बन गए हैं, परिणाम- संस्कार ने अर्श (उत्तर प्रदेश) के साथ मिलकर पुरुष युगल के पहले दौर में प्रियंशु टर्का एवं एएमनुअल को 21-14, 21-18 से, दूसरे दौर में रोहन कुमार सिंह एवं एलान सिंह को 21-6, 21-11 से, प्रिक्वार्टर फाइनल में दूसरी वरियता प्राप्त विष्णुवर्धन गौड़ा पंजाला एवं नितिन को 19-21, 21-19, 21-17 से, क्वार्टर फाइनल मैच में अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त पृथ्वी राई एवं साईं प्रतीक को 16-21, 21-17 व 24-22, सेमीफाइनल मैच में तीसरी वरियता प्राप्त सुरज ग्वाला व ध्रुव रावत को 14-21, 21-18 व 21-19 से हराकर फाइनल में प्रवेश किया जहा भारत की प्रथम वरियता प्राप्त जोड़ी कर्नाटक के नवीन वी एवं लोकेश पी. को 21-12, 12-21 व 21-19 से हराकर राजस्थान की और से पहली बार सीनियर राष्ट्रीय बैडमिंटन चैम्पियनशिप जितने का इतिहास बना दिया। संस्कार ने युगल वर्ग के साथ-साथ पुरुष एकल में भी पहली बार क्वार्टर फाइनल खेल राजस्थान के लिए इतिहास बना दिया। इसमें पहले दौर में हिमानीश दास 21-17, 3-0, दूसरे दौर में पूर्व जूनियर वर्ल्ड नंबर 1 खिलाड़ी शंकर मुथस्वामी को 13-21, 21-16 व 21-10 से, तीसरे दौर में सातवीं वरियता प्राप्त आर्य भिवपट्टाकी को 21-16, 21-15, प्रिक्वार्टर फाइनल में लक्ष्य शर्मा को 23-21, 21-17 से हरा कर क्वार्टर फाइनल में प्रवेश किया जहां अनुभवी खिलाड़ी मिथुन मंजूनाथ से 21-9, 21-9 से हार गए।

संस्कार एडवांस प्रशिक्षण के लिए भारतीय बैडमिंटन संघ

जयपुर जिला टेबल टेनिस प्रतियोगिता का समापन

जयपुर, 25 दिसंबर। जयपुर जिला टेबल टेनिस प्रतियोगिता का समापन आज मॉडर्न स्कूल जयपुर में संपन्न हुआ जिसमें बालक व बालिका वर्ग में प्रतियोगियो ने बहुत ही आकर्षक खेल का प्रदर्शन कर सभी को अचंभित कर दिया। आयोजन सचिव कृष्ण माहेश्वरी के अनुसार प्रतियोगिता के परिणाम इस प्रकार है। बालक वर्ग-11 यजत झा विजेता तथा उपविजेता तारुश रहे। बालिका वर्ग 9 में मृग्या पुरोहित विजेता तथा उपविजेता नव्या शर्मा रही। बालक वर्ग 11 में आरव साहनी विजेता तथा उपविजेता आरव माथुर रहे बालिका वर्ग 11 में विजेता आरणा साहनी वह उपविजेता मरिया राजपूत रही। बालक वर्ग 13 में विजेताकुश शुक्ला तथा उपविजेता आरव साहनी रहे। बालिका वर्ग 13 में विजेता आरणा साहनी तथा उपविजेता एश्न्या शर्मा रही। बालक क 15 में विजेता हर्षवर्धन सिंह वह उपविजेता तुषार रामचंदानी रहे बालिका वर्ग 15 में विजेता प्रत्युष शर्मा तथा उपविजेता आरणा साहनी रही।बालक वर्ग 17 में विजेता तुषार रामचंदानी तथा उपविजेता हर्षवर्धन सिंह रहे। बालिका वर्ग 17 में विजेता समृद्धि व्यास तथा उपविजेता नवधा सिंह नेगी रही बालिका वर्ग 19 में समायरा शर्मा तथा उपविजेता समृद्धि व्यास रही। महिला एकल का मुकाबला बहुत रोमांचक रहा जिसमें विजेता समृद्धि व्यास तथा उपविजेता नंदिनी नागोरी रही। प्रतियोगिता में पारितोषिक वितरण फिनोवा कैपिटल के राहुल साहनी तथा समाजसेवी मुदित जैन ने किया साथ ही जयपुर जिला टेबल टेनिस संघ के अध्यक्ष ललित सिंह तथा सचिव अजय ओझा मौजूद रहे।

अंडर-23 एकदिवसीय ट्रॉफी में राजस्थान ने सिक्किम को 211 रनों से हराया

राजस्थान के सचिन यादव की शतकीय पारी

जयपुर, 25 दिसंबर। त्रिवेंद्रम में खेली जा रही बीसीसीआई की अंडर 23 एक दिवसीय ट्रॉफी में आज राजस्थान ने सिक्किम को 211 रनो के विशाल अंतर से हराया, राजस्थान की जीत में सचिन यादव का शानदार आल राउंडरप्रदर्शन। टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करते हुए राजस्थान टीम ने सचिन यादव की शानदार शतकीय पारी की सहायता से निर्धारित 50 ओवर में 8 विकेट के नुकसान पर 383 रनोका विशाल स्कोर बनाया। सचिन यादव ने अपनी 179 रनो की पारी में 136 गेंदों का सामना करते हुए 9 छक्के व 14 चोक्केलगाए।टीम के लिए सचिन यादव 179, आयुष अमेरिया 60, धर्मवीर सैनी 49, करण लाम्बा 32 व युवराज सिंह 20 रनो का योगदान दिया। सिक्किम के गेंदबाज रोबिन लीम्बो 51 /7 विकेट प्राप्त किये।सिक्किम पारी 172 /9, टीम के लिए विवेक नाबाद 22 रनो का योगदान दिया। राजस्थान के गेंदबाज मनीष आचार्य 28 /3, सचिन यादव 20/2, समरथ सिंह शेखावत 38 /2, दुष्यंत कच्छावा 21 /1, राहुल चौधरी 25 /1 विकेट प्राप्त करते हुए टीम को जीत दिलाई।

विजय हजारे ट्रॉफी में कल दिनांक 26 दिसंबर को खेले जाने मैच : 1) शरद पंवारक्रिकेट अकादमी, बीकेसी, मुंबई राजस्थान - हिमाचल प्रदेश मैच, (2) सवाई मान सिंहस्टेडियम, जयपुर ओडिसा- उत्तराखंड मैच, (3) के एल सैनी स्टेडियम, जयपुर गुजरात - असम मैच, (4) जयपुरिया ग्राउंड, जयपुर झारखण्ड - हरयाणा मैच, (5) सोनी ग्राउंड, जयपुर गोवा - मणिपुर मैच।

राजस्थान राज्य क्रॉस कंट्री प्रतियोगिता सम्पन्न

जयपुर, 25 दिसंबर। राजस्थान एथलेटिक्स एसोसियेशन के तत्वावधान में आयोजित राजस्थान राज्य क्रॉस कंट्री प्रतियोगिता का समापन विधानी जगतपुरा जयपुर के यहां पुरस्कार वितरण समारोह के साथ संपन्न हुआ। राजस्थान एथलेटिक की सचिव देव नारायण गुर्जर ने बताया कि इस प्रतियोगिता में राज्य भर से लगभग 400 एथलीटों ने भाग लिया।

सचिव गुर्जर ने बताया कि समापन समारोह में अतिथि के रूप में भारतीय क्रीड़ा भारती के राष्ट्रय अध्यक्ष एवम् ओलंपियन अर्जुन अवॉर्डी गोपाल सैनी, ओलम्पिक संघ के महासचिव सुरेन्द्र सिंह गुर्जर, भगवान सिंह गुर्जर समाज सेवी, नेमी सिंह गुर्जर संयुक्त सचिव राजस्थान कबड्डी संघ उपस्थित रहे। इस दौरान राजस्थान एथलेटिक संघ की अध्यक्ष शारदा देवी जादम तथा कोषाध्यक्ष कार्तिकेय शर्मा ने आए हुए अतिथियों का स्वागत किया। प्रतियोगिता परिणाम निम्न प्रकार रहे -

पुरुष वर्ग 10 किमी. दौड़ - नरेश चोपडा टोंक प्रथम, अतुल पूनिया चूरू द्वितीय, मुकेश कुमार ए यू फाउंडेशन तृतीय।

पुरुष अंडर 20 आठ किमी. दौड़ - रिजवान अलवर प्रथम, योगेश गुर्जर कोटा द्वितीय दिलीप सिंह श्रीगंगानगर।

पुरुष अंडर 18 छह किमी. दौड़- गौरव शर्मा अलवर प्रथम, रोहित कुमार भरतपुर द्वितीय, अनमोल गिलहोत्रा श्रीगंगानगर तृतीय।

बालक अंडर 16 दो किमी. दौड़- दक्षवीर सिंह प्रथम पंकज चूरू द्वितीय लोकेश अलवर तृतीय।

महिला वर्ग 10 किमी दूरी दौड़- चतरू सीकर प्रथम, निर्मला चूरू द्वितीय, प्रियंका कसाना सीकर तृतीय।

महिला अंडर 20 6 किमी. दौड़ - मंजू चौधरी झुन्झुनू प्रथम, सुशीला प्रजापत नागौर द्वितीय, ममता चौधरी जोधपुर तृतीय।

महिला अंडर 18 4 किमी. दौड़- मुक्ता हनुमानगढ़ प्रथम, पायल राठौड़ स्पोर्ट्स काउंसिल एकेडमी द्वितीय, गंगा जोधपुर तृतीय।

अंडर 16 दो किमी. दौड़- दीपिका श्रीगंगानगर प्रथम, आरती नागौर द्वितीय, पायल कंवर स्पोर्ट्स काउंसिल एकेडमी तृतीय। सचिव देव नारायण गुर्जर ने सभी का आभार व्यक्त किया।

महावीर स्कूल एलुमिनी क्रिकेट लीग में जीत गुरुजन को समर्पित : पूनिया

जयपुर, 25 दिसंबर। जयपुर की प्राचीनतम स्कूल में शुमार महावीर स्कूल में प्रतिवर्ष एलुमिनी क्रिकेट लीग का आयोजन होता रहा है। एलुमिनी स्थापना के 25 वर्ष पूर्ण होने वाले इस रजत जयंती वर्ष में रविवार 22 दिसंबर को 4 टीम के 60 खिलाड़ियों की एक चैंपियन शिप लीग आयोजित की गई जिसमे देवराज महावीर टीम ने फाइनल रोमांचक नजदीकी मुकाबले में जीत कर खिताब अपने नाम किया। देवराज महावीर टीम के मालिक और कैप्टन मशहूर क्रिकेटर, उद्योगपति राम कुमार पुनिया ने इस जीत को अपने गुरुजन को समर्पित करते हुए बताया आगामी वर्ष में वे स्कूल एलुमिनी के लिए क्रिकेट और अन्य खेल गतिविधियों के आयोजन में सक्रिय सहभागिता सुनिश्चित करते रहेंगे। गौरतलब है राम कुमार पुनिया उद्योगपति होने के साथ एक क्रिकेट एकेडमी भी चलाते है। और इस लीग में उनकी टीम के जीत में उनके कप्तानी और ऑल राउंडर स्किल की भूमिका की सभी दर्शकों ने सराहना की।

अद्विका, आराध्या, अपेक्षा, पदमजा सिंह अंडर-15 लड़कियों के सेमीफाइनल में

जयपुर, 25 दिसंबर। ओएन दीक्षित मेमोरियल जिला बैडमिंटन प्रतियोगिता में आज लड़कियों के अडर-15 आयु वर्ग में क्वाटर फाइनल खेले गए। इसमें प्रथम वरीयता प्राप्त अदविका अग्रवाल ने आराध्या शर्मा को 21-9, 21-10 आसान गेम में परास्त किया वहीं दूसरी वरीयता प्राप्त आराध्या ढींगरा ने ओजस्विता दवे को 21 -14, 21 -14 से हराया तथा तीसरी वरीयता प्राप्त अपेक्षा चौधरी ने रिद्धि सेठिया को तीन संघर्ष भरे गेम में 18 -21, 21- 15, 21- 14 से परास्त किया। वहीं चौथी वरीयता प्राप्त पदमजा सिंह पर्ल पारिक को 21-11, 21 -17 से हरा सेमीफाइनल में प्रवेश किया। अंडर -11 लड़कियों में मिराया फगेरिया, स्वरा तक्षाली, राशी सिंगल व आराध्या बिश्नोई सेमीफाइनल में पहुंची। लड़कों के अंडर-11 के क्वार्टर फाइनल में जय सैनी, गर्वित दहिया, शिव चौहान, अद्विक जैन, आराध्य जांगिड़, लक्षित रेवार, विहान टाँक, जियांश मीणा पहुंचे। इनके अलावा आज बॉयज अंडर 15 और अंडर 13 मे तीसरे और चौथे राउंड खेले गए। कल प्री-क्वार्टर व क्वार्टर फाइनल खेले जाएंगे। लड़कों के 17 के दो राउंड भी आज खेले गए।

नेशनल शूटिंग चैम्पियनशिप प्रतियोगिता : 50 मीटर राइफल प्रोन ईवेंट में दो गोल्ड व एक कांस्ट पदक व राजस्थान की शॉटगन स्कीट की मिक्सड टीम ने स्वर्ण पदक जीत कर रचा इतिहास

जयपुर, 25 दिसंबर। डा. करणीसिंह शूटिंग रेंज तुगलकाबाद नई दिल्ली पर आयोजित 67वीं नेशनल शूटिंग चैम्पियनशीप प्रतियोगिता में आज का दिन रहा राजस्थान की महिला खिलाडियो के नाम 50 मीटर राईफल प्रोन ईवेन्ट में दो गोल्ड व एक ब्रांज मेडल व राजस्थान की शॉटगन स्कीट की मिक्सड टीम ने स्वर्ण पदक जीत कर रचा इतिहास।

डा. करणीसिंह शूटिंग रेंज तुगलकाबाद नई दिल्ली पर आयोजित 67वीं नेशनल शूटिंग चैम्पियनशीप प्रतियोगिता राईफल 2024 में 50 मीटर प्रोन व्यक्तिगत ईवेन्ट में माननी कौशिक ने स्वर्ण पदक हासिल कर नया नेशनल रिकार्ड बनाया। 50 मीटर प्रोन सिविलियन वूमेन टीम केटेगिरी में स्वीटी चौधरी, मोनिका जाखड व ख्वाईस शर्मा ने स्वर्ण पदक अपने नाम किया।

50 मीटर राईफल प्रोन की नेशनल टीम केटेगिरी में माननी कौशिक, स्वीटी चौधरी व मोनिका जाखड ने ब्रांज मेडल अपने नाम किया। डा. करणीसिंह शूटिंग रेंज तुगलकाबाद नई दिल्ली पर आयोजित 67वीं नेशनल शूटिंग चैम्पियनशीप शॉटगन प्रतियोगिता 2024 में पेरिस ओलम्पिक 2024 की जोडी महेश्वरी चौहान व अन्नतजीत सिंह नरूका ने शॉटगन स्कीट मिक्स्ड टीम ने स्वर्ण पदक जीत कर नया कीर्तिमान बनाया।

केन्द्रीय सहकारिता मंत्री अमित शाह के ''सहकार से समृद्धि'' कार्यक्रम में मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा वीडियों कॉन्फ्रेंस के माध्यम से जुड़े। इस अवसर पर किसानों को ऋण उपलब्धता में सुगमता के लिए किसान क्रेडिट कार्ड का नवाचार किया गया।

दस हजार समितियों से ग्रामीण अर्थव्यवस्था सशक्त होगी

अमित शाह के ''सहकार से समृद्धि'' कार्यक्रम में मुख्यमंत्री भजनलाल वीडियो कॉन्फ्रेंस से जुड़े

गृह मंत्री ने कहा, वाजपेयी ने सहकारिता को मुख्य धारा में लाने के विशेष प्रयास किये थे। प्रधानमंत्री ने आगामी पाँच साल में 2 लाख नये पैक्स बनाने का लक्ष्य निर्धारित किया है।

जयपुर, 25 दिसंबर। केन्द्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री अमित शाह ने कहा कि पूर्व प्रधानमंत्री स्व. अटल बिहारी वाजपेयी के जन्म शताब्दी के अवसर पर देश भर में 10 हजार नवगठित एम-पैक्स, डेयरी व मत्स्य सहकारी समितियों का शुभारंभ किया गया है, जिससे ग्रामीण अर्थव्यवस्था सशक्त होगी। साथ ही, इन नवगठित पैक्स के बहुउद्देशीय बनने से ग्रामीण स्तर पर संसाधनों की सुगम उपलब्धता संभव हो सकेगी एवं ग्रामीणों को त्वरित सुविधाएं भी मिल सकेंगी।

शाह बुधवार को नई दिल्ली में ''सहकार से समृद्धि'' अभियान कार्यक्रम को सम्बोधित कर रहे थे। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा कार्यक्रम से इस कार्यक्रम में वीडियो कॉन्फ्रेंस के माध्यम से जुड़े। इस अभियान के तहत, देश भर में 10 हजार नवगठित एम-पैक्स, डेयरी व मत्स्य सहकारी समितियों का शुभारंभ किया गया। चयनित समितियों को प्रमाण पत्र भी वितरित किए गए। इस अवसर पर शाह ने राजस्थान के अलवर जिले से घेवर पैक्स के अध्यक्ष रमेश चंद शर्मा को पंजीकरण का प्रमाण पत्र दिया।

शाह ने कहा कि भारत रत्न स्व. अटल बिहारी वाजपेयी ने जनता की आवाज बनकर हम सबका मार्गदर्शन किया। उन्होंने देश को परमाणु शक्ति सम्पन्न राष्ट्र, कारगिल विजय, प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना और भाषाओं को जीवंतता देने के लिए संगठित प्रयास जैसे अनेक काम किए, जिससे देश को नई दिशा मिली। उनका पूरा जीवन हम सभी के लिए प्रेरणा का स्रोत है। अटल ने सहकारिता को मुख्य धारा में लाने के लिए भी विशेष प्रयास किए। इसी क्रम में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने सहकारिता मंत्रालय का गठन किया और आगामी पांच सालों में 2 लाख नए पैक्स बनाने का लक्ष्य निर्धारित किया।

केन्द्रीय सहकारिता मंत्री शाह ने अपने संबोधन में कहा कि आज पैक्स के कर्मचारियों के प्रशिक्षण के लिए प्रशिक्षण मॉड्यूल का अनावरण किया गया है और निष्क्रिय पैक्स के लिक्विडेशन के लिए भी एसओपी जारी की गई है।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि वाजपेयी की जन्म शताब्दी दिवस के उपलक्ष्य में हम सुशासन दिवस बना रहे हैं। उन्होंने अपने जीवन और कार्यों के माध्यम से हमें यह सिखाया है कि सुशासन का अर्थ आमजन को सशक्त और आत्मनिर्भर बनाना है और सहकारिता उसका सबसे बड़ा माध्यम है।

शर्मा ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी विकसित भारत के लक्ष्य पर काम कर रहे हैं। इसी क्रम में प्रधानमंत्री की पहल पर ''सहकार से समृद्धि'' अभियान शुरू किया है, जिसके माध्यम से बहुउद्देशीय ग्राम सेवा सहकारी समितियों, डेयरी समितियों और मत्स्य सहकारी समितियों को सशक्त किया जा रहा है।

उन्होंने कहा कि राजस्थान में करीब 8000 ग्राम सेवा सहकारी समितियां ग्रामीण क्षेत्रों में किसानों के लिए काम कर रही हैं। हमारी सरकार का लक्ष्य है कि इन समितियों में अधिक से अधिक महिलाओं को जोड़ा जाए, जिससे महिलाएं आर्थिक रूप से सशक्त हों।

सहकारिता राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) गौतम कुमार दक और डेयरी राज्य मंत्री जवाहर सिंह बेढ़म ने अपने संबोधन में प्रदेश में सहकारिता क्षेत्र में हुई प्रगति के बारे में विस्तृत रूप से प्रकाश डाला। इस अवसर पर शासन सचिव सहकारिता मंजू राजपाल एवं संबंधित विभागों के वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे।

'मारवाड़ी समाज ने देश में राजस्थान का नाम रोशन किया'

कोलकाता में मारवाड़ी सम्मेलन के समारोह में देवनानी ने प्रवासी राजस्थानियों से संवाद किया

जयपुर, 25 दिसंबर। विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी ने बुधवार को कोलकाता के जी.डी.बिड़ला सभागार में आयोजित अखिल भारतीय मारवाड़ी सम्मेलन के 90 वें स्थापना दिवस समारोह में देश-विदेश में राजस्थान का मान बढ़ा रहे प्रवासी बंधुओं से संवाद किया। देवनानी ने कहा कि मारवाड़ी सिर्फ एक समाज और पहचान ही नहीं, बल्कि समृद्ध विरासत, भारतीय संस्कृति, संस्कार और परंपराओं को सहेजे हुए है। मारवाड़ी जहाँ भी जाते है, वहाँ अग्रणी रहकर सभी को साथ लेकर प्रगति में भागीदारी निभाते हैं। राजस्थान प्रदेश के लोगों ने दूसरे प्रदेशों में जाकर अपने व्यवसाय को बढ़ाया है और वे अपने उद्योगों के बल पर नौकरी देने वाले बने हैं। देवनानी ने स्नेह और सम्मान देने के लिए सभी का आभार जताते हुए कहा कि राजस्थान के लोगों ने देश के हर प्रदेश में और विदेश में अपनी मेहनत से अपना बेहतर स्थान बनाया है। राजस्थान के लोग अपने-अपने क्षेत्र में श्रेष्ठ कार्य कर रहे हैं, जिससे उनकी पहचान बन रही है और प्रदेश का नाम भी रौशन हो रहा है।

राजस्थान विधानसभा अध्यक्ष ने कहा कि मारवाड़ी अपने में समृद्ध विरासत, भारतीय संस्कृति, संस्कार व परम्परायें सहेजे हुए हैं।

विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी ने बुधवार को कोलकाता प्रवास के दौरान तेरापंथ भवन में जैन मुनि जिनेश कुमार का आशीर्वाद लिया।

इस अवसर पर सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष शिवकुमार लोहिया, सीमा सुरक्षा बल के अतिरिक्त महानिदेशक रवि गांधी, पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष सीताराम शर्मा, पद्मश्री प्रहलाद राय अगरवाला, नंदलाल रुंगटा, हरिप्रसाद कनोडिया, राम अवतार पोद्दार, संतोष सर्राफ, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष दिनेश जैन, राष्ट्रीय महामंत्री कैलाशपति तोदी सहित, बड़ी संख्या में मारवाड़ी बंधुओं की उपस्थिति रही।

विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी ने कोलकाता प्रवास के दौरान, बुधवार को पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी व पंडित मदन मोहन मालवीय की जयंती पर श्यामा प्रसाद मुखर्जी सेवा समिति की ओर से कोलकाता के नेता जी सुभाष चंद्र बॉस रोड पर निर्धनों को कंबल वितरण किये। वासुदेव देवनानी ने बुधवार को कोलकाता प्रवास के दौरान तेरापंथ भवन में जैन मुनि जिनेश कुमार का आशीर्वाद लिया। देवनानी ने कहा कि त्याग और समर्पण के साथ मुनि दिनेश कुमार प्रभु महावीर के संदेशों को प्रसारित कर रहे है। उन्होंने महान व्यक्तित्व को वंदन किया।

ऑरिएंटल इंश्योरैंस...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

अस्पताल में कार्यरत है। बीमा कंपनी ने उसकी 3 फरवरी, 2017 से 2 फरवरी, 2018 की अवधि की डॉक्टर्स बीमा पॉलिसी की थी, जिसके तहत चिकित्सीय पेशे से बीस लाख रुपए तक की आर्थिक देनदारी होने पर उसका भुगतान बीमा कंपनी को करना था।

इस दौरान एक मरीज ने परिवादी व अन्य चिकित्सकों के खिलाफ ऑपरेशन में लापरवाही को लेकर उपभोक्ता आयोग में परिवाद पेश किया था।

आयोग ने मामले में कुल 50 लाख रुपए का क्लेम तय करते हुए इसमें से दस लाख रुपए परिवादी को अदा करने को कहा। इसके बाद, प्रकरण सुप्रीम कोर्ट तक चला, लेकिन चिकित्सकों को राहत नहीं मिली। इस पर परिवादी ने बीमा कंपनी के समक्ष दस लाख रुपए का क्लेम पेश किया, लेकिन बीमा कंपनी ने क्लेम देने से इनकार कर दिया। इस पर चिकित्सक की ओर से जिला आयोग में परिवाद पेश किया गया।

इसके जवाब में बीमा कंपनी के अधिवक्ता ने कहा कि परिवादी ने बीमा शर्त के तहत, तय समय पर न्यायिक कार्रवाई की जानकारी बीमा कंपनी को नहीं दी थी।

ऐसे में वह क्लेम देने के लिए बाध्य नहीं है। दोनों पक्षों की बहस सुनने के बाद आयोग में बीमा कंपनी पर हर्जाना लगाते हुए क्लेम राशि ब्याज सहित अदा करने को कहा है।

क्या होगा दिल्ली ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

शामिल है।

स्वास्थ्य विभाग ने कहा कि जनता को सूचित किया जाता है कि स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग, राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली सरकार के पास आज तक ऐसी कोई भी कथित ''संजीवनी योजना'' अस्तित्व में नहीं है। इसके अलावा स्वास्थ्य विभाग ने न तो किसी स्वास्थ्य अधिकारी या किसी अन्य व्यक्ति को बुजुर्ग नागरिकों से ऐसी व्यक्तिगत जानकारी और डेटा एकत्र करने के लिए अधिकृत न तो किया है, न ही विभाग इस संबंध में कोई कार्ड प्रदान कर रहा है।

इस बात पर जोर दिया जाता है कि चूंकि ऐसी कोई योजना मौजूद नहीं है, इसलिए ऐसी गैर-मौजूद योजना के तहत पंजीकरण के लिए - भौतिक फॉर्म आवेदन का सवाल ही नहीं उठता है और किसी भी निजी व्यक्ति/राजनीतिक दल द्वारा ''संजीवनी योजना'' के नाम पर ऐसे भौतिक फॉर्म आवेदन या आवेदकों से जानकारी एकत्र करना धोखाधड़ी और बिना किसी अधिकार के है। इसलिए कथित गैर-मौजूद ''संजीवनी योजना'' के तहत मुफ्त इलाज के किसी भी वादे पर विश्वास न करें।

करंट से मौत...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

बालकनी में खड़ा था। इस दौरान, पास से जा रही 11 केवी विद्युत लाइन के नंगे तार रेलिंग के संपर्क में आ गए, जिससे रामकिशोर की करंट से मौत हो गई।

बिजली कंपनी को कई बार शिकायत करने के बावजूद भी नंगे तारों को न तो रबड कोटेड किया गया और न उन्हें वहां से शिफ्ट किया गया। ऐसे में उसके आश्रित परिवादियों को घातक दुर्घटना अधिनियम के तहत मुआवजा दिया जाए।

इसका विरोध करते हुए डिस्कॉम की ओर से कहा गया कि रामकिशोर की ओर से बिजली चोरी के लिए लगाए गए अवैध तार को हटाने के दौरान, एचटी लाइन के संपर्क में आने से दुर्घटना हुई थी और उसके लिए मृतक स्वयं जिम्मेदार था। इसलिए परिवाद को खारिज किया जाए। दोनों पक्षों की बहस सुनने के बाद अदालत ने डिस्कॉम पर हर्जाना लगाया है।

हाइवे के किनारे ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

में अद्वितीय पहल होगी। इससे सड़क सुरक्षा में वृद्धि के फलस्वरूप, राष्ट्रीय राजमार्ग ज्यादा सुरक्षित होंगे ही, आवारा पशुओं का ध्यान रखने की मानवीय आवश्यकता भी पूरी होगी। ये कन्सेशनायर आवारा पशुओं के मालिक का पता लगाने में सरकार की मदद करेंगी तथा यह सुनिश्चित करेगी कि उनके आवारा पशुओं के रहने तथा खाने-पीने पर हुये खर्च का भुगतान होने, उनके पशु उन्हें वापस किये जा सकें।

सूचना ...

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

नागरिकों के मुफ्त चिकित्सा उपचार की योजना की घोषणा की है। इन योजनाओं के लिए पंजीकरण से भाजपा परेशान है। दिल्ली कैबिनेट ने पहले ही 1000 रुपये भत्ते को मंजूरी दे दी है और एक अधिसूचना जारी की गई है। अरविंद केजरीवाल ने कहा कि हमें सूत्रों से खबर मिली है कि चुनाव से पहले सीएम आतिशी को गिरफ्तार करने की तैयारी है। ईडी, सीबीआई और आईटी को बोल दिया गया है। ट्रांसपोर्ट विभाग में कुछ गड़बड़ी दिखाकर आतिशी को गिरफ्तार करेंगे। महिलाओं के लिए फ्री बस सेवा को बंद करने के लिए आतिशी को गिरफ्तार करेंगे।

2025 में भारत की पर्यटन...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

और कहा कि इस क्षेत्र में भारत अग्रणी अर्थव्यवस्था है।

द वर्ल्ड टूरिज्म ऑर्गनाइजेशन डब्ल्यु.टी.टी.सी. की भविष्यवाणी की पुष्टि करता है और इसका अनुमान है कि 2024 के अंत तक अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटन महामारी के पहले वाले स्तर तक पहुंच जाएगा। विभिन्न रिपोर्ट्स में भारत के लिए मजबूत वापसी की बात कही गई है।

बुकिंग डॉट कॉम की रिपोर्ट के अनुसार, 2025 तक भारत आ रहे पर्यटकों से होने वाली आय 2019 से भी आगे निकल जाएगी और इसमें बेहतर इन्फ्रस्ट्रक्चर, नए बाजार, पर्यटकों द्वारा ज्यादा खर्च करने का अहम योगदान होगा।

फोकस राइट्स का विश्लेषण कहता है कि भारत का ट्रैवल मार्केट फिर से तेजी के पथ पर अग्रसर है, जिसमें 2021 में बुकिंग में 91 प्रतिशत वृद्धि हुई और बुकिंग 19.1 अरब डॉलर पहुंच गई, जबकि 2020 में 69 प्रतिशत की गिरावट दर्ज की गई थी।

स्टैटिस्टा का अनुमान है कि भारत का ट्रैवल एवं टूरिज़्म बाजार 2024 से 2029 के बीच 8.87 प्रतिशत की दर से बढ़ेगा और 2029 तक इसका बाजार मूल्य 34.11 अरब डॉलर तक पहुंच जाएगा।

वैश्विक पर्यटन के 2025 में 1.6 अरब तक पहुंचने का अनुमान है जो आर्थिक विकास को प्रोत्साहन देगा। लेकिन इससे प्रमुख पर्यटन स्थलों पर भारी भीड़ बढ़ सकती है, जो चिंता का विषय है। अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटकों का सर्वाधिक आकर्षण यूरोप के प्रति रहेगा, वहीं, एशिया का पर्यटन खर्च यूरोप के समकक्ष पहुंच सकता है खासकर थाइलैंड और इंडोनेशिया की वीसा नीति से राहत की वजह से। चीन के बाहर जाने वाले पर्यटकों की संख्या भी महामारी से पहले वाले स्तर को पार कर जाएगी, पर चीन के पर्यटक विदेशों में खरीददारी को शायद तवजजो न दें। बहुत सारी एयरलाइन्स कार्बन उत्सर्जन घटाने के ''कोर्सिया एमिशन रिडक्शन पैक्ट ''को अपना रही है, फिर भी ग्रीन हाउल गैस उत्सर्जन में भी पर्यटन का भारी योगदान बने रहने की संभावना है।

प्रदेश की हर ग्राम पंचायत पर अटल ज्ञान केन्द्र खुलेंगे

मु.मंत्री भजनलाल ने वाजपेयी के जन्म शताब्दी दिवस पर घोषणा की

उन्होंने कहा, इन केन्द्रों पर लाइब्रेरी और ई-लाइब्रेरी की सुविधायें विकसित की जायेंगी, ताकि ग्रामीण क्षेत्र के युवा स्व अध्ययन व प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी कर सकें।

जयपुर, 25 दिसम्बर। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने पूर्व प्रधानमंत्री स्व. अटल बिहारी वाजपेयी के जन्म शताब्दी दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित सुशासन दिवस के अवसर पर प्रदेश की प्रत्येक ग्राम पंचायत पर अटल ज्ञान केन्द्र शुरू करने की घोषणा की है। शर्मा ने कहा कि युवाओं को जागरूक करने के साथ ही उन्हें प्रशिक्षण सुविधायें उपलब्ध कराने के लिए प्रत्येक ग्राम पंचायत पर चरणबद्ध रूप से अटल ज्ञान केन्द्र की स्थापना की जाएगी। इन केन्द्रों के लिए स्थानीय युवक-युवती का अटल प्रेरक के रूप में चयन किया जायेगा। इससे ग्रामीण युवाओं को रोजगार के नए अवसर उपलब्ध होंगे।

उन्होंने कहा कि ग्रामीण क्षेत्र के युवाओं के स्व-अध्ययन एवं प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी तथा आमजन में पढ़ने की प्रवृति को प्रोत्साहित करने के लिए अटल ज्ञान केन्द्रों पर लाइब्रेरी एवं ई-लाइब्रेरी की सुविधाएं विकसित की जाएंगी। इसके साथ ही, इन केन्द्रों पर कैरियर काउंसलिंग की सुविधा भी उपलब्ध कराई जाएगी।

शर्मा ने कहा कि पात्र व्यक्तियों एवं परिवारों तक सरकारी योजनाओं का लाभ सुनिश्चित करने के लिए अटल प्रेरक कार्य करेंगे। उन्होंने कहा कि ई-मित्र की तर्ज पर, इन केन्द्रों पर भी कल्याणकारी योजनाओं के आवेदन के अतिरिक्त जाति, जन्म एवं मृत्यु प्रमाण-पत्र, मूल निवास एवं राशन कार्ड इत्यादि जन-सुविधाएं उपलब्ध कराई जाएंगी। इससे ग्रामीण स्तर पर आमजन के कार्य सुगम रूप से सम्पादित हो सकेंगे। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार इन केन्द्रों के विकास पर लगभग 500 करोड़ रुपये का व्यय करेगी। मुख्यमंत्री ने कहा कि भारत रत्न वाजपेयी की स्मृति में राज्य सरकार ने 26 दिसम्बर को प्रत्येक पंचायत समिति मुख्यालय पर अटल जन सेवा शिविर आयोजित करने का निर्णय भी किया है। साथ ही, हमारी सरकार ने ई-गवर्नेंस अवार्ड का नाम बदलकर अटल ई-गवर्नेंस अवार्ड और राजकीय विद्यालयों के कंप्यूटर कक्ष का नामकरण अटल कंप्यूटर कक्ष करने का निर्णय भी किया है।

नाबालिग से दुष्कर्म, अभियुक्त को 20 साल की सजा

जयपुर, 25 दिसंबर। पॉक्सो मामलों की विशेष अदालत क्रम-1 महानगर द्वितीय ने 14 साल की किशोरी से दुष्कर्म करने वाले अभियुक्त युवक मयंक को बीस साल की सजा सुनाई है। इसके साथ ही, अदालत ने अभियुक्त पर 1.76 लाख रुपए का जुर्माना भी लगाया है, जबकि प्रकरण में एक अन्य युवक रवि कुमार पुलिस गिरफ्त से दूर चल रहा है। पीठासीन अधिकारी हेमराज गौड़ ने अपने आदेश में कहा कि अभियुक्त ने नाबालिग के साथ दुष्कर्म कर उसे न केवल शारीरिक क्षति पहुंचाई, बल्कि उसे मानसिक प्रताड़ित भी किया। ऐसे में अभियुक्त के प्रति नरमी का रुख नहीं अपनाया जा सकता।

अभियोजन पक्ष की ओर से विशेष लोक अभियोजक रचना मान और पीड़िता की ओर से अधिवक्ता नीलम चौहान ने अदालत को बताया कि पीड़िता के पिता ने 15 मई, 2023 को प्रताप नगर थाने में रिपोर्ट दर्ज कराई थी। रिपोर्ट में कहा गया कि उसकी 14 साल की बेटी घर के पास दुकान पर सामान खरीदने गई थी। इस दौरान युवक उसका अपहरण कर महल इलाके के जंगल में ले गए और उसके साथ दुष्कर्म किया। जब पीड़िता घर नहीं आई तो परिजनों ने उसे तलाश किया। इस दौरान, वह बेसुध सडक़ किनारे मिली। रिपोर्ट पर कार्रवाई करते हुए पुलिस ने दोनों युवकों के डीएनए सैंपल लिए, जो पीड़िता के कपड़े और शरीर से लिए गए सैंपल से मैच हो गए। इस पर पुलिस ने अभियुक्त मयंक को 3 अक्टूबर को गिरफ्तार किया, वहीं दूसरा आरोपी युवक फरार हो गया। सुनवाई के दौरान पीड़िता ने आपबीती अदालत को सुनाई। इस पर अदालत ने डीएनए रिपोर्ट और पीड़िता के बयान के आधार पर अभियुक्त को सजा सुनाई है।

अदालत ने आरोपी पर 1.76 लाख रूपए का जुर्माना भी लगाया। मामले में एक अन्य अभियुक्त फरार चल रहा है।

प्रधानमंत्री ने केन-बेतवा नदी जोड़ो परियोजना का शिलान्यास किया

मोदी ने कहा, वाजपेयी ने देश की नदियों को जोड़ने की परिकल्पना की थी

उन्होंने कहा कि इस परियोजना से मध्य प्रदेश के 10 जिलों को 44 लाख किसान लाभांवित होंगे।

खजुराहो, 25 दिसंबर। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने आज पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी की 100वीं जयंती पर खजुराहो में देश की पहली नदी जोड़ो परियोजना के रूप में ''केन-बेतवा नदी जोड़ो राष्ट्रीय परियोजना'' का शिलान्यास किया। इस अवसर पर मध्यप्रदेश के राज्यपाल मंगुभाई पटेल, मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव, केंद्रीय जल शक्ति मंत्री सी आर पाटिल और खजुराहो सांसद एवं प्रदेश भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) अध्यक्ष विष्णुदत्त शर्मा मौजूद थे।

मोदी ने यहां आयोजित भव्य कार्यक्रम में देश की पहली महत्वाकांक्षी और बहुउद्देशीय केन-बेतवा राष्ट्रीय नदी जोड़ो परियोजना का शिलान्यास करने के साथ ही खंडवा जिले की ओंकारेश्वर फ्लोटिंग सौर परियोजना का लोकार्पण और 1153 अटल ग्राम सुशासन भवनों का भूमिपूजन किया। प्रधानमंत्री ने पूर्व प्रधानमंत्री वाजपेयी की स्मृति में डाक टिकट और सिक्का भी जारी किया। देश की नदियों को जोड़ने की परिकल्पना देने वाले वाजपेयी की जयंती पर यह परियोजनाएं मध्यप्रदेश के लिए बड़ी सौगात मानी जा रही हैं।

मोदी ने मंच पर ही केन और बेतवा नदी के जल से भरे कलशों से जल को प्रवाहित कर केन -बेतवा राष्ट्रीय नदी जोड़ो परियोजना का शिलान्यास किया।

दो प्रमुख नदियों केन और बेतवा को आपस में जोड़ने से संबंधित केन-बेतवा लिंक राष्ट्रीय परियोजना देश में भूमिगत दाबयुक्त पाइप सिंचाई प्रणाली अपनाने वाली सबसे बड़ी सिंचाई परियोजना है। इस परियोजना के पूर्ण होने पर मध्यप्रदेश के 10 जिलों में 8 लाख 11 हजार हेक्टेयर क्षेत्र को सिंचाई की सुविधा मिलेगी और 44 लाख किसान परिवार लाभान्वित होंगे।

इस परियोजना से उत्तरप्रदेश में 59 हजार हेक्टेयर क्षेत्र में वार्षिक सिंचाई सुविधा प्राप्त होगी और मध्यप्रदेश की 44 लाख और उत्तरप्रदेश की 21 लाख आबादी को पेयजल की सुविधा उपलब्ध होगी।

अज़रबैजान का प्लेन क्रैश, 42 लोगों के मरने की आशंका

कज़ाकिस्तान में कैस्पियन सागर के पास प्लेन क्रैश हुआ और उसमें आग लग गई।

नूर-सुल्तान (कजाकिस्तान), 25 दिसंबर। कज़ाकिस्तान में अज़रबैजान का प्लेन क्रैश होने की खबर मिली है। इसमें 67 यात्री सवार थे। प्लेन क्रैश होने के बाद उसमें आग लग गई है। राहत और बचाव दल मौके पर हैं। दुर्घटना में 42 लोगों के मारे जाने की आशंका है। कज़ाकिस्तान के मंत्रालय की रिपोर्ट के अनुसार 25 लोगों को बचा लिया गया है। एक वीडियो में दिखाया गया है कि विमान तेजी से ऊंचाई से नीचे की ओर गिर रहा है और दाईं ओर झुकना शुरू कर देता है। बाद में यह एक खुले मैदान में दुर्घटनाग्रस्त हो गया और आग की लपटों में घिर गया। कहा जा रहा है कि यह अज़रबैजान एयरलाइंस का एक यात्री विमान था, जो कज़ाकिस्तान के अक्ताउ शहर के पास दुर्घटनाग्रस्त हो गया। यह एम्ब्रेयर 190 विमान अज़रबैजान की राजधानी बाकू से रूस के चेचन्या में ग्रज़ोनी जा रहा था, लेकिन वहां कोहरे के कारण उसका मार्ग बदल दिया गया। विमान में चालक दल के पांच सदस्यों के साथ 62 यात्री सवार थेदुर्घटना में कुछ लोग बच गए हैं। मगर बड़ी संख्या में लोग मारे गए हैं। यह हादसा एयरपोर्ट के बिलकुल करीब हुआ। कथित तौर पर विमान ने आपातकालीन लैंडिंग का अनुरोध करते हुए कई चक्कर लगाए, लेकिन वह अचानक रुक गया और दुर्घटनाग्रस्त हो गया।

राष्ट्रदूत (एचयूएफ) के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक सोमेश शर्मा द्वारा मैसर्स अरावली प्रिन्टर्स, राष्ट्रदूत भवन, चुंगी नाका के पास, अजमेर (राजस्थान) से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादक-राजेश शर्मा, आर.एन.आई. नं. 65015/96, जयपुर कार्यालय: सुधर्मा एम.आई.रोड, जयपुर। फोन: 2372634, 4103333-34 फैक्स : 0141-2373513, कोटा कार्यालय : पलायथा हाऊस, छत्रपति शिवाजी मार्ग, कोटा। फोन: 2386031, 2386032,फैक्स:0744-2386033, उदयपुर कार्यालय: आयड मैन रोड आयड, उदयपुर। फोन: 2413092, फैक्स : 0294-2410146, बीकानेर कार्यालय : कुम्भाना हाऊस, हनुमान हत्था, बीकानेर। फोन: 2200660, फैक्स 0151-2527371, जालोर कार्यालय :- जी 1/63, इन्डस्ट्रीयल एरिया, फेस प्रथम, जालोर। फोन: 226422, 226423, फैक्स: 02973-226424 हिण्डौनसिटी कार्यालय :- जी -1-201, रीको औद्योगिक क्षेत्र, हिण्डौनसिटी। फोन: 230200, 230400, फैक्स: 07469-230600 चूरू कार्यालय : एच-150, रीको औद्योगिक क्षेत्र, चूरू, फोन : 256906, 256907, फैक्स: 01562-256908